अंक-74
दिसंबर 2014

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

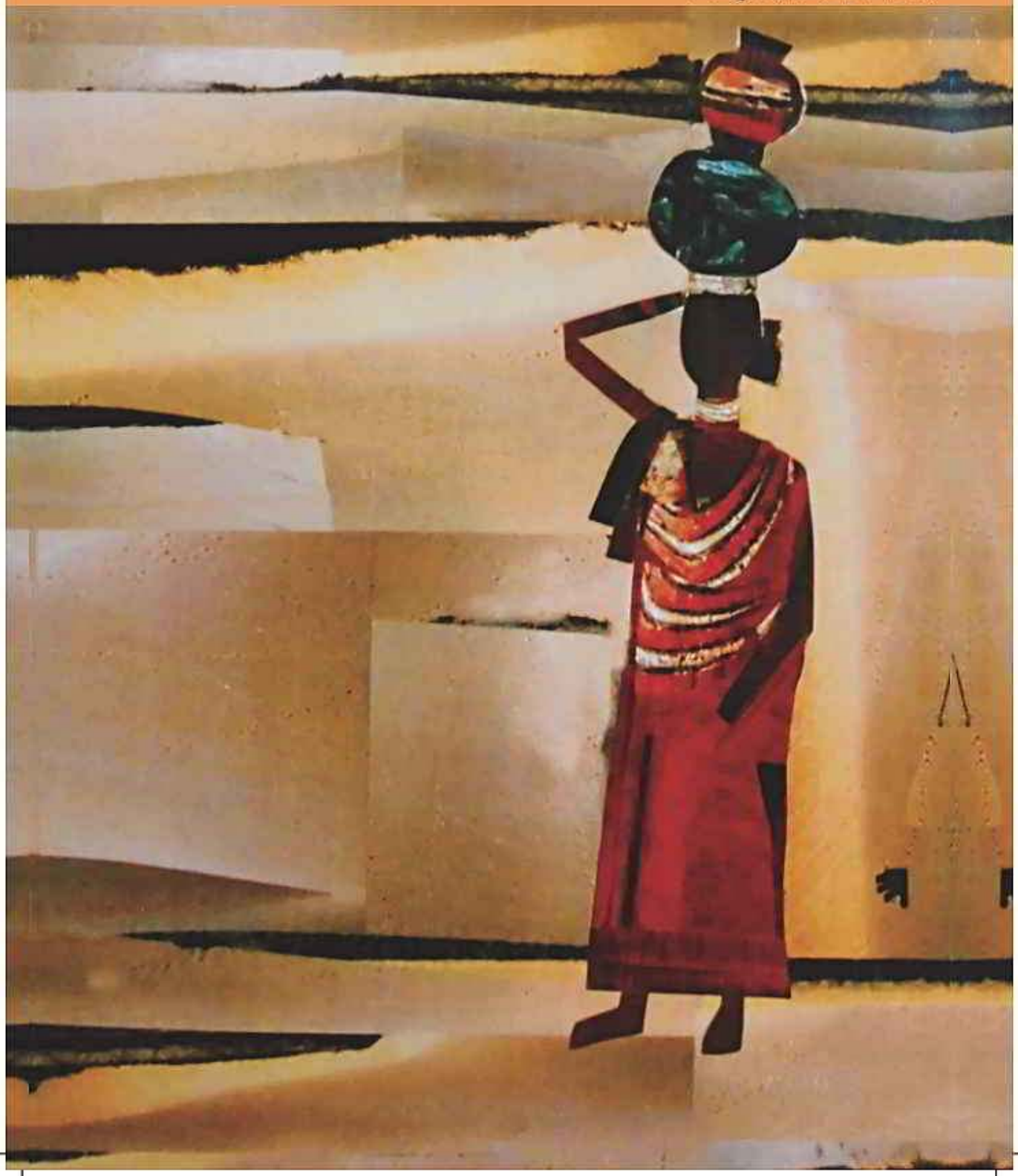

बनचरी

कालजयी उपन्यास बनचरी

दुर्गम बन पहाड़न का सम–विषम में जिये वाला बनवासी समाज के सहजता, खुलापन आ स्वच्छन्द–व्यवहार के गँवारू, जंगलीपन आ असभ्यता माने वाला सभ्य–शिक्षित, समृद्ध समाज ओके सुरूवे से बरोबरी क दर्जा ना दिहलस। समय परला पर अपना हित में ओकर उपयोग जरूर कइलस।

अपने उपजावल असंगति आ अन्तर्विरोध के शिकार ई सभ्य–शिक्षित समाज अपना सुबिधा / स्वारथ का मोताबिक धर्म–अधर्म, नैतिक–अनैतिक आ पाप–पुण्य के व्याख्या कइलस। दुसरा ओर नैसर्गिक सोत से सहजे जुड़ल असभ्य आ बनचर कहाये वाला लोग अपना सोझिया सचाई, निश्छल प्रेम, समर्पन, त्याग आ उत्सर्ग से मानवी–सम्बन्धन के गरिमा पराकाष्ठा ले पहुँचवलस।

'बनचरी' पौराणिक कथासूत से बिनल, भोजपुरी के अइसने कालजयी उपन्यास बा, जवन अशोक द्विवेदी के चित्रमय–भाषा आ संवेदन पूरल काव्यात्मक उक्तियन का कारन, समय–सन्दर्भ आ कालखण्ड के जियतार उरेहत, वैचारिक भाव–भूमि पर पहुँचावत बा। 'लोक' से 'लोकोत्तर' बनत 'बनचरी' नारी के प्रणय, सामरथ, संघर्ष, तप आ बलिदान के अइसने जियत–गाथा हऽ। इहाँ कथाकार पढ़ल–सुनल से पार आ परे जाइ के कुछ अनसुलझल, अझुराइल–सवालन के जबाब खोजन मिल जाई...।

'बनचरी' पाठकन खातिर 'पाती' में धारवाहिक दिहल जा रहल बा। पहिल कड़ी एही अंक में ....

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक: 74 | www.bhojpuripaati.com | दिसं० 2014

आजीवन सदस्य/संरक्षक

तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (रामपुर उदयमान, बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर, बिहार), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ) एवं श्री कन्हैया पाण्डेय (मैरीटार, बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना)।

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

कंपोजिग/ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, सत्यप्रकाश पांडेय

आवरण चित्र
अमृतलाल वेंगड़

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001

संपादन-कार्यालय:-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001
एफ/1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-19
मो0- 08004375093, 91-9919426249
e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

एक अंक पर सहयोग-40/-
सालाना सहयोग 180/
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना - • मन के कुछ बात/3–4

भाषा-चिन्तन - • तनी हट–हटा के/प्रगत द्विवेदी/5–6

हस्तक्षेप - • मार बढ़नी रे/प्रमोद कुमार तिवारी/7–8

सामयिकी - • मुक्तिदायिनी गंगा के मुक्ति/आनन्द संधिदूत/10–11

हलचल - • हमरा प्लैनेट के भाषा/राजीव पराशर/कवर पेज/3

सोच-विचार - • शिवचेतना से पूरित काशी/डा0एल0बी0 तिवारी/13–14

पर्यावरण विचार - • ना जाने हमनी कब चेतबि/हीरालाल 'हीरा'/15–16

उपन्यास-अंश - • बनचरी/अशोक द्विवेदी/17–29

साहित्यालोचन - • भोजपुरी कविता क बिस्तार/डा0 वशिष्ठ अनूप/30–31

• समकालीन भोजपुरी कविताःसपना अउर जागरन/डा0 अनिल कुमार राय/32–33

कविता/गीत/गजल

• अक्षयकुमार पाण्डेय/9 • आनन्द संधिदूत/12 • रामजी पाण्डेय 'अकेला'/14
• आसिफ रोहतासवी/16 • शंकर शरण/28 • शशांक शेखर/34
• शिवजी पाण्डेय 'रसराज'/38 • कन्हैया पाण्डेय/42 • प्रो0 विजयानन्द तिवारी/48
• त्रिभुवनप्रसाद सिंह 'प्रीतम'/55 • शशिप्रेमदेव /55 • भालचन्द्र त्रिपाठी/57

कहानी

• सरोगेट मॉम/कृष्ण कुमार/35–38 • काठ/विष्णुदेव तिवारी/39–42
• सुगिया/सुरेश कांटक/43–48 • ठेस/दिनेश प्रसाद शर्मा/49–51

जनपद

• बलिया के बलियाटिकपन/भगवती प्रसाद द्विवेदी/52–53

इतिहास -• अंग्रेजी साम्राज्यवाद आ भारत/विजयशंकर पाण्डेय/56–57

लघुकथा -

• अच्छा दिन/विनोद द्विवेदी/53 • घर पर कब्जा/विनोद द्विवेदी/54
• आपन नजरिया/कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा/51 • समाधान/धनंजय गुडाकेश/58
• लड़ाकिन/राजगुप्त/60

आलेख - • नशा के समाज आ समाजवाद के नशा/अशोक कुमार तिवारी/59–60

पुस्तक चर्चा/समीक्षा-

• गाँव के संरचना क सपना/कृष्णकुमार/61–63 • सइँचल सपना/शशिप्रेमदेव/63
• परनाम ईया (आशारानी लाल)/डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव/64

गतिविधि -

• हिन्दी प्रचारिणी सभा आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया के आयोजन/65
• विश्व भोजपुरी सम्मेलन देवरिया–सम्मेलन/66–67

राउर पन्ना -

• डा0 दिवाकरप्रसाद तिवारी आ कौशलेन्द्र सिन्हा के पाती/67–68

चौहत्तरवाँ अंक का बहाने कुछ मन क बात

पत्रिका के 74वाँ अंक रउवा सभ के सामने परोसत हम अपना स्रम के बड़भागी मान रहल बानी जे 1979 से जूझत–जागत, ठोंकत–ठेठावत हमनी का पैंतीसवाँ बरिस में चलि अइली जा। एह यात्रा में, सँग–सँग कुछ डेग चले वाला हर साहित्य–सेवी आ लेखक लोग के साधुवाद! सँगे–सँगे हर ओह भाषा प्रेमियन के आभार, जिनका बदउतल 'पाती' के ई मंच आज ले कायम बा। भोजपुरीं भाषा साहित्य का सेवा–समृद्धि का नाँव पर ''पाती'' का मंच से जुड़े वाला नया लोगन के स्वागत करत आज ई निहोरा जरूर करब कि ऊ लोग थोरिकी अउर समय देके, पछिला 35–40 बरिस में लिखाइल भोजपुरी साहित्य के ईमानदारी से पढ़े–समझे के प्रयास जरूर करो। एसे ओ लोगन के तीन गो फायदा होई। पहिला ई कि पढ़ला से ई पता चली कि अबले केतना आ का लिखाइल बा आ ऊ कतना मूल्यवान बा? दुसरा ई कि एके पढ़ला से लिखे वाला लोग के भोजपुरी भाषा–के बल–बेंवत मालूम होई। तिसरा ई कि पहिले से लिखल–लिखावल के दोहरउवा नकल ना होई। परंपरा के ज्ञान आ इतिहास बोध से पोढ़ भइला पर, नया लिखे वाला लोग सार्थक आ मूल्यवान लिखे क उतजोग करी।

भोजपुरी साहित्य अपना लोक स्वर से प्रगतिशील रहल। ओमे अउर सब भाषा में चलल वाद के अंधानुकरन ना भइल। भिखारी ठाकुर, राहुल जी आ गोरख पांड़े का नौ गो भोजपुरी गीतन का अलावा, भोजपुरी में अउर केतना उत्कृष्ट आ महत्वपूर्ण लेखन भइल बा, ओहू के पढ़ला आ जनला–सुनला के दरकार बा। कतने नया कवि कथाकार आ लेखक बाड़ें, जिनका लेखन में नया भाव बोध आ लिखे के हुनर बा। अइसनका लोगन के ''पाती'' मंच सुरुवे से आगा ले जाये आ उनके अउर निखरे के अवसर देत आइल बा। एहू लोगन के मूल्यांकन होखे के चाहीं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आ आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के जरिये हिन्दी के कतने यशस्वी प्रतिभा संपन्न सामरथ वाला लेखक ओह काल खण्ड में एही तरे हिन्दी साहित्य के श्री वृद्धि कइल लोग। ओह लोगन के साहित्य पढ़ला आ मूल्यांकन कइला का बादे पता चलल कि ओघरी कतना मूल्यवान साहित्य रचाइल रहे। भोजपुरियो साहित्य में अइसन निष्ठावान लेखकन के कमी नइखे। एह समर्पित लेखकन पर काम होखे के चाहीं। जोरुआ–बटोरुआ आलेख आ कामचलाऊ इतिहास लिखला के काम हो रहल बा, बाकिर मूल्यांकनपरक काम बाकी बा।

भोजपुरी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास आ 'साहित्य कोश' पर ठोस काम होखल बहुत जरूरी बा। ई सुन जान के खुसी जरूर होत बा कि भोजपुरी साहित्य पर कुछ संस्था आ विश्वविद्यालययन में शोध हो रहल बा, बाकिर भोजपुरी के कवनो ढंग के पुस्तकालय ना रहला से, आ आधार सामग्री ना मिलला से शोध करे वालन के कठिनाई बा। विश्वविद्यालय, कालेज आ विभागन में भोजपुरी पुस्तक आ पत्र पत्रिकन के अभाव बा। सरकारी अकादमियन के हाल ई बा कि ऊ या त अर्थाभाव में खेवा–खर्चा चलावत बाड़ी स ऽ या गोट बजट मिल गइला पर साल में एगो–दू गो गोष्ठी, सेमिनार, कवि सम्मेलन वाला काम क के छुट्टी पा लेत बाड़ी स ऽ। मैथिली भोजपुरी अकादमी दिल्ली से 'परिछन' नाँव के एगो तिमाही पत्रिका निकलेले। भोजपुरी अकादमी पटना कइसहूँ आपन पत्रिका निकाले का स्थिति में फेरू आइल बा। भोपाल भोजपुरी अकादमी अपना सुरुआती दौर में बिया। उत्तर प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री जी का घोषणा का बाद अभी अकादमी गठन के इन्तजार होता। एकरा अलावे कतने स्वायत्त सेवी संस्था बाड़ी स जवन भोजपुरी के झंडा गड़ले भा उठवले बाड़ी स, बाकिर कार्यालय से जुड़ल उन्हन का भोजपुरी साहित्य के अइसन पुस्तकालय नइखे, जहवाँ कम से कम भोजपुरी के निकले वाली पत्रिकन के जिल्दबंद अंक शोध करे वालन के मिल सके। बहुत पहिले पाण्डेय कपिल भोजपुरी–साहित्य संस्थान का भीतर एगो मूल्यवान पुस्तकालय बनवले रहलन। एकरा अलावा भोजपुरी अकादमी पटना कुछ पुस्तकन के प्रकाशन आ रख–रखाव कइले रहे।

ई समय भोजपुरी के अउरी विचित्र मोड़ पर पटक देले बा। आपन ताल आपन झाल बजावत केहू इन्टरनेट पर झूलत बा, केहू कैसेट सीडी में आ केहू मारीशस का तीरथ यात्रा प जाता, कतने स्वयंभू भोजपुरी गौरव, असली गौरव का छाती प असवार होके उतराइल फिरत बा लोग। अइसनका समय में भोजपुरी के निष्ठावान साहित्य–साधकन के पूछे वाला कवनो निष्ठावान साहित्य–साधके न आगा आई। काश अइसनका लोगन का रचनात्मक सहजोग से अइसन मंच बनित, जवन कम से कम स्वाभिमान आ भोजपुरी निजता का रच्छा का साथ, भोजपुरी का साहित्य विरासत के सहेजित सँवारित। पहिले का लोगन के पढ़ले–सुनले आ समझले से अपना सिरजन परंपरा का दिसाई कृतज्ञ भइला के अवसर मिलित ।

कालेज, विश्वविद्यालय आ अकादमिक स्तर पर उल्लेख जोग काम करे वाला कई विद्वान, प्रोफेसर, निदेशक आ शोधकर्त्ता लोगन का व्यक्तिगत प्रयास से दिन पर दिन ऊपर चढ़त भोजपुरी भाषा–साहित्य के समय–समय पर सहायता आ प्रोत्साहन मिलत रहल बा। अइसहीं अगर एह लोगन के साथ–संरक्षन आगहूँ बनल रही त भोजपुरी लिखे–पढ़े वालन क बहुत भला होई।

हमके पूरा भरोसा आ विश्वास बा कि भोजपुरी समाज में अइसन बहुत प्रतिभा सपन्न आ साधन–शक्ति से भरल पूरल लोग बा, जेकरा अपना मातृभाषा से लगाव आ निष्ठा बा। ऊ लोग आगा आई आ भोजपुरी साहित्य के सहेजला–सँवरला में आपन सक्रिय सहजोग दीही।

2014 के साल तमाम आपदा आ बिपत्ति का बावजूद नया बदलाव आ नया जागरण के साल रहल। कुछ गँवाइ के कुछ सीखे के मिलल। आगा सँभरे–सँवरे आ नया राह बनावे क अवसर देबे वाला समय ना भुलाला। अँगरेजी क नवका साल 2015, हमनी का देश–दुनियाँ खातिर शुभ समरस होखे[redacted] सबका योग–क्षेम के मंगल कामना करत बानी।

अशोक द्विवेदी

''पाती''-मंच से जुड़ल साहित्यकारन के दिहल जाये वाला ''अक्षर-सम्मान''-2014 खातिर, पाती परिवार के निर्णायक मंडल ए बेरी डा0 प्रकाश उदय आ डा0 भगवती प्रसाद द्विवेदी के नाँव क अनुमोदन कइले बा।

''पाती'' पत्रिका के 75वाँ अंक
प्रेम कथा विशेषांक

डा0 रामदेव शुक्ल, बरमेश्वर सिंह, भगवती प्रसाद द्विवेदी, कन्हैया सिंह 'सदय', विष्णुदेव तिवारी, डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव, तुषारकान्त उपाध्याय, प्रकाश उदय, श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल आदि के कहानियन के साथ अशोक द्विवेदी के उपन्यास 'बनचरी' के दुसरी कड़ी।

अगिला विशेषांक खातिर रचनाकार लोगन से प्रेमकथा, लघुकथा आ गजल आमंत्रित बा।
आप लोगन क रचना टंकित रूप में फोटो के साथ फरवरी के पहिला सप्ताह तक मिल जाये के चाहीं।

तनी हट-हटा के....

■ प्रगत द्विवेदी

हमनी के भोजपुरिया लोगन में कम 'क्रियेटिविटी' नइखे। जोगाड़ पर काम चलावे आ लोके-लहावे के चलन हमनी क खासियत मनाला। हमनी में से कतने लोग बिना सुबिधा संसाधन आ बे साज-समान के अतना गजब का ऊँचाई प चहुँपल कि देखि के तयजुब होई। बाकि सफलता का ऊँचाई प पहुँचल ए' लोगन में, अपना लोगन से लगाव आ क्षेत्र से जुड़ाव ओंही तरे बा। सभ जहाँ-तहाँ छिटाइल बा आ अपना काम में लागल बा।

भोजपुरी भाषा में लिखला-पढ़ला आ छपला-छपवला के कोसिस अबाध गति से चलत रहेला। ईहो एक तरह के 'क्रियेटिविटी' आ जुगाड़-प्रकाशन के प्रमान बा। बस एह लोगन के 'क्रियेटिविटी' आ लिखला-पढ़ला के प्रचार प्रसार आ पहुँच नइखे। खास तौर से बड़का-शहरन में। एसे अब ई जरूरी हो गइल बा कि हमनी का भाषा के कवि-लेखक आ अउर तरह के रचनाशील लोगन के अइसन 'प्लेटफार्म' भा तगड़ा 'मंच' मिले, जहाँ लिखला-छपला आ सुनला-सुनवला के दायरा अउरी बढ़ावे क मोका मिले। ई प्लेटफार्म देस-दुनिया से जुड़ जाव त का पूछे के? ई तबे संभव होई जब भोजपुरी भाषी लोग आपुस में जुड़िहें।

कवनो मजबूत आ स्थायी 'प्लेटफार्म' भा 'मंच' पद, सम्मान आ निजी 'ईगो' से हटिये-हटा के बन सकेला। समय का माँग का मुताबिक अपना भाषा-संस्कृति के, सिरजल साहित्य आ कला के अउरी रोचक आ आकर्षक बना के, अपना भाषा के विकास आ प्रचार-प्रसार के बल दिहल जा सकेला। 'पाती' का पछिला अंक में "तनी हट-हटा के" स्तंभ (कालम) का जरिये हमनी का बीच एगो 'संवाद' सुरू भइल रहे। ओकरा बाद से अबले, तीन महीना का भीतर हमके जवन समय मिलल, हम सेम्पल-बतकही खातिर 170 गो अइसन लोगन से मिलली, जेकर गाँव-घर यू0पी0-बिहार के भोजपुरी क्षेत्रन में बा, बाकिर ओ लोगन के रिहाइश आ काम-धंधा दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मुम्बई, मध्यप्रदेश आ कलकत्ता आदि में बा।

सर्वे के दायरा में ज्यादातर लोग बीस से पैंतालीस बरिस के आयु-वर्ग के ऊ लोग रहे जे ज्यादातर नोकरी, इन्जीनियरिंग, मैनेजमेन्ट, इस्कूल-कालेज आ सरकारी-सेवा-क्षेत्र से जुड़ल बा। जब 'पाती' के अंक ए लोगन के दिहल गइल त ओह लोगन के, एह पत्रिका में छपल सामग्री पढ़े में बड़ा अटपटाह लागल, हालांकि ऊ लोग हिन्दी अखबार सरपट पढ़ि लेव। गीत, गजल आ कविता त ऊ लोग कइसहूँ पढ़ि लिहल बाकि गद्य-विशेष कर कहानी, लेख आ समीक्षा-आलोचना पढ़ला में हवा खराब हो गइल। साइत भोजपुरी पढ़े भा लिखे के ओ लोगन के रपटा (आदत) ना रहे। बोलत-बतियावत ई लोग ज्यादातर 'हिंग्लिश' आ अंगरेजी शब्दन के इस्तेमाल करत लउकल भा अंगरेजी शब्दन के भोजपुरियावत।

एह सर्वे में एगो खास जानकारी ईहो भइल कि 80 प्रतिशत से ज्यादा लोग 'इन्टरनेट' पर भोजपुरी का बारे में अनजान रहे। हँ 22 प्रतिशत लोग 'हवाट्स ऐप' पर भोजपुरी चुटकुला आ लतीफा के लिखल-पढ़त मजा लेत रहे। कुल्हि मिला के हमके इहे बुझाइल कि कूल्हि खरचा आ मेहनत, आ लिखल-छपावल एगो सीमित दायरा में संचित-संकुचित बा। भोजपुरी के विशाल क्षेत्र आ एह भाषा के बोले-बतियावे वाला बहुते लोग-भोजपुरी में लिखे-पढ़े आ छपे-छपावे वाला लोगन का 'क्रियेटिविटी' से पूरा-पूरा परिचित भइला से वंचित बा।

सगरी 'क्रियेटिविटी' एगो खास दायरा में घूमत-घोरियावत बा। ई जनला का बाद हमके लागल कि एकरा बाहर अइला आ बिस्तार खातिर निश्चित रूप से एगो प्लेटफारम के जरूरत बा, जहाँ प्रतिभा कौशल से भरल संवाद, बतकही आ 'क्रियेटिविटी' के पहुँच आ पइसार (कम्युनिकेशन) बढ़े। भोजपुरी के युवा वर्ग हमनी का 'भोजपुरी कम्युनिटी' से जुड़ी त अउर अच्छा होई। नया आ पुरान का मेल-मिलाप आ संवाद का एह मंच से, विचारन के खाद-पानी मिली त नया बीच के अँखुवाए आ बढ़े में बहुत मदद मिली।

त एह दिसाई, 'पाती'–मंच अब एगो नया पहल करे जा रहल बा। नया साल 2015 में भोजपुरी भाषा साहित्य आ संगीत–कला खातिर चुनिन्दा भोजपुरी गीतन के सीडी, चुनिन्दा कहानियन या लघु कहानियन के आडियो सीडी आ कम समय का लघु नाटकन का मंचन का दिशा में काम कइल जाई। एह कोसिस में हमहन के ज्यादा–जोर 'ओडियो–विजुअल' फार्मेट, में होई आ ओकरा के वेबसाइट, कम्प्यूटर आ मोबाइल का जरिये सबके सुलभ करावल जाई। एकरा खातिर जरूरी प्रबन्ध आ संसाधन जुटावे में एगो छोट टीम काम में लाग गइल बिया। ज्यादा आ अउर जरूरी जानकारी 'पाती' परिवार का वार्षिक–समारोह (अप्रैल–मई) में दिहल जाई।

एह मंच पर भोजपुरी लिखे पढ़े वाला लोगन का साथ–साथ गायन, वादन आ अभिनय से जुड़ल प्रतिभा संपन्न लोगन के स्वागत बा। हमार ई मान्यता आ विश्वास बा कि लिखला–पढ़ला का जरूरत का साथ, समग्र भोजपुरी सांस्कृतिक रचनात्मकता के पाठक, श्रोता आ दर्शक नाँव के संग्राहकन के ढेर जरूरत बा। टप्पा–टोइयाँ अलगा–अलगा गोल बना के सरकारी 'फंड' आ 'पद–सम्मान' का आसरा में, जोगाड़ पानी वाली चकरी से छुटकारा पाके निष्ठा आ लगन से कुछ बढ़ियाँ आ नया कइल ज्यादा सार्थक आ मूल्यवान बा। हमहन के भाषा संस्कृति आ कला आगा बढ़ी आ पसरी त हमहनो क भला होई। इहाँ प्रतिभा अपना लगन आ मेहनत से खुद ब खुद चमकी।

हमनी का क्षेत्र में केतने धुनी आ गुनी लोग बाड़न जे अगर निस्वार्थ भाव से जुटि के सुरिया जइहन त हमनी का साहित्य, कला आ अभिनय के पाठक, श्रोता आ दर्शक तक पहुँचे के जीवनी शक्ति आ राह मिल जाई। तब हमनिये में से बहुत लोग गर्व से कहि सकी कि हमनियो के खूबी आ खासियत राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर जानल जा रहल बा। एसे हमनी का भोजपुरी भाषा के शान, स्वाभिमान आ बल–बेंवत के 'स्वीकार्यता' (ऐक्सेप्टेन्स) बढ़ी।

भोजपुरी भाषा के तेवर आ अन्दाजे–बयाँ कुछ अउर ना रहित, त खाली एकरा मुलम्मा भर से, आमिर खान के 'पीके' अतना रुपया आ हलचल ना पैदा करित। हमनियो के आगा आवे वाला समय में अउर प्रभावी बने खातिर अपना अभिव्यक्ति (एक्सप्रेशन) के लोकप्रियता आ स्वीकार्यता (एक्सेप्टेन्स) का दिशा में बढ़वला आ कोसिस कइले से कुछ बात बनी। आ जब बात बने लागी त अपना आपे बदलाव लउके लागी।

एह 'अंक' में बस अतने। आगा फेर हट–हटा के कुछ कहल–कइल जाई। नया साल 2015 भोजपुरी 'क्रियेटिविटी' के बिस्तार आ लोकप्रियता क साल होखे, एकरा खातिर हमार हिरऊ मंगलमामना!!

■■ एडिटर, बिग सी मीडिया
40/76, सी0 आर0 पार्क
नई दिल्ली–110019

हस्तक्षेप

'मार बढ़नी रे' एह भोजपुरिया संस्कृति के

■ डा0 प्रमोद कुमार तिवारी

आईं सभे, एगो किस्सा सुनल जाव। ओइसहूं हमनी के किस्सा– कहनी आ नाच–गवनई के अलावा दूसर चीज कहां पसंद आवेला। ना ना एगो चीज अउर पसंद आवेला, धरम नेम के नाम प एकादशी से ले के सत्यनारायण भगवान के कथा (जवना में कथा छोड़ के बाकि सब हउए) तक आ कवनो गड़ही में डुबकी मारे से लेके नाला बन चुकल गंगा में नहान करे तक के आपन बनावल रिकार्ड हमनी से केहू ना छीन सके। खैर छोड़ीं सभे हम त एगो पुरान घटना के कहानी सुनावत रहनी हँ। बांग्ला के प्रसिद्ध साहित्यकार सुनील गंगोपाध्याय के 23 अक्टूबर 2012 के देहांत हो गइल। अब एकरा में त कवनो बड़ बात बा ना, सब केहू के मरे के बा से उहो मू गइले। बाकिर बंगाल के पागल लोग के का कहब उनका अंतिम यात्रा में हजारन लोग आंखी में लोर आ हाथे में फूल–माला लेले कोलकाता के सड़क प उमड़ पड़ल! ई संख्या एतना बढ़ गइल कि ओकरा के सम्हारे के कमान खुद पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के अपना हाथ में लेबे के पड़ल। ऊ खुद श्रद्धांजलि देबे गइल रहली आ करीब अढ़ाई घंटा ले साथे–साथे यात्रा में पैदल चलली। एहू बात के पूरा ध्यान रखली कि सब केहू अंतिम दर्शन कर लेबे। एगो अउर महत्वपूर्ण बात ई कि सुनील गंगोपाध्याय ममता बनर्जी के घोषित विरोधी रहले आ उनुका विपक्षी दल खातिर उनुकर सहानुभूति रहे। सुनील कवनो नेता भा उद्योगपति ना रहले, गुंडागर्दियों के उनुका पास कवनो अनुभव ना रहे बाकिर उनका के आम जनता रहे कि मानते ना रहे। आम जनता के एह दिवानगी के ममता बनर्जी एगो अवसर के रूप में देखत रही आ ओकर लाभ उठावत रही। उनुका लागल कि एह घरी हमरा के कुल्हि जरूरी काम छोड़ के एह अंतिम यात्रा में होखे के चाहीं।

बाकिर ई सब हम रउआ सभे के काहें बता रहल बानीं? दरअसल हमरा मन में एगो सवाल आइल ह। कि का भोजपुरी के कवनो साहित्यकार के अंतिम यात्रा में हमनी के ई देखे के मौका मिल सकेला कि अखिलेश जी भा नीतिश कुमार चाहे जीतनराम आम लोगन के सान्त्वना दे रहल बाड़न आ व्यवस्था खुदे सम्हार रहल बाड़न? भोजपुरी छोड़ीं, पिछिला 14–15 बरिस से हम हिन्दी के तमाम बड़ लोगन के अंतिम यात्रा में रहल बानीं। कमलेश्वरजी के नाम त काफी बड़ रहे आ उहां के ना खाली "सारिका" जइसन पत्रिका आ कई गो नामी सिनेमा के लेखक रहनीं, बलुक कांग्रेस के काफी करीबीयो रहनी, कांग्रेस उनुका के पद्मभूषण देले रहे, तबो एगो मंत्री तक उनुका यात्रा में ना लउकल, मुख्यमंत्री के त बाते अलग बा। तनी भोजपुरी रचनाकारन के इयाद करीं कि उनुकर आपन समाज उनुका के कतना महत्व देबेला। पता चली कि एगो बस कंडक्टर के जादे भैलू बा काहे कि उ भाड़ा छोड़ देही भा भाड़ा का पइसा में कुछ कम क दी। सवाल बा काहें?

काहे एगो गुंडा, मवाली आ जइसे तइसे पइसा बटोर लेवे वाला धनसेठ तक के पूरा गांव–जवार दीवाना हो जात बा, बाकिर आपन जिनगी के होम क देबेवाला रचनाकार के कवनो सम्मान नइखे। काहें?

हमरा के माफ करीं सभे ई कहे खातिर की दरअसल हमनी के एगो लालची, डरपोक, भोगी अउर कूपमंडूक समाज के हिस्सा हईं जा। हमार अनुभव बहुत थोड़ बा बाकिर बार–बार एके बात के अहसास भइल बा कि हमनीं चाहे जेतना अतीत में अपना महानता के आ अपना बहादुरी के अपने मुंहे गुणगान करीं जा, बाकिर असल में हमनी के भीतर स्वाभिमान नाम के चीज बहुते कम मात्रा में बा। हमनी के देखावा चाहे जेतना करीं जा, बाकिर असल में ना त हमनी के अपना संस्कृति से नेह ह ना अपना भाषा से प्रेम ह, आ साहित्य! ओकरा बारे में त बाते कइल बेकार होई। जवना समय में पूरा दुनिया गद्य आ वैचारिक साहित्य के बल प अपना समाज के दशा आ दिशा बदले के आंदोलन चला रहल बा ओह 21वीं सदी में हमनी के गावे–बजावे आ चोली–चुंदरी के झमकावे में बाझल बानीं जा भोजपुरी भाषा संस्कृति का नाँव प एही सब क आयोजन कर रहल बानी जा। आजो सवैया आ कवित्त आ सोहर रच के लोग मस्त बाड़े। कुछ अपवाद छोड़ के कहानी आ निबंध उठा के देख लीं आजुओ भावुकता आ अतीत राग के रस ओकरा में चूअत मिली। आम के फेंड़ गिनल आ बाटी चोखा के स्वाद बतावल बड़का बात बुझाला। ढेर साहित्यकारो लोग खाली अपने लिखल पढ़ेले आ ओही के सबसे नीमन मानेले। ले दे के पुरखा–पुरनिया लोग के रचल लोकगीत आ लोककहानी के बल प हमनी के महानता के फूटल ढोल पीट रहल बानीं। मुट्ठी भर

पागल–सनकी लोग बांचल बा जे अभियो भोजपुरी साहित्य लिख के अपना भाषा आ समाज के बचावे में लागल बा। ईहो लोग खयाली पुलाव पकावे आ खियावे के जइसे कसम खा लेले बा। चुपचाप बाकी समझदार लोगन जइसन, हिन्दी आ अंग्रेजी में जाके कुछ पुरस्कार वगैरह बटोरित त बेटा–बहू भी कुछ मान–सम्मान देते स, बाकिर एतने बुद्धि रहित, त हम पहिलहीं अइसन लोग के सनकी काहें कहतीं। ई लोग मर–मर के लिखेले आ फेर जइसे–तइसे पइसा के जोगाड़ क के ओकरा के छपवावेले आ ओकरा बाद झोरा भर–भर के घूमेले आ तमाम लोगिन के बांटेले। जिनका के बांटेले, ओमे से ढेर लोग समझदार होले एह से ऊ खोलियो के ना देखे कि एह में का लिखल बा। ई समझदार लोग मुफ्त में मिलला से किताब ले लेबेला आ मुंहदेखी क के एक दू वाक्य तारीफ के बोल देबेला, जवना के ई लेखक लोग आपन परम सौभाग्य मान लेबेले। एह से अइसन मुट्ठी भर लोगन के बाते कइल बेकार बा। जेकर सम्मान अपने परिवार आ गांव जवार के लोग नइखे करत ओकरा खातिर सरकार आ संस्था काहे परेशान होखी। हमार दादी कवनो फालतू काम करत देखत रहे त गारी दे के कहत रहे, 'मार बढनी रे इहो कवनो काम ह।' का साहित्य आ संस्कृतियो अइसने काम नइखे रह गइल?

कहीं रउआ सभे के ऊ आदमी त नइखे इयाद आ रहल न, जवन बाहर में तनिका देर जादू आ खेला देखा के ओकरा बहाने आपन सुरमा, दवाई आ मंजन बेचे लागेला। कहीं ई त नइखीं सोचत कि नीमन बुड़बक बनवलस, किस्सा सुनावत–सुनावत लागल प्रवचन देबे। अगर सोचत बानीं त ठीके सोचत बानीं। जाईं सभे कवनो रंगीला आ रसीला के सुनीं, तमाम चैनल प आवत बाबा लोग के गुनीं। किरपा पायीं, गंगा नहायीं। किताब आ पत्रिका से का मिले वाला बा?

■■ गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सेक्टर–30, गांधीनगर, गुजरात–382030.

गजल

■ शिलीमुख

एक

अनका संकट में, तूँ लुका जइबऽ।
खुद प' आई त तिलमिला जइबऽ।

जौन बाउर बा ऊ देखइबऽ तूँ
जौन कुछ नीक बा, भुला जइबऽ।

तूँ शहर छोड़ के कहाँ अइबऽ?
गाँव बान्ही त फिर परा जइबऽ।

लाल टेसू बनल फिरत बाड़ऽ
रंग उतरी त फिर दुखा जइब!

साँच ई बा कि झूठ नइखे कुछ
हम जो बोलब त अनकुसा जइबऽ।

देखि लऽ ऐना, सच बना देई–
गाँव बोली त पनपना जइबऽ।

दू

हम्हूँ चहलीं कि कवनो घर होइत
जहवाँ सबकर गुजर बसर होइत

लूर आइत कहे के हमरो कुछ
जस कमाये क कुछ हुनर होइत

मन बहेंगवाँ लगाम ना मनलस
काश ओकरा के कुछ खबर होइत

तीर हमरे के टीप के लागल
ऊ जे तनिको एहर–ओहर होइत

जब उहाँ बात के जगहे ना रहे
बात कइला के का असर होइत?

अक्षय कुमार पाण्डेय के दू गो गीत

होरी पूछे...

आज उदासल होरी पूछे–
कइलीं कवन कसुरिया राम!

रहि–रहि करके हिया
कि जइसे फाटल गोड़ बेवाई,
तनिको टिके न पाँव समय पर
एतना लागल काई,
नदी किनारे बइठ उपासे
जिनिगी गिने लहरिया राम।

भींजल कमरा अस कलेस बा
कइसे एके गारीं,
लउके ना रेंगनी उछाह कऽ
कहवाँ जाइ पसारीं,
मुस्किल बा पहिचानल चेहरा
रात भइल अस करिया राम।

अँकुरे ना सपना काहें
बंजर अँखियन कऽ माटी
आन्ही बरखा, पाला, लाही
इहे रहल परिपाटी,
असरा ओढ़े पेवन लागल
दुख कऽ मइल चदरिया राम।

तोपीं पीठ त पेट उघारे
केतना सहीं तवालत,
सुसुक–सुसुक के चूल्हा रोवे
बिगड़ल घर कऽ हालत,
मन चहकी कब फोरन महकी
पूछे छिपुली थरिया राम।

बहुत बा अन्हियार

बहुत बा अन्हियार
खिड़की खोलऽ
घर में घाम आई।

साँस नइखे लेत
मौसम मर गइल बा,
हवा बा गुमसुम
उमस अस भर गइल बा,
हर जगह लऊँजार
ऊपर झोल
नीचे सीड़–काई।

आलमारी में रखल
चादर इया कऽ,
कुतर दिहलस मूस
धन सँइचल हिया कऽ
हो गइल बेकार
घूनल ढोल
अब ना काम आई।

रात में अब छुरी लागे
पात हरियर,
कठिन बा पहिचान
ऐना भइल आन्हर,
के कइल अलचार
खुल के बोलऽ
के असली कसाई?

सामयिकी

दुर्दशा में परल मुक्तिदायिनी गंगा के मुक्ति

■ आनन्द 'संधिदूत'

अभी हालहीं दैनिक जागरण अखबार का ओर से "गंगा–जागरण यात्रा" निकललि रहलि ह, जवन गोमुख–गंगोत्री से गंगासागर तक जाये वाली बा। गंगा जी का किनारे–किनारे सड़क मार्ग से चले वाली ई जागरण यात्रा मिरजोपुर आइलि, जहाँ हमनी के गंगा जी कलसा के आरती उतारे आ फूल–माला चढ़ावे के सौभाग्य मिलल। यात्रा के उद्देश्य रहे जनता में गंगा का सफाई खातिर जागरूकता पैदा कइल। लोकतंत्र में जनता के जागरुक करे के प्रयास केतना सफल होला ई त भारत का इतिहास में दर्ज बा। जनसंख्या नियंत्रण जइसन आवश्यक विषय पर जागरुकता पैदा ना हो पावलि। जागरुकता पैदा करे का प्रयास के ज्यादती मान लिहल गइल आ अइसन अफवाह उड़ल कि इन्दिरा गाँधी जइसन नेता के सरकार गिर गइलि। कबे–कबे जागरुकता का समानांतर अफवाहो उड़ेला जवन बाजूबेर बड़ा सजोर साबित होला। हमरा उमेद बा गंगा मुक्ति आन्दोलन में कवनो अफवाह ना उड़ी आ ना राजनीति होई!

गंगा पुनर्जीवन अभियान का साथ कवनो विरोधी लहर चले के त सम्भावना नइखे, लेकिन एह सोच में पक्ष–विपक्ष के अभिव्यक्ति बहुत बा। सरकार के कहना बा कि गंगा के गन्दा होखे के कारण अनदेखी आ अन्धाधुन्ध बिकास बा। लेकिन एह के मान लिहला पर राजनीति आवे के डर बा, काहें कि अन्धा–धुन्ध विकासो त सरकारे का ओर से भइल बा, भले सरकार केहू के रहल होखे। आज हालत ई बा कि उत्तराखण्ड से लेके, बंगाल तक हरेक चार–पाँच किलोमीटर का बाद पम्प कैनाल के प्लान्ट बइठल बा। एह में कई गो नहर त एतना विशाल बाड़ी स कि उहनी का सामने औसत दर्जा के नदी छोट महसूस होत बाड़ी स। एह जलदोहन के हद त तब हो गइल, जब उत्तराखण्ड में टेहरी बांध बना के गंगा का बिपुल जलराशि के रोक लिहल गइल आ मैदानी क्षेत्र गंगा के सीवर का पानी पर मरे जीये खातिर छोड़ दिहल गइल। आज गंगा में जवन बहत बा, ऊ एहर ओहर से गन्दा नाला से गिरत सड़ल सरदो के पानी हऽ जवन दिल्ली, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस आ पटना जइसन बड़ आ छोट शहरन से बिना ट्रीटमेन्ट के गंगा में लगातार गिरत बा या कहल जा सकेला कि एतना गन्दा आ जहरीला बा कि ओपर ट्रीटमेन्टो क कवनो असर नइखे। दिल्ली में त जमुना के पानी फलाँग भर दूरे से बसाये लागेला।

ई समस्या खाली जनता का बस में नइखे, एह से जनता के जागरूक कइले एकर समाधान ना निकली। एकरा सफाई के कामो एतना जटिल आ खर्चीला बा कि खुद सरकार एह में हाथ डालत अनकसाति बा। एकर सबसे बड़ा उदाहरण दिल्ली के बा, दिल्ली में जमुना नदी मल मूत्र आ गंदगी के भारी भरकम नाला बन गइल बा। आज कई दशक से जमुना नदी के पानी पीयल त दूर, छूये लायक नइखे, लेकिन आज ले सरकार कुछ ना क पवलस। ईहे हालत जमुना–गंगा क किनारे बसल हरेक नगर आ कस्बा के बा। सभत्तर गन्दगी नदी में गिरत बा।

आज से बीस–पचीस साल पहले गंगा का सफाई खातिर 'गंगा एक्शन प्लान' बनल। ओकरा कार्य जोजना में मिरजोपुर नगर शामिल भइल रहे। पूरा शहर में सीवर प्रणाली चालू भइल। सीवर के पानी जल चिकित्सा का बाद खेत में सिचाई का काम में लिहल जाये के रहे, लेकिन समस्या के निदान ना निकलल। गंगा का थाला, आ किनारे बसल लाखन जनसंख्या के मल–मूल अबहियों गंगा में गिरत बा, एहर के बस्ती एतना खलार रहे कि एकर नाला सीवर में ना उठावल जा सकल। मिरजापुर में कालीन गलइचो उद्योग बा। गलइचा के धोवल रासायनिक पानी, बहुत बड़ी मात्रा में निकलेला। ई पानी छोट–मोट नदी–नाला से या सीधे गंगा में गिरत बा। एह रासायनिक आ जहरीला पानी के प्रभाव से नगर का आसपास का पहाड़ी नदियन में जल जीवन समाप्त हो गइल बा। मिरजापुर में एगो पहाड़ी नदी बहेले– लोह नदी या टँड़वा के नदी। एकर पानी बांध बना के नगर का पेयजल के काम में लिहल जाला। बांध का बाद जवन जल बचेला ऊ नदी में बहा दिहल जाला। एगो जमाना रहे जब एकरा किनारे घाट बनल रहे आ लोग एकरा पानी से पिकनिक में खाना बनावे। आज हालत ई बा कि एह नदी में एक्को जलजीव– साँप, मेढक, मछरी कुछ बाँचले नइखे। नदी में पशु तक प्रवेश करे से अनकसालन स। एह में गलइया के धोवन जहरीला पानी गिरत बा। एह समस्या खातिर कई बेर आवाजो उठल। हिंदी–अंगरेजी का

अखबारन में लिखाइल। फूलन देवी जब सांसद रहली त ऊ धरना दिहली, लेकिन कवनो नतीजा ना निकलल। कहल जाला कि नौकरशाही के 'पूज–पाज' के गलइचा कम्पनी अबहिंयों आपन जहर नदी में उगिलत बा। ई नदी दू–तीन कोस चल के गंगा में मिल जाले।

सूरदास लिखले हउअन कि 'एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो, दोनों मिल जब एक बरन भये सुरसरि नाँव परो।' एह कविता से ई साफ बा कि मनुष्य के पैदा कइल गन्दगी हमेशा से गंगा में गिरत रहल, लेकिन गंगा गन्दी ना होत रहली ह। कारन ई रहे कि ओह में आपन बहत पानी एतना जादा रहे कि पानी का बहाव से गन्दगी अपने आपे साफ हो जात रहे। खुद गंगा का सहायक नदियन में एतना पानी रहे कि ऊ कुल बटुरा के गंगा के एगो विशाल रूप प्रदान करत रहे, जेमे स्टीमर–जहाज ले चलत रहलन स।

अब ऊ विशाल रूप खतम हो चुकल बा। गंगा में अब बड़ी–बड़ी छवलकी नाव, स्टीमर आ जहाज नइखे चलत। गंगा नदी का माध्यम से माल के ढोवाई अब बन्द हो चुकल बा। केतने अदिमी जे नियमित गंगा स्नान करत रहे ऊ स्नान करे नइखे आवत। गंगा के पानी करिया रंग के हो चुकल बा आ ऊ दैनिक जीवन में इस्तेमाल करे लायक नइखे।

सरकार गंगा के सफाई के कार्यक्रम बनावे जा रहलि बा– सरकार गंगा में थूकल–खँखारल आ जूता–चप्पल (प्लास्टिक के) धोवला पर रोक लगावे वाली बा। सही बात ई बा कि गंगा थुकला–खँखरला से गंदा ना होली। थूकल–खँखारल त मछरी खा जाली स। गंगा गन्दा बाड़ी अपना बहाव भर पानी के ना रहले। गंगा में गन्दगी साफ करे भर पानी नइखे।

एगो अउरी विचार आजकल चर्चा में बा ऊ देश का हरेक नदी के आपस में जोड़े के बा। योजना ई बा कि देश का हरेक नदी के आपस में जोड़ के ओकरा पानी के पूरा उपयोग कइल जाय। एह योजना का लागू भइला से नदियन के आपन पहचान मिट जाई। अब तक ई बा कि हर नदी का पानी के आपन अलग सवाद बा। जे जानकार बा ऊ पानी चीख के बता दी कि हई पानी कवना नदी के हवे। नदियन के जोड़ दिहला से गंगा, जमुना, गोमती, घाघरा, कर्मनाशा, कोशी, गंडक, सोन आ कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, गोदावरी के आपन आइडेन्टिटी खतम हो जाई। एकर रासायनिक दुष्परिणाम भी आवे त कवनो तैजुब नइखे। प्राकृतिक जल दोहन के दुष्परिणाम के त अब चर्चो होखत बा। कहे वाला लोग त इहाँ तक कहत बा कि उत्तराखण्ड में आइल प्राकृतिक आपदा के कारण टेहरी बांध रहल ह।

हमरा तुच्छ मति में उत्तराखण्ड का चाहीं कि ऊ टेहरी बाँध के तोड़ के अपना भौतिक हित के त्याग करे आ गंगा के मुक्त क के अपना आध्यात्मिक नेतृत्व के स्थापना करे। आज गंगा के मुक्ति के एकरा अलावे अउर कवनो उपाय नइखे। गंगा से जवन नहर लिफ्ट सिचाई से निकलल बाड़ी स उहनियों का प्रासंगिकता पर विचार होखे के चाहीं। ई एगो नीक विचार होई कि गंगा का पाला में गेहूँ आ धान क खेती कम नइखे मोटनजा आ रहरि के खेती के बढ़ावा मिले, जवना में सिंचाई के जरूरते ना होला। जौ–बाजरा–ज्वार –वगैरह अनाज खाये में सुपाच्य आ फायदेमन्द होला जवना के उपयोग अब बहुत कम हो रहल बा।

जनता क ई जिम्मेदारी बनत बा कि ऊ गंगा का किनारे मुर्दा फूँके से परहेज करो आ जहाँ तक सम्भव हो मुर्दा गंगा नदी से हट के फूँकल जाय। अभी हालही में मिरजापुर के पूर्व सांसद उमाकान्त मिश्र के देहान्त भइल ह। ऊ आजीवन गंगा किनारे रहलन, लेकिन मरला का बाद उनकर इच्छा रहल कि उनका लाश के गंगा नदी से ओहटा मिरजापुर से पचास–साठ किलोमीटर दूर बेलन नदी का किनारे जरावल जाय। उनका परिवार के लोग उनकर एह विचार के पालन कइल आ उनकर अन्त्येष्टि बेलन नदी का किनारे भइल। जे समर्थ बा आ प्रभावशाली बा, ओकरा चाहीं कि अइसन विचार के आगे बढ़ाओ। गंगा का किनारे के कई गाँव में आजुओ ईहे प्रथा बा कि मुर्दा के जस क तस साबुत गंगा में प्रवाहित कइल जाव ई प्रथा कानून से बन्द होखे के चाहीं।

■ ■ पदारथलाल के गली, बासलीगंज, मीरजापुर

भोजपुरी के पत्रिका आ किताब कीनि के पढ़ीं आ पढ़ाई ! मातृभाषा खातिर इहे राउर सहायता होई।

दोहा छंद

"कुछ आज के कुछ काल्ह के"

■ आनंद संधिदूत

केरा तरु आगे बढ़ल कहलस बेर–बबूर।
बहुत पाप गइले पड़े जनमभूमि से दूर।।

होत भिखारी सेठ बा सेठ होत मजदूर।
लोकतंत्र में दान के नया–नया दस्तूर।।

बन्हल चमोटी जे चले मालिक का अनुसार।
ऊहे एहिजा बीर बा ऊहे बा हुँसियार।।

आनन्द अँगुरी बल बिना भइल न एगो काम।
बड़ दिमाग हाथी भइल अँगुरी बिना गुलाम।।

केहू दुर्मुख तीत बा केहू मधुर अतीव।
आनँन्द एह संसार में तरह–तरह के जीव।।

भय से अनुशासन बने भय से होत न प्रीत।
गइल विभीषन छोड़ के रावण संग सभीत।।

ओठ सरोवर पर नहा, हँसत चले मुसकान।
ई रुमाल कइसे ढँके अइसन रूप सयान।।

ताके सागर सांझ के बाँधे जूड़ा फूल।
अब तक लउकत ना मिले लहरपार मस्तूल।।

माथे डगरी बामकर आँचर दाँत दबाय।
नैन नचावत बिन कहे कई बात कहि जाय।।

चिड़ा कहे चिड़िया हँसे गइल अन्हार बिलाय।
तब जाकर के जगत में रथ सूरज के आय।।

■■

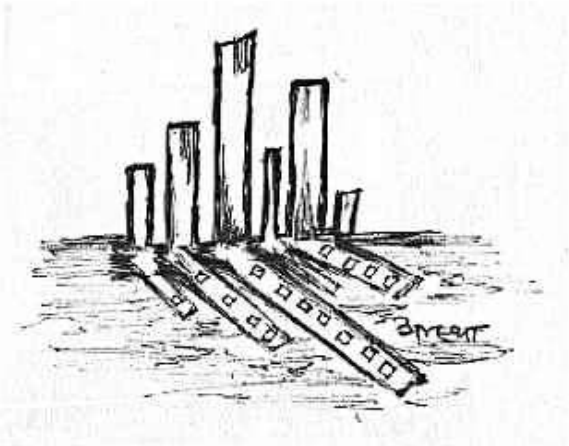

सोच-विचार

शिव-चेतना से पूरित काशी आ गंगा

■ डॉ0 एल.बी.तिवारी

एह दुनिया में जेवन जीव जनम लेला, ऊ अपना जिनगी में सुख आ आनंद से रहे के इच्छा करेला। आदमी बुद्धिमान प्राणी हऽ आ बाकी जीव-जानवर से ज्यादा संवेदनशील आ चतुर होला। मन, बुद्धि, चित्त आ अंतःकरण के चतुष्टय से ओकरा भीतर एगो जाग्रत चेतना रहेले। ऋषि-महर्षि लोग एही चेतना (चित्त-शक्ति) के साधि के आत्मा-परमात्मा के ज्ञान पावल। हमार देश दुनिया के संतोष आ त्याग से जीये के शिक्षा दिहलस। अजुओ इहँवाँ एगो शाश्वत, मृत्युन्जयी, काल निरपेक्ष आ सार्वभौम संस्कृति प्रवहमान बा। इहे हमनी के देश के खास पहचान बनल। आज सांस्कृतिक उतार-चढ़ाव आ राजनीतिक युद्ध-महायुद्ध के स्थिति एह दुनिया के झकझोर के रख देले बा जवना से इहँवों कऽ लोग प्रभावित भइल बा। एकरा बावजूद, आजुओ हमहन का पुरुखन के आध्यात्मिक ज्ञान हमनी के राह देखावे वाला दीया का रूप में मौजूद बा।

इ सृष्टि हमेशा से समय के धारा में नदी नियर बहि रहल बा। एके संसार कहल जाला। "सम्यहलन्तकतया सरति गच्छति कलान्तरम् इति संसारः" हर छन बदलत एह संसार में मेहरारू, बेटा, धन, दौलत, देंहि, घर-दुआर- सब नष्ट हो जाये वाला चीझु बा; बाकिर तब्बो ओह में अझुरा के लोग दुखी भइला से अपना के ना रोक पावेला। इहे आदमी के नासमझी हऽ। एकरे के 'माया' कहल जाला जवन हमनी के अनादि-समय से जकड़ले बा। एकरा से छूटे के उपाय हमनी के शास्त्र-पुराण, श्रुति-स्मृति आ संत-महात्मा लोग बता सकेला; जवना से आदिमी में ज्ञान आ विवेक जागेला। तब जीव 'माया' का बन्धन से छूटि के 'शिव' के रूप हो जाला।

अपना देश के घर-घर में गीता, रामायण, वेद, पुराण धइल रहेला। हमनी के माइयो-बाप, दादा-दादी हमेशा धरम-करम के बतकही करत रहलें। हमार माई कबो-कबो एगो गीत सुनावस- 'हाय करो, बाय करो/काशी में वास करो, गंगा असनान करो...।' माई का एह गीत के बोल तऽ बड़ा सरल बा बाकिर एकर भाव ओतने गूढ़ बा! "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता" यानि कि धीरे-धीरे भोगवे एह शरीर के भोगे लागेला! बाकिर एही शरीर में शिव का रूप में आत्मा भी वास करेले। ई आत्मा भोग से नाहीं, त्याग से तृप्त होले। एही से जिनगी के असली लक्ष्य के पावे खातिर एह असार-संसार के 'बाय' करीं आ भगवान के 'हाय-हैलो' कइके उनका शरण में जाए के कोशिश करीं।

'काशी' शब्द के मतलब प्रकाश होला। शास्त्र कहेला- "काश्यते प्रकाशते सर्वविधं ज्ञानम् यस्यां सा काशी" यानी अज्ञान के दूर कइके, सब तरह के ज्ञान देबे वाली नगरी हउवे काशी जवना नगरी में चेतना के प्रकाश से आत्म-ज्ञान मिले, जहँवाँ शरीर के त्याग कइला से जीव शिव में मिल जाला; जवन नगरी जीव के सब तरह के कर्म-बन्धन से मुक्त कइ देले-ऊहे काशी हऽ। तीनों लोक के पवित्तर करे वाली काशी प्रलयो का बेरा जस-के-तस रहेले। एकर नाश ना होला। एह काशी का बारे में का कहे के? बाबा तुलसीदास जी लिखले बानीं-

'सेइअ सहित सनेह देह भरि,
कामधेनु कलि कासी।
समनि सोक-संताप-पाप-रुज,
सकल-सुमंगल-रासी।।'

कलियुग में काशी कामधेनु कऽ रूप हउवे। प्रेम के साथ काशी जी में रहि के विश्वनाथ जी कऽ पूजन करेके चाहीं जवना से सब तरह के रोग, शोक, दुःख, संताप, पाप के नाश हो जाला। जवन एह ब्रह्माण्ड में बा, ऊ सब एह शरीरो में बा-"यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे।" यानी एगो काशी तऽ अपना धरती पर बा, बाकिर असली काशी हमनी का भितरे बा। ओही के जनला आ सेवला से मनुष्य के एह संसार से मुक्ति मिलेला।

बहुत पुराना जमाना से परब तिवहार का दिने लोग गंगा जी में स्नान करेला। गंगा जी उत्तरी भारत कऽ जीवन-रेखा मानल जाली। जनम से लेकर मुवला तक सबकर उद्धार गंगे का शरण में गइला पर होला। वेद-पुराण से लेके लोक-गीत आ सिनेमो में गंगाजी के महिमा कऽ बखान बा। स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में विशेष रूप से स्वयं भगवान विश्वनाथ जी विष्णु जी से गंगा-तत्व के वर्णन कइले बाड़े। गंगा जी में सब तीरथ, यज्ञ, तपस्या, चारों वेद, ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित सब देवता अपना सूक्ष्म रूप में उपस्थित रहेलन। गंगा मइया भगवान विष्णु के श्री चरण से निकलि के, ब्रह्म लोक का रास्ता से आके, आशुतोष भगवान शंकर का जटा में जगह पवली।

उहवाँ से भगीरथ का तप से उनकर धरती पर अवतरण भइल। गंगोत्री से चल के काशी में आवत–आवत उत्तर–वाहिनी हो गइली। यानी इनकर जल के धारा दक्षिण से उत्तर दिशा में, एगो धनुष के आकार में बहे लागल। एह से इनकर गुण आ महिमा काशी में हजारों–गुना बढ़ि गइल। देश के कोना–कोना से लोग काशी पुरी में पधारेला अउर गंगा–स्नान, दान, यज्ञ, तप, श्राद्ध आ अपना पितर लोगन के पिण्ड दान कइके सात पीढ़ी के उद्धार करेला। ई परम्परा बहुत पुराना जमाना से चलत आ रहल बा। हमनी का अपना लौकिक सुख खातिर भा बिकास का नाँव पर, गंगा जी कऽ एतना शोषण–दोहन कइलीं जा कि उनकर अस्तित्वे खतरा में पड़ि गइल। गनीमत ईहे बा कि अब लोगन के नींद टूटल बा, जवना से गंगा जी के साफ–सुथरा राखे के अभियान शुरू हो गइल बा।

गंगा सबका भाग्य में ना रहली। उनका पवित्रता आ प्रेम के सर्वजन सुलभ बनावे खातिर संत–महात्मा लोग 'भक्ति' के गंगा स्नान कऽ दर्जा दिहल! तुलसी बाबा लिखले बानीं– "राम भगति जहँ सुरसरि धारा।सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।।" अर्थात् गंगा जी भक्ति स्वरूपा हुई। इनका जल में डुबकी लगावल भगवान के भक्ति में डूब गइला के समान होला। हमनियों के एह दिव्य, पवित्र आ मुक्ति दायिनी नदी के महतारिये मान के सेवे के चाहीं। एतने से हमनीं कऽ भव–बंधन छूटी आ जिनगी सार्थक हो जाई।

एह लेख में हम शास्त्र, पुराण आ लोकमत के विचार थोरहीं में प्रस्तुत कइले बानीं। मतलब इहे बा कि एह संसार में निश्चित रूप से काशी में वास, गंगा स्नान अउर शिवजी कऽ पूजन कइल भारतीय भावधारा हऽ। कहल बा–

"असारे खलु संसारे, सारमेतत चतुष्टयम।
काश्यां वासः शतां संग गंगाम्भः शिवपूजनम्।।"

हम तऽ इहे कहब कि– "चना, चबेना गंग जल, जो पुरवे करतार। काशी कबहुँ न छोड़िए, विश्वनाथ दरबार।।" हम राजा भरथरी (भर्तृहरि) के विचारो से आप लोग के अवगत करावल चाहत बानीं। उहाँ का अपना पुस्तक में लिखले बानीं कि– 'हम कहिया पुण्य क्षेत्र काशी में दिव्य गंगा जी के घाट पर जाइके रहब आ दूनों हाथ जोरि के अपना माथा से लगाइके कहब कि हे गौरीनाथ, हे त्रिपुरान्तक, हे शम्भो प्रसन्न होई!'

'वैराग्य शतक' के रचइता भर्तृहरि का स्वर में स्वर मिलावत हमहूँ कहल चाहत बानीं कि 'हे बाबा विश्वनाथ, हमनी के एतना शक्ति आ सामरथ दऽ कि हमनी का काशी के वास करे लायक बना सकीं जा आ गंगा जल के तहरा पर चढ़ावे खातिर निर्मल राखीं जा।' आज हमहन के जीवन आ ओकरा आस्था– विश्वास भरल भावधारा के सबसे ज्यादा संकट में डाले वाली चीज हमहने कऽ फइलावल गन्दगी आ दूषित विचार बा। मुक्ति देबे वाली गंगा आ शिवत्व चेतना से भरल काशी हमहन के आश्रय या पोषण तबे दीहीं जब हमनी का ओके आश्रय आ पोषण देबे लायक रहे देबि जा। हमरा माई के कहलका तबे सार्थक–सुफल होई– 'हाय करो बाय करो, काशी में वास करो, गंगा असनान करो!'

■■ राजीव नगर, सतनी सराय, बलिया–277001

व्यंग कविता

नेता पुराण

■ रामजी पाण्डेय 'अकेला'

बी.ए. कइलीं एम.ए. कइलीं, पी–एच.डी. के डिगरी
सगरी लेके हाथ में अपना धीरे धीरे रगरीं!

रउवा से तऽ निमने बाटे ऊ मनुआ के चाचा
पाँच बेर में मैट्रिक कइलस खींच–खाँचि के बाचा
पार्टी का 'कोटा' टीकट से, जीत के बनल बिधायक
लोक कहेला अब ओकरे के 'बाटे बेटा लायक!'
बनल मिनिस्टर जाते पटना, 'कोटा' का किरपा से
कइलस शादी गोर–गार कवनो मेमिन शिल्पा से
भकुवाइल देखल सब दीदा फार के अइसन घटना
सब गँवहीं हर जोतत बाटे, ऊ बस गइलस पटना
ललकी बत्ती के आगा–पाछा धावेला फोरस
छप्पर फारि मिलल सब ओके इहे कहाला सोरस
काहें हाड़ ठेठाई केहू, पढ़ला खातिर आरा
बे पढ़ले मंत्री हो जाता गुंडो आ हतियारा

जनता में भासन दे आई 'जल्दी मिटी गरीबी'
रही न फुरसत बात करे के, कतनो रहसु करीबी
राजनीति, जे पद ना पावे, ऊ बदलेला पाला
चाहे कवनो पाहुन होखे या होखे ऊ साला
राजनीति बेस्या के साड़ी लोग कहेला सगरी
बाकिर लोग बइलते पाला, बान्हे ऊजर पगड़ी
बनी करोड़पति पाँच बरिस में कइके मुहवों काला
भले जेल के हावा खाई, बाकिर करी घोटाला!

■■ गजाधर पांडेय, चीनी मिल, बक्सर

पर्यावरण विचार

ना जाने हमनी का कब चेतबि जा

■ हीरालाल 'हीरा'

भूमि माता हऽ आ हमनी का ओकर पुत्र हई जा। जब इंसान पहिले पहिल धरती पर आइल त धरती आ प्रकृति का गोदिये में गिरल। माटी से बनल देह माटिये में खेलत कूदत सेयान भइल। ओकरा सोझा धरती, पहाड़, नदी समुन्दर जंगल आ हरियर मैदान सभ रहे। फूल–फर, अनाज, पानी आ हवा सब प्रकृतिये के दिहल रहे। अदिमी के पोषण आ गुजर बसर करे लायक जरूरी हर चीज मौजूद रहे इहाँ। वन में फल–फूल, लकड़ी, समुन्दर में भोजन आ कीमती रतन, नदी में मछरी आ मैदान में खेती–बारी लायक अवसर मौजूद रहे। भूइं के नीचे जल का मीठ सोत का सँगे–सँगे कोइला, हीरा, मैगनीज आ लोहा आदि हर तरह के खनिज पदार्थ मौजूद रहे। फेर अदिमी एके खोजलस आ उपभोग कइलस। लोग नदियन आ जल सोत का आस–पास जहाँ जहाँ सुविधा बुझाइल, आपन निवास बनावत गइल। जीवन खातिर पानी आ हवा के मोल सबसे अधिक रहे, साइत एही कारन लोग नदी किनारे बसल जरूरी समझलस।

प्रकृति के नैसर्गिक उपहार मानव जीवन के आधार बनल। अदिमियो एके समझलस आ ओकरा प्रति कृतज्ञता प्रगट कइलस। ऊ प्रकृति के ईश्वर के रूप मानि के सरधा आ आस्था से पूजा कइलस। प्रकृति अपना मूल रूप में बनल रहो, एह के ध्यान में राखि के अपना आवश्यकता के सीमित राखत एके ओतने दोहन कइलस जतना जरूरी रहे। शादी बियाह आ अन्य शुभ अवसरन पर नदी, सागर, कुँआ, धरती माई आ वृक्ष आदि के पूजन के परंपरा चलल। हालांकि वेद आ रिसि लोग जल आग के देवता के रूप में मानि के पूजन कइलस। बाकिर आगा चलि के लोक व्यवहार के देवता का रूप में अग्निदेव, पवन, वरुण देव के देवता का रूप में पूजन होखे लागल। हम जेकरा के देवता मानब, ओकरा प्रति हमार सरधा, आदर बनल रही। ओकरा से छेड़छाड़ आ ओके नुकसान पहुँचावे के हीमति ना परी। मनुष्य के एही सोच आ संतोषी जीवन के असर रहे कि ऊ अपना जरूरते भर प्रकृति के उपयोग कइलस। साइत एही से प्रकृतियो ओकर साथ दिहलस। मनुष्य के प्रकृति के साथ संतुलन कायम रहे। अदिमी के सही सोच आ जीवट के नतीजा रहे कि ऊ वृक्ष के महत्व समुझत खेती के संगे बड़–बड़ बगइचा लगवलस। कुँआ, बाबड़ी, पोखरा खोनवलस। इहाँ तक कि लोग अपना नाव से, अपना सनमति आ श्रम से एतना बड़–बड़ बगइचा लगावल जहाँ घाम में छाँहे–छाँह एक गाँव से दोसरा गाँव में लोग चल जाव। हर दुआरे नीम आ गाँव के कगरी एगो दूगो बर, पीपर, बरगद भा पाकड़ के छँहगर फेड़ जरूर रहे जहाँ गाँव के लोग आ मवेशी गरमी में आराम करसु।

समय का साथ जइसे–जइसे विज्ञान के उन्नति आ विकास भइल, ओकर सबसे अधिका असर इंसान के सोच पर पड़ल। भौतिकता के होड़ में मनुष्य अपना पुरुखन के थाती आ धरोहर तक के उपेक्षा कइलस। ओके अपना उपभोग के साधन मात्र मनलस। परंपरा आ प्रकृति से ओकर निजी ममत्व आ नेह छोह खतम हो गइल। ओकर आस्था लोप होखत गइल। प्रकृति के एगो संसाधन (जिनिस) समझ के दिन–राति दोहन शुरू भइल। गड़हा आ पानी निकास करे वाला नाला पाटि दीहल गइल। आबादी के पानी अपना अन्दर लेइ के सबके कीचड़ से मुक्त राखे वाला तालाबन के समाप्त कइ दीहल गइल। शहर नगर के बीच भा सटि के बहे वाली नहरन आ ताल के जगह छिना गइल। नदी के पाट में भवन, होटल आ माल फ्लैट बनत चल गइल। खनिज खातिर पहाड़न के लगातार तूड़ल आ ढहावल गइल। जंगल के जंगल काटि के वीरान बना दिहल गइल। गाँवन में बाग–बगइचा के निशाने मिटत चल गइल। आज हमहन का क्षेत्र में सगरी कुँआ, बावड़ी, पोखरा, तालाब लगभग खतम हो चुकल बाड़न स।

प्रकृति के एह अन्धाधुन्ध आ निर्मम दोहन से पर्यावरण प्रभावित भइल। प्रकृति के स्वाभाविक चक्र गड़बड़ाइल। जाड़ा, गरमी आ बरसात के जवन समय सीमा आ देन, कूल्हि प असर पड़ल। भूस्खलन,सूखा, अतिवृष्टि आ अल्पवृष्टि एही के नतीजा ह। आज काल पहाड़ पर कबो अतिवृष्टि हो जाता त अतिक्रमण से सिकुरल, किकुरल नदी नाला पानी के तेज धारा नइखन स रोक पावत। पानी आपन रास्ता खुदे बना लेला। ओकरा प्रबल वेग में बड़े–बड़े, बान्ह आ पक्का निर्माण टूटि जाला। ब्रह्मपुत्र, घाघरा, कोसी आ गंगा

के त छोड़ीं, जनपदन के छोटो से छोट नदी जब आपन विकराल रूप देखावेले त हजारन लोग बेघर हो जाला आ करोड़न के फसल नुकसान होला। परु के केदार नाथ त्रासदी आ असों के कश्मीर के बाढ़ साक्षात् प्रमाण बा। भूस्खलन से उत्तराखण्ड तबाह हो गइल आ महाराष्ट्र में कई गाँव जमीन के अन्दर चल गइल।

धरती के आपन एगो संतुलन बा। प्रकृति ओकर सहायक है। दूनो के आपुसी तालमेल जरूरी बा। पहाड़ जल आ भूमि के कई गो सतह आ पलेट आपुस में बन्हाइल गुहाइल बा। दोहन आ खनन के अति होई त ईहे कूल्कि देखे भोगे के मिली। भोग आ उपभोग के कवनो अन्त नइखे। अदिमी मरे का बेरी ले उपभोग आ भोग से पीछा ना छुड़ा पावेला। आजु के स्वार्थी जुग में खाली आपन हित सोचे वाला लोग ई भुला जाता कि खुद ओकर हित करे वाला जदि आपन हाथ खींच लेई त ओकर का होई? धरती आ प्रकृति तबे ले आड़ छाँह दीही आ तबे ले पोषण करी जब ले ऊ जीयत रही। मुर्गी ओतने अण्डा देले जेतना ओकर सामरथ–सीमा बा। एही तरी भंइस गाय के दूध देबे के एगो सीमा बा। आदमी अधिक से अधिका उगाही का चक्कर में एह साँच के भुला जाता कि दोहन आ शोषण के एगो सीमा होखे के चाहीं। धरती, नदी, पहाड़, गिट्टी, बालू के धुँआधार खनन पूरा पर्यावरण संतुलन बिगाड़ चुकल बा। पूरा पर्यावरन संतुलन के बिगाड़ के ओह खतरनाक बिन्दु पर लिया देले बा, जहाँ से सिवाय विनास के कुछ हासिल ना होखी। एही में हमनियों के जिनिगी दाँव पर बा। अब सभका चेतहीं के परी। कइसे चेतल जाई? चेति के का कइल जाई? असंभव के संभव इन्साने कइले बा। हमनी का इन्साने हईं जा। राह मिली त समाधानो मिली। धरती, जली, हवा के बचावे खातिर हमनी का बहुत कुछ कर सकेनी जा।

■■ भारतीय स्टेट बैंक, दुबहर,बलिया

दू गो ग़ज़ल

■ आसिफ रोहतासवी

[एक]

इ उनकर तुगलकी फरमान बाटे
करेके उनकरे जयगान बाटे।

ठोकाइल कील बाटे देह सउँसे
सलीबन पर टंगाइल जान बाटे

इहाँ ऊहे फरत–बउरत–फुलाता
कि जतने जे निपट बइमान बाटे

जठर के आग पसरत जा रहल बा
हवाले खेत आ खरिहान बाटे

चिराइन बू चिमनियन के धुआँ में
झोंकाइल भट्ठियन इन्सान बाटे

तनी फुर्सत में होखसु तब कहीं कुछ
अबे हाकिम के मुँह में पान बाटे

दुलम बा आदमी 'आसिफ' मिलल अब
चढ़ल हैवानियत परवान बाटे।

[दू]

अस केहू खरखाह त होखे
कुछ हमरो परवाह त होखे

घामल–थाकल लोग जुड़ाई
फेंड़न में कुछ छाँह त होखे

जीये वाला जीए लेला
जीये के कुछ चाह त होखे

उद्धुकल लोग सम्हरिए जाई
थामे वाला बाँह त होखे

लंका खाक जरूरे होई
जन के तवँकत आह त होखे

'आसिफ' कब पँवरे से भागल
नदिया कुछ गहिराह त होखे।

■■ हिन्दी विभाग, पटना साइन्स कालेज, पटना–5 (बिहार)

उपन्यास

बनचरी

■ अशोक द्विवेदी

(पहिली कड़ी)

गंगा नदी पार होत-होत अँजोरिया रात अधिया गइल रहे। दुख आ पीरा क भाव अबले ओ लोगन का चेहरा प' साफ-साफ देखल जा सकत रहे। छछात मृत्यु का सामने से, सुरक्षित लवटि आइल साधारन बात ना रहे। संजोग अच्छा रहे कि असमय आ अकाल आवे वाला मउवत परछाहीं छुइ के निकल गइल रहे। ओकर कल्पना रोआँ खाड़ करे वाला रहे त भला जे ओकर साक्षात्कार क के आइल होई, ऊ अतना जल्दी कइसे सहज हो पाई? भीतर के असहजता, ओह लोगन के बोली रोकि के कुछ घड़ी खातिर गूँग बना देले रहे।

नाव से उतरि के पूरा परिवार, ठंढा पानी से हाथ-मुँह धोवल, दू-चार अँजुरी पानी पीयल आ अभी मुँह पोछते रहे, तले नाइ वाला ओह लोगन का ओर एगो मोटरी बढ़ावत बोलल, 'एह मोटरी में कुछ पहिरे-ओढ़े के बस्त्र आ खाये-पिये क समान बा! आ पानी पिये खातिर एगो कमंडल बा।' जब एक जना हाथ बढ़ाइ के मोटरी लिहलन त ऊ फेर बोलल, 'सामने क बालू-पाट पार कइ के, सोझे दक्खिन रउवा सभ बन में पहुँचि जाईं। फजीर होखे से पहिले रउवा सभ के राज क सीमा पार क लेबे के चाहीं! बस, हमके अतने आदेश रहल, भूलचूक माफ करीं आ हमके अनुमति देईं।' फेरू ऊ फुर्ती से नाइ घुमवलस आ चप्पू चलावत बहत धार में पहुँचि गइल।

ओहू लोग के जइसे परिस्थिति आ समय के पूरा ज्ञान रहे, केहू कुछ ना बोलल, बाकि ओ लोगन का संगे उतरल ऊ तेजवान अधेड़ औरत गंगाजल उठाइ के हाथ जोड़त बिनती कइली, 'माई! तोहार दया आ ममता हमरा लड़िकन पर बनल रहे, रउरा कृपा से ई फरत-फुलात रहें सऽ!'

बालू के ऊ लमहर चाकर पाट आ दूर-दूर ले रात के निर्जन-नीरव सन्नाटा। गर्मी, थकान आ नीन तीनू से बेहाल ऊ टोली हाली-हाली आगा बढ़े लागल। बालू में धँसत गोड़, जात्रा के अउर भारी बनावत रहे, बाकि कहल जाला नऽ कि जब जान प संकट आवेला, त संकट से बाँचे खातिर अदिमी का गोड़ में पाँख लागि जाला।

आखिरस ऊहो लोग लमहर बलुअर-पाट लाँघत बन में पहुँचिये गइल।

- 'तीन कोस के लगभग इ लमहर पाट दिन में पार कइल बहुत कठिन होइत!' सबसे आगा चलत सदस्य रुक गइल,
- 'हमसे अब नइखे चलल जात बेटा!' थकान से निढाल औरत बइठि गइल,
- 'चिन्ता मत करीं माता हम आपके अपना पीठि पर ले चलब।' कद काठी में सबसे हृष्ट-पुष्ट आ बलशाली लउके वाला युवक बइठि के महतारी के पिठइयाँ चढ़ा लिहलस,
- 'हँ, कहीं आगे साफ जगह देखि के सुस्ता लिहल जाई; नऽ बड़का भइया?' पाछा वाला युवक चलते-चलत बोलल,

अबहीं अकास साफ ना भइल रहे। महतारी के पीठ पर लदले आगा-आगा तेज चलत युवक हँस के बोलल, 'जे ज्यादा थाकि गइल होई, ओके हम अपना कान्ह पर बइठा के चल सकीला, लेकिन अधिका से अधिका दू आदमी के!'

सब हँसत ओकरा पाछा-पाछा फाल डाले लागल। भोर होते रहे, बाकिर लगातार पैदल चलला का हरांसी आ जागरन का कारन ओ लोगन के देंहि लरुवाइ गइल रहे। 'हमके बड़ी जोर से पियास लागल बा बेटा।' माता के मद्धिम आवाज सुनते सब रुकि गइल। कुछ आगा, बायाँ अलंगे एगो पीपर का फेंड़ तर महतारी के उतारत, युवक बोलल, 'तोहन लोग माता का लगे बइठऽ, हम पता करत बानी। इहाँ आस पास जरूर कवनो जलाशय होई।'

- ध्यान से सुनीं मझिला भइया... कहीं जलचर आ सारस चिरइन के आवाज आ रहल बा... जरूर ओने जलाशय होखे के चाहीं। सुकुवार लउके वाला रूपवान भाई आपन राय दिहलस।
- 'हई मोटरी खोल के कमंडल निकाल लऽ आ तूहूँ सँगे जा। सबेर होखे में अभी दू घरी बाकी बा; संभव होई त सब जल्दी से जल्दी नहाइ के आपन थकान त मेटाइ लीं।' जेठ भाई, एगो युवक का ओर ताकत निर्देश दिहलन।

जलचर जीवन का कुलबुल आ चह चह के ऊ आवाज आसे पास से आवत रहे। बलिष्ठ शरीर वाला युवक के टोकत, पछिला बोलल 'भइया, हम तनी एगो डंडा तूरि लीं, देखीं.... जलाशय का किनार पर बेंत लेखा कई गो फेंड़ क झुरमुट बा... बाकि ना, पहिले कमंडल में पानी भर के माता के दे आईं, तब देखल जाई।'

मझिला भाई कुछ ना बोललन, चुपचाप जलाशय का भितरी हेल गइलन, मुँह हाथ धोइ के कुल्ला कइला का बाद दू अँजुरी पानी पी के कहलन- 'पानी त ठंढा आ मीठ बा, तूँ कमंडल में पानी भर के दउड़ जा, माता जब जल पी लेस त सबके इहें बोलाइ लियइहऽ। तबले हम नहा लेत बानी।'

तीन ओर से ऊँच, ढलान पर जमीन सूखल आ पथरीला रहे, बाकि जलाशय साफ-सुथरा आ जीवन से भरल रहे। गहिराई ओतना ना रहे, बाकि जल कमर भर रहे। सब केहू हाली-हाली नहाइल-धोवल आ मोटरी में धइल धोती, गमछा पहिरल। पुरान पहिरल वस्त्र तहियाइ के रखाइ गइल। साड़ी बदलला का बाद माता पुरुब मुँहे खड़ा होइ के पाँच अँजुरी जल देत सुरुज नरायन क सुमिरन कइली, 'हे देव! हमरा लड़िकन के अतना शक्ति-सामरथ दऽ कि ऊ हर बिपदा क सामना धीरज से कर सकँै सऽ। उनहन क आपुसी प्रेम आ एकता जीवन भर बनल रहे।' फेर पारा-पारी पाँचो लड़िका उनकर चरन छूइ के असिरबाद लिहलन स। आस पास का बँसकठ आ बेंत से सुरक्षा खातिर कुछ हथियार बनावल गइल। एह काम में युवकन का करिहाँव में खोंसल कटार आ छुरी बहुत कामे आइल ओह बेरा। एगो जुवक मोट लचीला लमहर बेंत काटि के कामचलाऊ धनुष बना लिहलस। बँसकठ के एगो छोर चोख क के भालानुमा बनावल गइल।

- 'अब जल्दी से जल्दी पयान करऽ लोग! ई क्षेत्र सुरक्षित नइखे। पता ना कब, केहू कहाँ से आ जाव?' जेठ भाई आपन आशंका प्रगट करत कहलन
- 'हँ हँऽ राज के सीमा में एक जगह ढेर देर ले रुकलो ठीक नइखे! भोरे-भोरे जतना दूर जा सकीं जा, निकल जाये के चाहीं। धनुहा के डोर कसत युवक खड़ा होत, जेठ भाई क समर्थन कइलस।'

सब केहू चीझ-समान सरिहा लिहल, कमंडल में पिये खातिर साफ जल भरा गइल आ यात्रा सुरू हो गइल। भोर के आहट से वन-पक्षियन में जागरन क संकेत मिले लागल। स्नान का बाद ओह लोगन में ताजगी आ उर्जा आ चुकल रहे, एही से ऊ लोग फलगरे बढ़ल जात रहे।

अभी ऊ लोग कोस-दू कोस गइल होई कि आकास उजराये लागल। लाल आभा लेले सुरुज नरायन, पुरुब के पह फारत उपराये लागल रहलन। ठंढा हवा में टटकापन के अनुभूति होत रहे। सबेर के बेरा, नइहला-धोवला से आइल ताजगी आ ओकरा बाद लगातार यात्रा से ओह लोगन क शारीरिक-भाखा बदल चुकल रहे। एगो संकल्प आ उछाह भरल नया आभा से दमकत ओह टोली का चाल से ई ना लागत रहे कि ऊ जल्दी बिलमाव ली। सघन-बन का किनार वाला ओह बींड़र बनक्षेत्र में अदिमिन का अइला गइला से बनल डहर, एतना आसान आ सुगमो ना रहे कि ओके मार्ग आ राह कहल जाव; काहें कि नीचे जमीन ऊबड़-खाबड़ रहे आ झरल पतई का साथ बीच-बीच में नोकदार जंगली घास, उघारे गोड़ चले वाला खातिर कठिन रहे। राह का दूनो बगल बनइला झाड़ी, झरबेर, मकोय, आ टप्पा-टोइयाँ एकाध गो कँटइला फेंड़। कबो कबो कवनो छोट फेंड़न पर परजीवी लतर आ बेल से बनल मंडप में दुबकि के बइठल खरहा, बानर भा खेंखर सियार जरूर लउकि जात रहलन स।

साधारन धोती-गमछा में, गँठल देह वाला ओह गेहुँवाँ-गौरांग वर्ण वाला दिव्य युवकन का बीचे चौड़ा किनार वाली उज्जर साड़ी पहिरले गोर रंग क अधेड़ औरत अपना शान्त भाव में कवनो तपस्विनी लेखा लागत रहे। सामान्य दृष्टि में इहे लागत रहे, जइसे कवनो नेमी धर्मी बाह्मन-परिवार कवनो सुदूर जतरा पर निकलल होखे। कुछ घरी पहिले एगो जटहवा बरगद का नीचे बइठि के जलपान करत खा, ओ लोगन में आपुसी निर्णय इहे भइल रहे कि अब विश्राम ना कइल जाई आ दिने-दिने राज्य के सीमा से बहरियाये के पूरा कोसिस कइल जाई। समय आ परिस्थिति दूनो अइसने रहे कि राह में कहीं रुकलो ना जा सकत रहे। जेठ भाई का रूप में आगा हाली-हाली डेग डाले वाला युवक का एक हाथ में भालानुमा चोख लाठी आ दुसरा हाथ में कमंडल रहे, बीच में महतारी का आगा-पाछा चले वाला युवकनो का हाथे छोट छोट डंडा आ भोजन-कपड़ा के गठरी रहे। आ ओकरा पाछा धनुहा-बान कान्ही में टँगले गोर-युवक से हँसि-हँसि बतियावत ऊ बलिष्ठ आ कसल सुडौल देह वाला जुवक रहे। धीरे धीरे आपुस में बोलत-बतियावत ई परिवार इत्मीनान से चलल जात रहे कि घोड़न के हिनहिनइला का साथ टापन के आवाज सुनाये लागल। पूरा परिवार झट से गोलिया गइल। आपुस में कुछ तय भइल आ ऊ लोग दहिनी ओर सघन बन में घुसि के दू भाग में बँट गइल। लतर से तोपाइल एगो बनइला सीसम का पाछा तीन आदमी छिप के बइठ गइल बाकी तीन आदमी आसपास के फेंड़न के ओट लेके सावधान खड़ा हो गइल।

घोड़न के टाप के आवाज उहें आके रुकल जहाँ ऊ लोग अबे खड़ा होके बतियावत रहे। तकरीबन दस गो हथियारबन्द घुड़सवार रहलन। "आखिर कहाँ गायब हो गइलन सऽ?" नायक के झुँझलात बोली सुनाइल

- 'हो सकेला ऊ दहिने का गझिन बन में समा गइल होखन सऽ। एम्मे त जे ढुकल, आज ले ना लवटल!' एगो सैनिक आशंका जतवलस

- 'काहें? एकर कवना प्रमान बा?' नायक फेरू सवाल दगलस

- 'ना सरकार ई मायावी बन हऽ, एम्मे राछस रहेलन सऽ।' दुसरका सिपाही नायक के बतवलस

अइसन ना कि सैनिक नायक एसे नावाकिफ रहे। ऊ ओइसहीं रोब में डपटलस, 'भीतर घुस के देखऽ जा, कुछ न कुछ आहट जरूर मिली।'

सैनिक मजबूरी में भीतर घुस के देखलन सऽ जइसे आफत में जान बचावे आ कोरम पूरा करे खातिर देखल जरूरी होखे। फेड़न का पाछा सपटल युवक सतर्क आ सावधान रहलन स। हार-थक के जब सैनिक जंगल से बहरियइलन स त छिपल परिवार बहरा निकलि आइल। पहिले त जगहे पर ऊ लोग कुछ पल थथमल रहे फेरू एक अदिमी राय दिहल कि जंगल में घुसि के गइला से पकड़इला के डर ना रही आ दुसरा राज के दूरियो बहुत कम हो जाई। फेर त ई सुझाव एकराय में बदल गइल। अन्दाजन दिशा के अनुमान लगावत लोग भितरी घुसत चलि गइल। आगा बन अउर गझिन रहे। ओम्मे सुरुज क रोसनी बहुत कम आवत रहे। काँट-कूस, झरबेर, झाड़ी क पसरल लसराइल डाढ़ि आ टेढ़ ओढँघल झँगाठ फेंड़न के झलाँसी काटत-तूरत, फाँफर जगह बनावे के रहे। गनीमत ईहे भइल कि एक घंटा बाद एगो फाँफर राह लउकल। ऊ लोग ओनिये घूमि गइल। कुछ दूर तक राह सरल रहे, बाकि आगा फेर ऊहे बीहड़ बन।

भयावह आ भकसावन लागे वाला ऊ बन सँचहूँ रहस्यमय लागत हरे। जब-तब, उहाँ ठहरल अथाह सन्नाटा अनचीन्ह अदृश्य जीव जन्तु भा पक्षियन का फड़फड़ाहट से टूट जात रहे। थोरिके देर पहिले फेड़ का एगो लटकल डाढ़ि से लपटाइल लटकल सरप के फूत्कार प' आगा चलत युवक चिहुँकि उठल रहे आ पाछा चलत सब केहू सावधान मुद्रा में आ गइल रहे। अपना चोख, नोकीला डंडा से साँप का मूड़ी का नीचे खोदत दुसरका भाई बोलल, 'ई अब समझ जाई कि हमनियो का सजगे बानी जा!' सँचहूँ सरप डाढ़ि का दोसरा बगल मूड़ी घुसावत आपन जान बँचावे लागल रहे।

- 'मझिला भइया! एह छोट-मोट जीव जंतुअन से त खतरा बटले बा, बाकिर कवनो हिंसक शेर, बाघ भा राच्छस आ जाई त का होई?' धनुषधारी युवक चुटकी लेत पुछलस।

- 'ओके हम देखि लेइब!' आपन पुष्ट कंधा उचकावत मझिला भाई हँस के बोलल।

छन भर खातिर सभका ओठे हँसी उतराइ गइल। निर्जन एकरसता के चुप्पी टुटते हराँसल-थाकल भारी मन कुछ हलुक हो गइल। दरसल एह गझिन सँड़सल बिचित्र बन में कवनो चीन्हल-जानल साफ राह त रहे ना। कबो कुछ दूर तक सुगम साफ डहर लउके त कबो राह रोकत एक दुसरा में गँसल डाढ़ि वाला पातर फेंड़न के कतार। कबो-कबो त अइसन कँटीली झाड़ी मिल जाव कि हाथ-गोड़ छिला जाव। ई त हर परिस्थिति से दू दू हाथ करे क धीरज आ सामरथ वाला ओ भाइयन क एकता आ प्रेम रहे कि ऊ लोग अतना दूर ले सुरक्षित चलि आइल रहे।

अँजोर के लगातार कमी से ओ' लोगन के अंदाजा हो गइल कि दिन ढल रहल बा आ साँझ होखे वाली बा। माता के बाँह धइले चले वाला युवक चलत-चलत अचानक बिचलित भइल, 'अब माई के बहुत थकान हो गइल बा, बड़का भइया! कहीं साफ आ सुरक्षित ठवर देखि के हमनी के ठहर जाए के चाहीं! अइसहूँ रात होखे का पहिले बेवस्था क लिहल जरूरी बा।'

सब रुकि गइल आ माता के घेरि के खड़ा हो गइल।

- 'का भइल माता, हम आपके पीठ पर उठा लेत बानी!'

- 'ना बेटा, तहार छोट भाई बहुत समझदार हऽ। साँझ हो जाई त रुके के व्यवस्था कइल ढेर कठिन हो जाई, आ एह दुर्गम-डेरावन बन में.....!' माता सबकर अकुलाहट कम करत सुझाव दिहली।

- 'हँ भीम! अब कवनो साफ-सुरक्षित जगह खोज लऽ जा, जहाँ रात बितावल जा सके। जहाँ कवनो हिंसक जानवर आसानी से हमहन पर आक्रमण ना क सके। तोहन लोग के रात भर जरावे खातिर लकड़ियो बटोरे के परी।' बलिष्ठ आ देंहगर भाई के नाँव धरत जेठ भाई संबोधित कइलन त अबले शान्त माता तुरन्ते टोकि दिहली- 'बेटा, हम नइखीं चाहत कि केहु क नाँव धइके बोलावल जाव! इहाँ अनजान बन में आपन गोपनीयता बनवले रहला आ आपुस में बतियावे खातिर खाली भाई भा अनुज कहि के बोलावऽ जा।'

- 'जी माता! आगा से हमहन का एकर ध्यान राखल जाई कि हमहन क पहिचान प्रगट ना होखे बाकिर अकेल, एकान्त में इनके हम इनका नाँव से त पुकार सकीले न माता?' जेठ भाई पुछिये दिहलन।

- 'ठीक बा, बाकिर आपन पहिचान छुपावले हमन क पहिल उद्देश्य बा!' माता स्पष्ट कइली

- 'तोहन लोग माता का लगे रुकऽ जा। हम आगा सब तरफ खूब नीक से देखि के आवत बानी कि कहाँ ठहरे के स्थान बनावल ठीक होई।' भीम अपना खास

निश्चिन्त भाव के दरसावत चल दिहलन

- 'रुकऽ भइया, हमहूँ सँगे चलत बानी!' धनुषधारी युवक उठि के उनका पाछा चल दिहलस
- 'हमहूँ चलब, त लकड़ी वगैरह एकट्ठा करे में सहजोग करब!' दोसर अनुज बोलल
- 'ठीक बा, हमहन दू अदिमी माता का देखभाल खातिर बानी जा; बाकिर ज्यादा लम्मा मत जइहऽ जा...' जेठ भाई सहेजत, अनुमति दिहलन।

कुछ आगा गइला पर तीन गो झँगाठ अझुराइल फेंड़न का वजह से राह एकदम अवरूध बुझाइल। उनहन का बीच क दूरी बहुत कम रहे आ उनहन का दूनो ओर कँटइला झाड़ रहे। धनुष वाला भाई फेंड़न का फाँफर में दूर ले ध्यान दिहलस आ भीम के देखावत बोलल, 'मझिला भइया हऊ, जहाँ चार पाँच गो पाथर शिला ढिमिलाइल बा ओकरा आसपास के जगह साफ बा आ उहाँ क जमीनियो उँचाह लउकत बा... बाकि उहाँ पहुँचल असुबिधाजनक बा।' भीम अपना भाई के हटाइ के बीच वाला फेंड़ के तजबीजत ओके उखारे खातिर अँकवारी बान्ह लिहलन। अपना असीम बल का बूते ऊ फेंड़ के हिला-हिला के उखार दिहलन, फेर ओके एकोर फेंकत कहलन, 'तहन लोग इहाँ के माटी बरोबर करऽ। हम आगा चल के जगह ठीक करत बानी।' ऊ फानत ओह जगह पर पहुँचलन जहाँ चार पांच गो पाथर-शिला एहर-ओहर जमल रहे। ऊ चारू ओर तकलन, फेरू एगो घन फेंड़ का पास भारी-भारी शिला ढकेलत डगरावत अइसे धरे लगलन जइसे ऊ फेंड़ के दू ओर से घेरत होखसु। दूनों अनुज एगो डाढ़ि के झलाँसी से झार-बहार के चारू ओर साफ सुथरा आराम करे जोग जगह बना दिहलन सऽ।

सबसे छोट भाई लकड़ी बीनि-बीनि के एगो ऊँचाह जगह पर सरिहावे लागल। धनुषधारी भाई हरियर झलांसी वाला पतई बिछावत सूते लायक बिछौना बना चुकल रहे। फेर भीम कहीं से पाथर के दू गो छोट टुकड़ा आ अँकवार में सूखल लकड़ी बटोरले लवटलन त अपना छोट भाइयन के एकाग्रता आ लगन देखि उनका ओठन पर एगो उदास हँसी क लकीर खिंचा गइल। अपना सुन्दर, सुकुवार दुलरुवा अनुजन के ई दुख भरल दसा देखि, उनका तन में एक छिन खातिर छोभ उठल; 'बस करऽ, अब रहे दऽ! बलुक जाइ के सबके बोलाइ लियावऽ जा! इहाँ हम कूल्हि इंतजाम क लेबि।' भीम सूखल लकड़ी क मोट डाढ़ि एक जगह गोलियावत कहलन।

सबका सँगे जब माई उहाँ लवटली त साफ सुथरा चौरस जगह आ सूते-बइठे के अचम्भित करे वाला इन्तजाम देखि के बहुत खुस भइली। पतई का बिछावन पर बइठि के उनका मन के बहुत सलतंत भेंटाइल बाकि कवनो सोच में, उनकर मन पुरान दिनन का इयाद में भटक गइल। सोचे लगली, 'अपना श्रम से बनावल व्यवस्था, जवना में सन्मति, एकता, त्याग आ प्रेम होखे ऊहें न घर सुख बा। कवनो राजसी ठाट-बाट के नोकर दाई खानसामा वाली सुखद व्यवस्था में रहत खाली-दिमाग वाला लोगन में, सुख-सुविधा आ शक्ति के लोलुपता का साथ इरिखा, डाह आ बैर बढ़ जाला, इहे न हमनियों का साथ घटित भइल।' उनका चेहरा प दुख आ पीड़ा के कइ कइ गो भाव उठल आ बिला गइल।

- 'का बात हऽ माई, तूँ काहें अतना चिन्तित बाडू?' जेठ भाई महतारी क चिन्तित चेहरा के उतार चढ़ाव पढ़त विचलित भाव में पुछलन।
- 'कुछु ना हो, कुछ पुरान इयाद आ-गइल हा...'
- 'ना, ना, माई हमहन का भोजन-पानी खातिर सोचत बाड़ी!' छोट भाई दुलराइल बोलल
- 'हँ नू माई? सँचहूँ इहे बात हऽ? धनुषधारी भाई महतारी कऽ चेहरा पढ़े क कोसिस करत पुछलस'
- 'अरे एमे कवन चिन्ता? हम एगो फलदार फेंड़ पहिलहीं से देखि लेले बानी। अबे लेले आवत बानी!' भीम हँसत खड़ा हो गइलन
- 'तोहन लोग माई का लगे बइठऽ जा; हमनी का फल आ जल दूनों के बेवस्था कर के तुरंते लवटत बानी जा!' धनुषधारी भाई भीम का सँगे जात खा बाकी लोगन के सावधान कइलस, 'इहवाँ तनिक चौकन्नाा रहे के जरूरत बा... ए जंगल में बहुत कुछ विचित्र अनुभव हो रहल बा!'

भीम अपना भाई का सँग कुछ देर बाद लवटलन त अन्हार हो चलल रहे। अँगौछा में बान्हल फल रखला का बाद भीम सूखल लकड़ी का ढेर का लगे बइठ के आग जरावे खातिर पाथर क दूनो टुकड़ा आपुस में लड़ावे लगलन। पाथर से चिनगारी निकले त सूखल पतई में लगावस। थोरिके देर का कोसिस का बाद आग जर गइल। पातर-पातर सूखल लकड़ी जब ठीक से जरे लागल त ओकरा चारू ओर मोट-मोट लकड़ी सरिया दिहल गइल। भीतर से निकलत आग के तेज लपट से एगो मद्धिम अँजोर फइले लागल।

आग का चारू ओर बइठल अपना लइकन के पारा-पारी छोह से देखत महतारी सबका हाथे फल देबे लगली, फेर बाँचल कुल फल क ढेरी भीम का ओर सरकावत कहली, 'हम एही में से खा लेबि।' हँ हँ ई काहे

नइखू कहत कि 'भइया भीम तोहरे बहाने कूल्हि फल खइहें।' मुँहलगा छोट भाई हँसि के कहलस त सभ ठठाइ के हँस दिहल।

- 'आखिर सगरी भोजन क इन्तजाम करे वाला भीमे न बाड़न...' महतारियो विनोद कइली।

फेरू हँसत-बतियावत, खात-पियत घंटा भर बीत गइल। फेंड़ का नीचे महतारी के सुतला का बाद, सभे अपना जगहे पर भउँवात रहे। भीम एने ओने टहरत जब पाछा तकलन त लगभग सबका नीन लाग चुकल रहे। नीन त उनहूँ का आवत रहे, बाकिर अब सबका सूति गइला पर, सूते क इच्छा तेयाग दिहलन। आखिर एह बन में, ए लोगन के अगोरहूँ वाला केहू चाही नऽ? ऊ एक बेर सबका ओर पारा-पारी नजर दउरवलन, बड़का भइया! त्याग आ तप क मूर्ति बायाँ अलंगे ओठँगल बेसुध परल रहलन। हमेशा परछाहीं लेखा, दुख सुख संघर्ष का बेरा संगे लागल रहे वाला पुरुष शिरोमणि धनुषधारी भाई के मुख मलिन रहे। दूनों छोट दुलरुआ भाई जवन अपूर्व रूप आ तेज क स्वामी रहलन, जवनन का वजह से उनुका आत्मा के निरन्तर आनन्द क अनुभूति होत रहे, आजु समय का मार से, साधारन छुद्र मनुष्य लेखा महतारी का दूनो ओर लरुवाइल परल रहलन सऽ। ममता आ छोह के छछात देबी महतारी कवना भरोसे एह निर्जन में अतना निश्चिन्त नीन में बाड़ी... हमरे भरोसे नऽ। ना-ना, हम ना सूतब। ऊ उठि के थोड़िकी दूर पर एगो छोट पातर फेंड़ का सहारे ओठँगि के बइठि गइलन। आग हवा से अउरु लहक उठल रहे।

बन के कुछुए भीतर एगो बड़का झँगाठ फेंड़ का ऊपर से दू गो आँख ओनिये टकटकी बन्हले भीम आ उनका पलिवार का एक-एक हरकत के देखत रहे। भीम के, साँझि से एह सुतला राति ले तनिको सुनगुन ना मिलल रहे कि ओह लोगन पर नजर राखल जा रहल बा। अइसन ना कि ओह भयानक लउके वाला नीरस अन्हार बन में चारू ओर खाली भयानके लागे वाला दृश्य रहे। बइसे उहाँ सब कुछ रहे... जइसे कि बरसाती जल क स्वच्छ जलाशय, फूल, फर आ सुघर लतरन से तोपाइल अनेक किसिम के फेंड़। कहीं कहीं त बइर के लदरल गाँछि अइसहीं मन ललचावे। भीम अइसनके बइर का एगो गाँछ से अँगौछा भर फर तूरले रहले। उनका पता ना रहे कि ओह पूरा बन-क्षेत्र पर हिडिम नाँव के एगो असुर क कब्जा रहे। ऊँच ऊँच पहाड़ी ढलान पर उगल शाल आ साखू के विशाल फेड़ रहलन सऽ। हिडिम आलसी, क्रूर आ भयानक रहे। ओकरा डरे, बन का ओह सउँसे क्षेत्र में वातावरन, उदास डरावना आ नीरस हो गइल रहे।

साँझ होखे का पहिलहीं, जब भीम के पलिवार के लोग ओकरा क्षेत्र में घुसल, तबे हिडिमासुर के पता चल चुकल रहे। ऊ अपना मायावी शक्ति से बन के स्थिति बदले के सामरथ राखत रहे। बाकी अहंकार, आ क्रोध ओकरा कपार पर सवार रहे। ऊ राजा लेखा काम भले ना करे बाकि सबका पर हुकुम चलावे; इहाँ तक कि अपने सहोदर बहिन डिडिमा के ऊ दासी लेखा हुकुम देत रहे। एतना अधिक संख्या में एगो मानव दल देखि के ओकरा जीभ पर पानी आ गइल रहे। ऊ अपना कबीला में जाके, विशिष्ट भोज खातिर तइयारी करे क हुकुम दिहला का साथ आज फेरू अपना बुधिगर, रूपवान बहिन हिडिमा के हिदायत देके भीम का पलिवार पर नजर राखे खतिर भेजले रहे। ओकरा पूरा यकीन रहे कि हिडिमा शिकार के नीक से फाँस ली। हिडिमा अनिच्छा से उहाँ गइल त सुध्धर, रूपवान, देंहिगर आ दिव्य लउके वाला एगो अजबे परिवार ओकरा सामने रहे।

सोझा बइठल गठल देह धजा आ चाकर छाती वाला रूपवान व्यक्तित्व के स्वामी जुवक के पौरुष आ सामरथ ऊ देरी से देखत रहे। आँख झपकावत ओकर निढाल पुष्ट सगरी शरीर निगिचा जरत आग का धीम लपटन से उठत अँजोर में ओके भितरे-भीतर बेचैन करत रहे। आज ओकर मन बदले खातिर बहुत कुछ रहे, जइसे खाना के प्रबन्ध करत भीम आ उनका भाइयन के आपुसी प्रेम आ एकता। हिडिमा का मन में का जाने काहे सहानुभूति आ दया क भाव उपजे लागल रहे। सबले सुखद अनुभूति ओकरा तब भइल जब ऊ ओह शान्त सहज औरत के भोजन परोसत देखलस। गोलाई में बइठल अपना बेटन के दुलार भरल शीतल दीठि से निहारत ऊ भोजन अइसे परोसत रहली, जइसे संसार क सबसे स्वादिष्ट नियामत धरत होखस। हिडिमा के आपन लरिकाई इयाद परे लागल रहे, काश ओकरो महतारी जीयत रहिती...ओकर आँख छलछला उठल रहे। ओके त अपना अहंकारी भाई से हमेशा निष्ठुर व्यवहार आ मार मिलल रहे। अपना कुल के मायावी बिद्या, शारीरिक शक्ति आ चुस्ती-फुर्ती का कारन हिडिमा भलहीं मानव से इतर बलशाली आ असामान्य रहे, बाकि नारी-सुलभ रूप-लावण्य आ नैन-नक्श कम ना रहे।

बे साज-सँवार के जिनिगी जिये वाली जंगली जाति का बावजूद हिडिमा का भीतर एगो नारी हृदय रहे आ ओमे करुना आ दया के मधिम सोत संचित रहे। जातिगत संस्कार आ जीवन-शैली ओके असभ्य आ जंगली का रूप में भले प्रस्तुत करे, बाकि जइसे अँगारी राखी का परत का

नीचे तोपाइल रहेला, हिडिमा का भीतर प्रेम आ दया के धीम आँच जरूर रहे। अपना क्रूर, हिंसक भाई हिडिम, जवन ओकरा समाज के नायक आ अधिपति रहे अपना आचरन आ व्यवहार का कारन ओकरा कबो पसन ना परल। नरबलि आ नरमांस भक्षण का क्रूर कार्यक्रम में ऊ कब्बो शामिल ना भइल। एकाध बेर एकर बिरोध करत में, ऊ अपना भाई से पिटाइ चुकल रहे। ऊ जानत रहे कि ऊ अगर हिडिम के बहिन ना रहित त एह बिरोध पर कहिये जान से हाथ धो देले रहित। आज भाई का सख्त हिदायत आ धमकी भरल आदेश पर ऊ एह पूरा परिवार पर नजर गड़वले रहे, जवन खइला-पियला का बाद अब आराम करत रहे। फेंड़ का ऊपरी डाढ़ि पर गझिन पतइन का बीच छिपल हिडिमा का भीतर भीषण अन्तर्द्वन्द छिड़ल रहे। भीम नाँव क ऊ मोहक बलशाली पुरुष टेक लगवले जाग के अपना सूतल पलिवार क निगरानी करत रहे। बहुत देर का इन्तजार का बादो काहें ऊ अबले ना सूतल? का ओकरा नीन ना आवत रहे? साइत पलिवार का प्रति अतिशय प्रेम आ सुरक्षा के चिन्ता में ऊ जागत रहे...। हिडिमा सोचलस।

तन्द्रालस भीम के पसेना चुहचुहाइल चिक्कन सुघर सुगठित देंहि आ सुघराई में न जाने कवन खिंचाव रहे कि हिडिमा के ओकरा पर आसक्ति आ मोह बढ़ल जात रहे। ओकर मन इहे करत रहे कि जाके धीरे से लगे बइठ जाव आ ओके भर आँखि निगिचा से निहारे। आजु ले कब्बो केहू खातिर अइसन पागल-अनुराग ओकरा भीतर ना जागल, फेरू का कारन बा कि एह सुघराई पर ऊ मोहित बिया? '... हे दइब ! ई कवन लीला हऽ तोहार... हमार मन काहें अवश आ बेकाबू हो रहल बा ?' ऊ मनहीं मने अपना देवता के सुमिरन कइलस। बाकिर छान-पगहा तोरावत ओकर मन माने तब नऽ।

कहल जाला कि देवता आ राछस अदिमिये के बनल बिगड़ल रूप हऽ। रूप, आकार, भेख आ पहिरावा का जरिये अदिमी के आदमी, देवता आ राछस नियर देखावल जाला बाकि साँच त इहे बा कि अदिमी अपना आचार-व्यवहार सोच आ अच्छा-बुरा कर्म से देवता भा राछस बनेला। अदिमी अपना कुल जाति पलिवार समाज का संरक्षन में संस्कार, सोच-बिचार आ जीवन-संस्कृति पावेला। ज्ञान के अँजोर में, अच्छा-बुरा चीन्हे जाने का साथ सुभाव के गुन-धर्म में ओकर चरित्र बिकसित होला। अज्ञान के अधिकता आ ओकर अतिशय सक्रियता अदिमी के राछस बना देला। बनइला आ हिंसक जन्तुअन का बीच रहे वाला जंगली लोगन के अज्ञान आ हिंसक प्रवृत्ति का साथे सभ्य कहाये वाला कथित समझदार समाज ओके हमेसा अपना नजरिया से असभ्य आ असंस्कृत मानि के ओसे आपन दूरी बनवले रहि गइल। हिडिमा एही जंगली आ असभ्य जाति के रहे- एगो अइसन नारी प्रतिनिधि, जेकरा भीतर सभ्य आ सुशिक्षित समाज का नारिये लेखा रूप, नैन-नक्श, शरीर के सुघराई, यौवन, प्रेम, दया आ करुना से भरल हिरदया रहे। लाज आ सँकोचो रहे तबे न ऊ अबले अपना के रोकि के रखले रहे।

एक छिन खातिर भीम के झपकी आइल फेरू कवनो खुरखुराहट से आँखि खुल गइल। नीन भगावे खातिर ऊ खड़ा होके, ओही जगह टहले लगलन। खरखराहट का दिशा में कान रोपि के आपे क कोसिसो कइलन त कवनो औरत क मद्धिम सुसुकी सुनाइल। ऊ तनिकी भर आगा बढ़ि के देखलन, कुछु ना सूझल त जरत आग में से एगो जरत मोट लकड़ी खिंचलन आ ओकरा लपट का अँजोरा देखे के उतजोग करे लगलन। कुछु अउर आगा एगो फेंड़ का जरी बइठल एगो मेहरारू अपना दूनो ठेहुना पर मूड़ी नववले सुसुकत लउकल। भीम लुकाठी के अँजोर आगा करत पुछलन, 'एह सुनसान रात खा, निर्जन बन में, अकेल तूँ के हऊ आ काहें सुसुकत बाड़ू?'

- 'हम हिडिमा हईं!' ऊ मूड़ी उठवलस। काँच आम का फाँक अस बड़ी-बड़ी आँखि लोर से डबडबाइल। बाकि चमक भरल गोहुवां रंग, सुन्दर सुगढ़ चेहरा आ गुदगर देंहि। सबसे खास बात ई कि ओकरा दीठि में एगो मासूमियत आ खिंचाव रहे। भीम का ओकरा से सहानुभूति भइल बाकि छिन भर खातिर भीम का भीतर सवाल उठल .... कहीं ई कवनो मायावी परपंच ना नु हऽ? या कहीं ई हमहने लेखा कवनो यात्री परिवार क बिछुड़ल ना नु हऽ? ई खुद अकेल एह राती खा, इहाँ निर्जन जगह कहाँ से आ कइसे आ गइल?
- 'हम हिडिमा हईं! हिडिमा उनकर अचकचाइल देखि सहज भाव से बोलल, 'हम एह बन के अधिपति हिडिम के बहिन हईं। रोवत ऐसे बानी कि हमार क्रूर भाई तोहन लोग के फँसा के ले आवे खातिर हमरा के भेजले बा, बाकिर हम तोहन लोग के दिव्य रूप, आपुसी लगाव आ प्रेम देखि के प्रेमवश मोह में परि गइलीं। तहरा के देखि के हमरा भीतर से अनुराग के पहिल अँखुवा फूटल बा, हम तोहसे सचहूँ प्रेम करे लागल बानी। हम नइखीं चाहत कि, हमरा हिंसक मांसभक्षी क्रूर भाई का हाथे तोहन लोग के कवनो हानि होखे। तोहन लोग के बँचावे के उपाइ सूझत नइखे... हिया में उफनत प्रेम आ हमरा निर्दयी भाई के प्रानघाती हमला का डरे अपना असहाय

के स्थिति में पाइ के रोवाई बर गइल हा। तूँ तुरंते अपना परिवार सहित इहाँ से भागि चलऽ हम तोहन लोग के बचाइब।" हिडिमा झट से उठ खड़ा भइल।

- 'अच्छा, त तूँ ओह मायावी राछस के बहिन हमन के फँसावे भरमावे खातिर आइल रहलू?' खीसि में भरल भीम का हाथे जरत लुवाठी झटके से नीचे आ गइल। एगो असहाय औरत का प्रति थोरिके देर पहिले मन में उपजल सहानुभूति, दया आ अनुराग पर जइसे ऊ अपने पर खिसियात झुँझला उठलन।
- 'ना-ना, अइसन नइखे... बाकिर तहार ई सोचलो सही बा। हम हिडिम जइसन निरदई, आ क्रूर राच्छस के सहोदर बहिन जरूर हई, बाकि हाथ क पाँचो अँगुरी एक्के लेखा ना होले। हमरा बन क्षेत्र में सब लोग एक्के अस नइखे। इहाँ हिडिम्ब के अत्याचारी सुभाव आ चाल-चलन वाला बहुत कम... कुच्छे लोग बा, साइत ओकरा डरे। खुद हमहीं ओकरा डर से तोहन लोग पर नजर रखले रहनी हाँ बाकि साँच मानऽ तहरा आ तोहरा सुघर परिवार खातिर हमरा मन में सुच्चा प्रेम का अलावा जदि कुछ बा त ईहे, कि तोहन लोग के बँचावे खातिर हम, तोहन लोग के लेके कहवाँ भाग जाईं?' हिडिमा का एह कथन में कवनो बनावटी स्वांग आ छल ना रहे; ई भीम समझत रहलन, बाकि राच्छस का डरे ऊ चैन से सूतल अपना भाइयन के नीन में बाधा ना डालल चाहत रहलन
- 'आवे दऽ ओह असुर के! ओकरा डरे हम अपना माई अउर भाइयन के ई सुखद नीन चउपट ना करब।' ऊ निश्चिन्त भाव से कहलन

हिडिमा का बेकल मुख पर एक छिन खातिर घबड़ाहट, भय आ आशंका के करिया बादर घुमड़ि आइल... 'तूँ नइखऽ समझत कि ऊ केतना खूँखार आ निर्दई हऽ... बस पहुँचहीं वाला बा ऊ! तहरा साथ-साथ हमरो के मुवा घाली! जेकरा मुँहें एक बेर खून लागि जाला, अतना जल्दी ना छूटे!'

- 'ठहर जो! अरे निर्लज्ज, तूँ अपना सग भाई आ राजा से विश्वासघात त कइबे कइले, एह साधारन मनुष्य से प्रेम क के अपना कुल आ कबीलो से द्रोह कइले। अब हम सबसे पहिले तोरे बध करब।' खीसि में आँखि से लुत्ती फेंकत, करिया कलूठ, डेरवावन रूप वाला हिडिम्ब अचके प्रगट हो गइल। विशाल काया वाला ओकरा बदरंग देंह से दुर्गन्ध आवत रहे। खून नियर लाल-अंगार आँखिन से खीसि के लुत्ती निकलत रहे। ओकरा गरदन में दू-तीन गो खोपड़ी के गूँथल माला रहे।

एक छिन खातिर भीम हिडिमा का ओर बढ़त ओह दीर्घकाय डरावना राच्छस के तकलन, फेर बिना बिचलित भइल, क्रोध में ओके ललकरलन, 'अरे कायर! औरत पर का मर्दानगी देखवले बाड़े? तोरा अपना बल आ बीरता के एतना घमंड बा त हमरे से लड़ तूँ!' फेर ऊ लमहर साँस खींचि के दूनो भुजा फइलवलन आ आपन दहिना पैर जोर से भूंइं पर पटकलन त उहाँ के जमीन दलकि गइल।

- 'अच्छा तऽ तेंही मरु पहिले, हम पहिले तोर खून पीयब, फेर तोर बोटी-बोटी काट के खाइब!' हिडिम बेग से भीम पर झपटल
- 'ना भाई हिडिम ना! इनके हम आपन पति मान चुकल बानी! इनके मारि के तूँ हमनी का बन-परंपरा के लांछित मत करऽ।'

हिडिमा कातर भाव से घिघियाइल त हिडिम का जरत क्रोध से उठत लपटन में जइसे घीव के आहुति परि गइल। ऊ जोर से हुंकार भरलस आ गोहुँवन साँप लेखा फुफकारत भीम पर छलांग लगा दिहलस। भीम अपना दूनो पंजा पर ओकरा बेग के ओइसहीं रोकि लिहलन, जइसे अपना दर प जमल चट्टान ऊपर से भहराये वाला दुसरा चट्टान के रोकि लेले। हाथापाई करत ऊ हिडिम्ब के दूनों कलाई जोर से पकड़ले पाछा पड़े धसोरते रहलन कि ऊ उनका के झटकारत अपना दहिना पंजा से भीम पर भयानक प्रहार कऽ दिहलस। उनकर कान्हि, ओकरा बघनख अस बढ़ल नोंह से घवाहिल हो गइल।

धीरे धीरे इ द्वन्द भयानक जुद्ध में बदलि गइल। मुक्का आ केहुनी के हुंकार भरल प्रहार दूनो ओर से होखे लागल। एक ओर एक दुसरा के खून के पियासल दूनों के पसेनियाइल लहुआइल देंह के टकराव आ दुसरा ओर बन सुन्दरी हिडिमा के भयकातर चेहरा। हुंकार आ फुफकार का आवाज से भीम के सूतल भाई जाग चुकल रहलन स। सबकर नजर सबसे पहिले डेराइल सहमल ओह नवयुवती पर परल। केहु का समझ में ना आइल कि इहाँ ई सुन्दर युवती कहाँ से आ गइल आ ऊ भयानक राच्छस....! भीम के अनुज झपटल चललन सऽ त माता रोकली.... 'दू आदमी का मलजुद्ध में, तिसरा के घुसल उचित नइखे।' अपना हर भयानक वार से भीम के बाँचल देखि के हिडिम्ब के झुँझलाहट आ उग्रता चरम पर पहुँच चुकल रहे। हिडिम्ब अब अपना मायावी रूप में देंहि दोबरी कइ के फेंड़ उखारि-उखारि भीम पर फेंके लागल रहे। भीम के उछलत कूदत, परेसान देखि हिडिमा आँख मूनि के कवनो मंतर बुदबुदाइल त हिडिम्ब अपना असल रूप में आ गइल।

बहिन के शत्रु के पक्ष लिहल देखि ओकर क्रोध पागलपन में बदल गइल, ऊ उछाल मरलस त भीम आखिरी क्षन में दहिना ओर उछलि गइलन आ ओकरा मुँह का भरे भहराते, ओकरा पीठ पर अपना ठेहुना से जोरदार प्रहार कइलन। हिडिम्ब अइसे डँकरल जइसे कइ गो घोड़ा एक्के संग हिनहिना उठल होखन स।

पानी जब साफ आ थिराइल रहेला, तब्बे ओमे कवनो परछाहीं भा छबि लउकेले। हिंडोरत, हिलत पानी कबो चेहरा देखावे वाला ऐना ना बने। भीतर का अज्ञान आ क्रोध का पागलपन में हिडिम्ब अपना बिकृत रूप के ना देखि पवलस। बिबेक खो दिहला का कारन, सामने क साँच ओकरा ना बुझाइल, नतीजा में ओकर पंजा फेरू भीम का पंजा में गँसि गइल। कबो भीम ओकरा के ठेलत पाछा ले जासु कबो भीम के ठेलत ऊ पाछा ढकेले। नीचे के बन, झाड़ी घास रउँदा गइल रहे आ जमीन जोतला खेत लेखा खोनाइ गइल रहे। हिडिमा अब आपन भय तेयागि के अपने भाई पर आक्रमण का मुद्रा में आ गइल। धीरज से देखत माता, युवती का मनोभाव के समझि के ओकरा लगे चलि गइली, फेर ओकरा कान्ह पर हाथ रखत धीरज दिहली, 'धीरज धरऽ बेटी, हमार बेटा एकरा खातिर सक्षम बा।'

नकार आ अहंकार के मानस हरमेसा साँच के झुठियावल चाहेला। सामने परतच्छ जथारथ के साँच ओकरा अहंकार के चुनौती देत, भीतर का क्रोध के बढ़ावेला। अइसन में ओकरा भीतर उठत कुबिचार आ जिद ओकरा के बिनास आ बिध्वंसे का ओर ले जाला। हिडिम का भीतर चिढ़, जिद आ क्रोध के भाव ओके आन्हर बना चुकल रहे। ऊ भीम के आत्मबल, साहस आ शारीरिक बल के परखला का बावजूद सकारे के तइयार ना भइल। नकार ओकरा खीसि आ जोम के अउर बढ़ियाइ दिहलस... एह हालत में ओकर बिनास त निश्चिते रहे।

ए बेरी जब ऊ खीस में भीम का तरफ बेग से झपटल त चौकन्ना भीम, तेजी से जगह बदलत ओके लँगड़ी मार दिहलन, फेरू ओकरा मुँह का भरे गिरते बाघ लेखा ओकरा पीठ पर चढ़ल भीम ओके दोहरउवा सँभरे क मोका ना दिहलन। ओकरा रीढ़ पर, उनकर ठेहुना आ गरदन पर केहुनाठ के लगातार चोट, हिडिम्ब के पस्त क दिहलस। ओकर दूनों बाँहि उल्टा दिसा में घुमाइ के ममोरत खा भीम के दहिना लात ओइसहीं ओकरा रीढ़ पर जमल रहे। हिडिम का मुँह से पीड़ा के भयानक चीत्कार, आसपास का फेंड़ आ झाड़ियन में छुपल तीर-भालाधारी बन सैनिकन के जगहे पर जड़ क देले रहे। भीम के रौद्र रूप में भरल हुंकार उनहन का भीतर अचरज भरल भय बन के घुसि गइल रहे। अपना राजकुमारी हिडिमा के चुपचाप खड़ा देखि के ऊ असमंजस में रहलन स।

भीम अलस्त मरणासन्न हिडिम्ब के उलाटि के चित करत गर्जना कइलन, 'तोरा नियर आततायी, नरभक्षी राच्छस के जियल ब्यर्थ बा। तोरा रहले, ना रहले एह बन का धरती के कुछु फरक ना पड़ी, एह से तोर मुवले ठीक बा।' कहत भीम एक पोरसा ऊपर उछड़ि के आपन ठेहुना ओकरा छाती पर दे मरलन, ऊ बध कइल जात जानवर लेखा डँकरत खून बोकरि दिहलस। ओकरा निर्जीव शरीर से अलगा हटत भीम आपन दूनों हाथ ऊपर उठाइ के अतना जोर से हुंकार भरलन कि बन क पतई ले काँप उठल।

आँखि से लगातार आँसु गिरावत हिडिमा का कान्ह पर ढाढस के हाथ फेरत माता पुछली, 'तूँ के हऊ बेटी आ इहां अचानक कइसे आ गइलू? ई राच्छस कइसे आ गइल?'

- 'हे माई ई एह बन के स्वामी हिडिम्ब हऽ आ हम एही क बहिन हिडिमा। हम अपना भाई आ बन के स्वामी का आज्ञा का खिलाफ जाके रउरा एह बलशाली पुत्र से प्रेम कइले बानी। पहिले नजर में, इनका पर मोहित होके इनके पति मान चुकल बानी।' हिडिमा निश्छल भाव से कहलस त माता का ओकरा खुलल प्रेम के आ अब तक लउकल घटना-प्रसंग से सहजे विश्वास हो गइल कि ऊ झूठ नइखे बोलत। ऊ चुपचाप शान्त होत भीम के देखली
- 'माई, आदिवासी आ बन के भीलनी एकबेर जब केहु के आपन हिरदया दे देले त ओकरे प' न्यौछावर हो जाले। हमनी का परंपरा में, जे राजा आ सरदार के हरावेला भा मार देला, ऊहे हमहन के राजा बनेला' ... कहत-कहत हिडिमा शान्त भाव से सोचत माता के चरन पकड़ लिहलस।

माता बिचलित रहली। उनकर लड़िको सुनि के बिचलित हो गइलन सऽ। आपन असलियत प्रगट होखे का डरे केहू केहु के नाँव लेके ना बोलावत रहे। इहाँ एह अजनबी अनार्य जाति का बनवासियन में अचानक फँस गइला से ओह लोगन में एगो दुसरे दुबिधा खड़ा हो गइल रहे।

- 'बेटी हमनी का नीति-नियम का मोताबिक जेठ बेटा के बियाह पहिले होला। तूँ जेके अपनावल चाहत बाडू, ऊ मझिला हउवन।' माता दुबिधा के कोर छुवत धीरे से कहली

- 'माता, आप काहें नइखीं समझत? इहाँ हमरा कबीला के लोग खड़ा सुन रहल होई, हम सँचहूँ आपका पुत्र पर आपन मन हार चुकल बानी, आ इनिका बिन हमरा जीवन के कवनो अरथ नइखे!'
- 'भला एगो आर्य कुल में तूँ कुलबधू कइसे बन सकेलू? हमार समाज राक्षसी अनार्य कुल में बियाह के मान्यता दिहल त दूर एकर खिल्ली उड़ाई! ऊ समाज तोहरा निश्छल प्रेम के पवित्रता ना देखी। बेटी तूँ खुद अपना राज के राजकुमारी बाड़ू! हम तोहके सुखी आ स्वतंत्र रहे के असीस भर दे सकत बानी!' अतने कहत कहत कुन्ती क करेजा फाटे लागल।

हिडिमा कातर भाव से कुन्ती का ओर देखलस, फेरू फेंड़न का पाछा आ लता-झाड़ियन का आड़ में बिखइल बाण धनुष आ तलवार-भाला लेके तत्पर बनबासी रच्छकन के सुनाइ के जोर से बोलल, 'महाबली के पूरा पलिवार सहित राजसभा में ले चलऽ लोग! उहाँ हमनी का रीति-रेवाज का मुताबिक स्वागत सत्कार कइल जाई!' बात खतम होत कहीं कि एक पल में अपना हरबा हथियार समेत पचासन गो बन रच्छक बाहर आ गइलन स आ पलक झपकावत ओह लोगन के घेरा में लेके राजकुमारी हिडिमा आ महाबली क जैयार करे लगलन सऽ। कुन्ती व्याकुल होके अपना बेटन का ओर देखली।

- 'ए घरी त उहे करे के पड़ी, जवन ई लोग कहत बा। माता तूँ चिन्ता मत करऽ!' युधिष्ठिर शान्त भाव से कहलन। घेरा में लेले आदिवासी रच्छकन में से दूगो अपना नायक का संकेत पर चउकड़ी मारत गझिन बन में गायब हो गइलन सऽ।

कुछ दूर चलला का बाद साफ आ चौरस बन क्षेत्र आ गइल रहे। दूरे से बाँस बल्ली गाड़ि के बनावल ऊँच छरदेवाल वाला एगो साफ सुथरा निवास क्षेत्र लउके लागल। ओकरा मुख्य दुआरि का फाटकन के पल्ला खुलल रहे। दुआरि का दूनों ओर पाँच-पाँच गो रक्षक अपना हथियारन का साथ खड़ा रहलन स। हिडिमा के अपरिचित परिवार सहित आवत देखि के दाढ़ी बढ़वले दू गो बुजुर्गन का साथ एगो साफ सुथरा अधेड़ रहे, जवन कमर में बाघ क चर्म बन्हले रहे। ओकरा हाथ में कवनो हथियार ना रहे, बाकिर उहाँ खड़ा लोग ओकरा आगा बेर बेर आदर भाव देखावत आपन मूड़ी डोलावत रहे। भीम का साथ हिडिमा के निगिचा आवत देखि के ऊ अधेड़ बुजुर्गन का साथे तेज चाल में आगा आइ के अगवानी कइलस, फेरू कद काठी में बलिष्ठ लउके वाला भीम क परिचय पुछलस। 'हम वृकोदर हईं। ई हमार बड़ भाई, हई हमार आदरनीय माता आ हई लोग हमार छोट भाई ह लोग।' भीम जल्दी जल्दी में परिचय दिहलन। पाछा चलत हिडिमा बृकोदर नाँव पर जरूर चिहुँकल, बाकि ई सोचि के कि कवनो शंकावश साइत महाबली भीम आपन नाँव प्रगट कइल नइखन चाहत। ऊ चुपे रहल। बुजुर्ग हिडिमा का कपार पर नेह से हाथ फेरत ओके सान्त्वना देत कहलन, राजकुमार हिडिम अपना क्रूर कर्म आ उदण्ड सोभाव का कारन बनवासियन में पसन ना कइल जात रहलन।

- 'ई हमनी के राज के मंत्री उत्तुंग काका हईं। हमेशा हमके बेटी क लाड-दुलार आ ज्ञान देत आइल बानी।' हिडिमा उनहूँ के परिचे माता कुन्ती के देत, दुसरका दाढ़ी वाला बूढ़ का ओर इशारा कइलस, 'इहाँ का पुरोहित काका, राज-समाज सबके भला-बुरा के ज्ञान करावत रहेनी।'

"महाबली बृकोदर के जय!" साथ चलत कूल्हि रच्छकन का जयघोष का साथ सभ फाटक का भीतर आ गइल। दूर दूर तक जहाँ ले दीठि जात रहे बन के बड़ छोट कूल्हि आदिवासी ठेहुनिया के आदर भाव से माथा झुकाइ के आदर प्रकट करत लउकल। भीम आ उनकर कूल्हि भाई एह समाज के आचार-बिचार आ व्यवहार से अचंभित रहे। बाड़ बनावल छरदेवाल का भीतर बहुत बड़हन क्षेत्र रहे। अरियाँ अरियाँ कुटिया, छोट छोट फलदार आ छायावाला फेड़ पौधा। जहाँ-तहाँ बनइला सूकर, बकरी वगैरह बान्हल लउकल।

एगो विशाल बटवृक्ष का नीचे पत्थर शिला खण्ड का टुकड़न से सजाइ के एगो चबूतरा बनावल रहे। वृक्ष का एकोर ओइसने पत्थर के चापट टुकड़न के सरियाइ के गोलाकार ऊँच देवाल लेखा बनावल रहे जवना का ऊपर से वटवृक्ष क डाढ़ि अपना पतइयन से छाँह कइले रहे ओही के बन क बँसकठ फारल टाटी से आड़ कइल रहे। अइसन बुझात रहे कि ई विशाल वट वृक्ष के अगिला भाग सभा आ बइठक करे का कामे आवत होई। भीम आ उनका परिवार के हिडिमा संकेत करत बटवृक्ष का पछिला भाग का ओर ले गइल, पछिला भाग में दूर तक फइलल ऊँच खाल पहाड़ लउकत रहे। ओही में एक तरफ पहाड़ के तूड़ि के बढ़िया ढंग से तीन चार गो घर आ दलान लेखा बनावल रहे। बुझला ई क्षेत्र ओह आदिवादी समाज के राजा आ अधिपति के रहे। मंत्री उत्तुंग, कुछ रच्छकन के हिदायत देत वापस लौटलन त हिडिमा के संबोधित कइलन, 'बेटी तूँ हमनी का जाति कुल क गौरव आ अभिमान बढ़वलू। महाबली वृकोदर के कवनो कष्ट ना होखे। हमनीं का काल्हु आचार्य जी का आवते इनकर राजतिलक आ तहरा बियाह क जलसा आ उत्सव मनावे के। हम इहाँ के

व्यवस्था तोहरे पर छोड़त बानी, अभी हमके बहुत तइयारी करे के बा।'

हिडिमा बे बतवले बहुत कुछ समझि गइल। आचार्य जी आवे वाला बाड़न। मंत्री उत्तुंग एही बेरा भाई हिडिम्ब के अंतक्रिया कइला धइला आ आचार्य जी से राय-मसवरा कइला का बादे खाली होइहें। आचार्य जी के अइला का आभास मात्र से ऊ पुलकित हो गइल रहे। आजु ओकरा पास जतना समझ, संस्कार आ ज्ञान बा कूल्हि आचार्ये जी के कृपा का बदौलत बा। ऊ छोटे पर से ओके बाप लेखा संरक्षन आ सिच्छा देले रहलन। अभी ऊ सोचते रहे कि ओकर प्रिय सखी, निरिमा हँसत लउकल। ऊ दउरि के ओके अपना अँकवारि में भर लिहलस। ओकरा पाछा ओकर भाई निम्बा आ कुन्दकी काकी रहे लोग।

'आखिर सखि तोहके आपन मनजोग प्रिय मिलिये गइलन।' निरिमा धीरे से बुदबुदाइल त हिडिमा का चेहरा प एगो फीका लाज भरल मुस्कान उभरल, 'सखी निरिमा, इहाँ एह लोगन खातिर तोहन लोग के तुरन्त सूते बइठे आ जलपान आदि के इन्तजाम करे के बा।' ऊ सामान्य होत, अकुताइल कहलस।

निरिमा अपना छोट भाई निम्बा के जल्दी जल्दी कुछ समझवलस आ कुन्ती के निहुरि के प्रणाम करत बोलल, 'माई हमनी का बनवासी अनार्य हईं जा, कवनो भूल चूक के माफी माँगत सेवा क आज्ञा चाहत बानी।'

कुन्ती जल आ शयन क व्यवस्था करे के कहली। फिर जेने हिडिमा गइल रहे, ओनिये चलि दिहली। कुटी का बहरा फेड़ का पीछे एगो शिला के टेक लेके हिडिमा अकास का ओरि तिकवत रहे। कुन्ती धीरे से ओकरा पाछा जाके खड़ा हो गइली। फिर ओके सुसुकत देखि के ओकरा कान्ह पर हाथ धरत कहली, 'बेटी! जवन बीतल, ओकर सोक जिन करऽ! तोहार भाई क्रूर कर्म वाला निरदई राजा रहल हा... ऊ तोहरा कुल आ समाजो खातिर दुखदाई रहल। कुछऊ रहे, तोहार भाइये रहे, ओकरा मृत्यु पर तहरा दुख के हम समझत बानी।'

- 'ए खातिर दुखी नइखीं माई... असल में बचपन से हमार महतारी-बाप ना रहल। काकी पालन-पोसन कइली। आचार्य चाण्डक जी बाप नियर राह देखवलन। महतारी का प्रेम के असली अनुभव आ परतीति त आप सबके कारन भइल हा... बाकि अभागी हिडिमा के ईहो सुख स्थाई नइखे।' हिडिमा के आँखि फेरू छलछला उठल।

निसबद राति में, ओह बेरा कुन्ती का अलावा ओइजा अउर केहू रहे त सामने पहाड़ के ऊँच खाल दूर ले फइलल चट्टान आ ऊपर अकास में अनगिनत टिमटिमात जोन्ही। माई बाप बिहीन टूअर लइकी के बिकल आर्त भाव पर कुन्ती के मन भरि आइल। सोचे लगली कि आखिर ए बेचारी क कवन दोस बा? आजु ई अपने कुल-कबीला में अकेल बिया। एकर केहू आपन नइखे। ऊ धीरे धीरे ओकरा माथ पर हाथ फेरे लगली। थोड़ी देर ले रोवला का बाद ऊ चुपाइल... "माई आप सब हइवें काहें नइखीं रहत? हम अपना जीवन के हर तरह से सुधार के रउवे अनुसार रहब। आप सब के कवनो दुख तकलीफ ना होखे देब। हम हमेशा रउरा कुल के अनुगामी रहब।" कुन्ती का ओठ पर एगो फीका मुसकान उभरल, "अरे पगली, ई कइसे संभव बा? एगो आर्य राजकुल क लोग, जवन खुदे बीपत क मारल बा, जे अभी खुदे जीवन-समर आ समय दूनों से लड़ रहल बा, जेकरा जीवन-यात्रा के अभी कवनो ठेकान नइखे, इहाँ कइसे रुकि सकेला?" ऊ उदास होके कहली।

- 'माई हम जब रउरा बेटा पर आपन मन हार गइलीं तबे अपना देह आत्मा कूल्हि के समर्पन क दिहलीं। हमार राज, हमार बल, सामरथ बुद्धि आ विवेक अब रउरे परिवार खातिर समर्पित बा। रउरा हुकुम कइ के देखीं, हम रउरा खातिर आपन प्रानो न्यौछावर क देबि!' हिडिमा के निष्कपट सहज भाव खुलि के बाहर आ गइल।

अनुभवी कुन्ती ओकरा माथ पर ओइसहीं हाथ फेरत नेह प्रगट कइली बाकि उनका ओह बेरा ई ना बुझाव कि हिडिमा के का कहि के तोख देसु। मुँह से बस अतने निकलल, 'ना बेटी ई संभव नइखे, ई ना हो सके। ना ना ई कइसे हो सकेला?' बुझाइल, जइसे ऊ खुद अपने से सवाल करत होखसु। उनकर आँखि दूर कहीं शून्य में जम गइल रहे। आखिर ऊहो त एगो औरत, एगो महतारिये रहली। हिडिमा के हृदय के हाल-बेहाल आ पीर के ऊ समझत रहली, बाकिर धर्म संकट में उजबुजात रहली। आर्यकुल का राजपुत्र क बियाह राक्षस कुल में? कुल का मरजादा के बनल-बनावल देवाल तूरि देबे के हिम्मत उनका ना रहे। बीच के राहो ना सूझत रहे। जेठ बेटा जुधिष्ठिर अभी कुँवारे रहलन। भीम के बियाह कइ के ऊ इहाँ उनके छोड़ियो ना सकत रहली आ हिडिमा के सँग-सँग लेके चलियो ना सकत रहली। 'ना बेटी ना, भीम से तोहार बियाह ना हो सके। ऊ अपना भाइयन के संग साथ ना छोड़िहें, ऊ जवना राजवंश के हउवन, ऊ अंत ले एह बियाह के अनुमति आ मान्यता ना दी, उल्टे जगहँसाई कइके जात बिरादरी आ बिरासत कूल्हि से हमन के बहरिया दी। अइसँहूँ हमहन का नियति क मारल एह दुरावस्था में

बानी जा।' कुन्ती मन के आँकुस देत करेजा पोढ़ क लिहली। एकरा बादो उनका भीतर भयानक अर्न्तजुद्ध छिड़ल रहे।

- 'त का हम मान लीं कि एह अभागिन बेटी के प्रति राउर न्याय धर्म इहे बा? हमरा प्रेम के अपराध क एतना कठोर दंड? हमरा सँग सँग हमरा कुल कबीला आ समाज के एतना निर्दय सजाय? ना माई तूँ धर्मी आ न्यायी होइके अइसन कइसे कर सकेलू? एह आदिवासी राज्य के स्वामी आ राजा हमन का परंपरानुसार अब राउर बेटा भीमे बन सकेलन। औरत इहाँ तक कि हमहूँ ना बन सकीला। फेर हमरा कबीला के राजाबिहीन छोड़ के रउरा हमनी का समाज के परम्परा के बिधंस कइसे कर सकीले?' हिडिमा तर्क देत अपना अधिकार खातिर गोहार कइलस...
- 'बेटी... सुनऽ...'
- 'ना ना हम ना सुनब। एकोर त रउवा बेटी कहि के हमरा के अपनावत बानी आ बेटी के मरमबेधत ओके बेअपराधे के सजाय सुनावत बानी।' हिडिमा उनकर बात काटत फेरू भावावेश में आ गइल।
- 'सुनऽ त सही हिडिमा, हम तहरा प्रेम के नइखीं नकारत। एकर अधिकार पृथ्वी का हर जीव-जन्तु के बा... तोहरो के बा; बाकि हमरा समझ से प्रेम समर्पन आ बलिदान माँगेला। तोहरो एकरा खातिर बलिदान देबे के पड़ी। हमार शर्त अतने बा कि...'
- 'हँ हँ बोलीं, हिडिमा हर शर्त मानी।' प्रेम में पागल हिडिमा के नया उमेद आ खुशी से आँख फेरू छलछला उठल।
- 'हमनी का भीम से तोहरा बियाह के एह शर्त पर अनुमति दे सकीले कि तहरा पूत जनमला तक, भा एक बरिस तक ले भीम इहाँ रहिहें, तूँ कबो आगा चलि के राजकुल का बियहुती मेहरारू लेखा, राजरानी के अधिकार ना मँगबू। हालांकि हम व्यक्तिगत रुप से एके तहरा साथ अन्याये कहब आ एही मजबूरी का कारन हम तहरा बियाह के अबले नकारत रहलीं बाकिर इहे एगो राह बा... बोलऽ मनबू?' कुन्ती अपना भाव आवेग के भितरे जाँतत कहली।

हिडिमा कुन्ती क दूनों गोड़ छान लिहलस। प्रेम का आगि में कूदल, अन्तर्ज्वाला में जरत हिडिमा के जइसे थेघ मिलल। ओके अपना प्रेम आ प्रेमी का अलावा कुछ दूसर ना लउकल, खुसी का लोर से बढ़ियाइल ओकर नजर उठल त ओकरा मुँह से अतने बोल फूटल 'हमके राउर कूल्हि अच्छर-अच्छर मंजूर बा।'

कुन्तियो का आँखि से लोर झरे सुरू हो गइल रहे। ऊ निहुरि के हिडिमा के दूनो कान्ह धइली आ उठा के अपना छाती से लगा लिहली। हिडिमा अबोध लइकी लेखा उनके अपना अँकवारि में बान्ह के रोवे लागल।

दोसरा दिने कबीला के सभा लागल। वृकोदर नाव से महाबली भीम आपन परिचय जब कबीला का मंत्री आ पुरोहित के दिहलन त कुछ छिन खातिर हिडिमा फेरु अचंभित भइल। ऊँच शिला पर भीम ओही ढंग से बिराजमान भइलन, जइसे पहिले सरदार हिडिम बिराजमान होखे। फरक अतने रहे कि एह सभा में एगो नया रौनक आ उछाह रहे। राज के मंत्री आ एगो बूढ़ आदिवासी पुरोहित भीम का शरीर पर जल छिरिक के सफेद कुन्द फूलन क माला पहिरवलस फेरू हिडिमा के माथ पर जल फूल छिरिक के माला पहिरावल गइल। अधिपति भीम गर्जना करत घोषना कइलन, "राजपुरोहित, आ मंत्री का सलाह से लिहल गइल निर्णय का अनुसार आज से सब लोग नहाइ-धोइ के साफ सुथरा रही। राजा आ जंगल के रहवइया खातिर जंगल के फल-फूल आ जीव जन्तु काफी बा। जंगली शिकार का अलावे केहू नरमांस ना खाई, जे अइसन करी ओके मृत्युदंड दियाई।" चारू ओर से हाथ ऊपर उठाइ के जयघोष करत लोग महाराज वृकोदर के आगा आपन माथ नीचे नवावल।

एही बीच हिडिमा अपना दूगो साँवर सखियन संग, बीच में आइ के खड़ा भइल। हाले का स्नान से दमकत नव परिधान में ओकर रूपवान चेहरा पर एगो नये गुलाबी आभा फइलल रहे। सुगंधित जंगली फूलन से गूँथल केश बेनी ओकरा सुघराई के दिव्यता प्रदान करते रहे, "महाबली बृकोदर के जय! इहाँ बइठल माता कुन्ती के सादर परनाम! उचित-अनुचित के बिचार कइ के हमरा के न्याय मिले महराज !!"

- 'बोलऽ बेटी हिडिमा, तोहार कवन फरियाद बा? इहाँ धर्म के रखवार हमार जेठ बेटा बाड़न, तहरा कुल के पुरोहित आ मंत्री के बनावल तोहार अधिपति बाड़न, का तोहरा अबो न्याय पर विश्वास नइखे?' माता कुन्ती बिच्चे में बोल परली।
- 'बिश्वासे ना भरोसो बा कि इहाँ एगो नारी के आत्मसम्मान के रच्छा जरूर होई। हम महाबली से प्रेम कइले बानी आ हमार अनुराग इनका पर प्रबल बा। प्रेम पाप ना हऽ! ई जात पाँत कुल आ ऊँच नीच ना देखे। हम महाबली

के आपन पति मान चुकल बानी, आजु अगर इहाँ, महाबली से हमार बियाह सकारल नइखे जात त

हमार जियल व्यर्थ बा। अस्वीकार का अवस्था में हमके आपन प्रान तेयागे के अनुमति मिले!' हिडिमा एकदम शान्त भाव से आपन फरियाद कहलस।

भीम अपना जगह पर विचलित भाव से खड़ा हो गइलन। सब अवाक् रहे। सभा में एकाएक सन्नाटा पसरि गइल। भीम का भाइयन का चेहरा पर हवाई उड़त रहे। कुन्ती जानत रहली कि आदिवासी समाज में हर युवती के आपन प्रेमी आ पति चुने के स्वतंत्रता आ स्वच्छन्दता होला। एह समाज का बीच तनिको देरी उचित ना होई। ऊ अपना जगह पर खड़ा होके जोर से बोललीं, 'हिडिमा! हम तोहरा प्रेम का पवित्रता के पूरा सम्मान करत, महाबली बृकोदर से तोहरा बियाह के स्वीकृति देत बानी!'

हिडिमा धधाइ के कुन्ती का लगे गइल आ उनकर गोड़ छान लिहलस। "सौभाग्यवती होखऽ!!" छोहाइल कुन्ती असीस देत हिडिमा के कान्ह धइ के उठवली आ अपना छाती से लगा लिहली। हिडिमा उहाँ से सोझे जुधिष्ठिर का लगे पहुँचल। निहुरि के गोड़ छूवे लागल त ऊ पाछा घसकत आपन दूनों हाथ ऊपर उठाइ के मंगलकामना करत असीस दिहलन, "कल्यान होखे! तोहन लोग क दाम्पत्य जीवन सुफल होखे!!" हिडिमा गद्गद रहे। ऊ मुस्कियात आ लजात धीरे-धीरे भीम के पाँव छूवे चलल त भीम के चिहुँकि के पीछे घुसुकत देखि उनकर तीनू छोट भाई हँसि दिहलन सऽ। सँकोच से गुलाबी भइल उनकर चेहरा देखे लायक रहे। ऊ बनावटी क्रोध में आँख तरेरत अपना भाइयन का ओर तकलन आ बड़का भाई लेखा, आपन दूनों हाथ उठा दिहलन, जइसे ऊहो कवनो आसीस देत होखसु।

फेरु हिडिमा आ भीम राजपुरोहित आ मंत्री के प्रणाम कइल लोग। एही बिचे हिडिमा के आचार्य चाण्डक सभा में हाजिर भइलन। हिडिमा खुशी का आवेग में दउरत श्वेत केश वाला बृद्ध आचार्य जी के गोड़ छुवलस। ऊ नेह से ओकरा माथ पर हाथ फेरत कहलन,"हमके सुरूवे से एकर विश्वास रहल हिडिमा कि तूँ अच्छा-आ विशेष हऊ! तोहार चुनाव उत्तम आ यशस्वी बा! हम आज बहुत खुश बानीं!" फेरू प्रणाम करत भीम का ओर प्रेम से देखत कहलन, "आर्यपुत्र से हम बहुत प्रसन्न बानी। उमेद बा आपका निर्देशन में अनार्य कहाये वाला एह समाज के बहुत हित होई।"

भीम ओह बृद्ध आचार्य का सुसभ्य बोली आ विनम्रता से बहुत प्रभावित भइलन। आर्यपुत्र का संबोधन प' ऊ कुछ सशंकित जरूर भइल रहलन, बाकिर साथ-साथ चलत आचार्य धीरे-धीरे हस्तिनापुर के सन्दर्भ के उद्घाटित करत कहलन, "हम ईहो जानत बानी कि आपके आर्य कहाये वाला समाजो में सब कुछ अच्छा नइखे... जइसे एह समाज में हिडिम नियर असामाजिक आ अमानवी सोच-ब्यवहार करे वाला लोग बा। उहवों साँच आ धर्म के दबावे आ खतम करे खातिर कुछ लोग राक्षसी सीमा पार क जाता... हमार कहे क मतलब बस अतने बा कि आप दूनों समाज के अच्छाई-बुराई से परिचित बानीं त निश्चित रूप से एह अनार्य कहाये वाला पहाड़ी बनवासी राज्य के कल्यान होई।" भीम ओह बूढ़ आचार्य का जानकारी पर मने मन अचंभित रहलन।

- 'आचार्य जी समारोह खातिर पूरूब ओर खुला मंडप तइयार बा। सब लोग आप सब के अधीरता से, इन्तजार करत बा! माता जी आ महाबली के भाई लोग आप लोगन के जोह रहल बा।' खबर पहुँचावे वाला रच्छक झुक के आदर सहित बोलल त आचार्यजी हिडिमा आ भीम का साथे पूरूब तरफ हाली-हाली बढ़े लगलन।

सैकड़न आदिवासी नर नारियन के ओह उछाह भरल जलसा में पुरोहित, मंत्री, रच्छकन का सँगे मुख द्वार पर आगा खड़ा अपना माता आ भाइयन के देखि के भीम का बहुत खुशी भइल। एकदम बीचो बीच खाली चौरस जगह पर, चारो कोना में खम्हा आ केरा के पतई बान्हि के खुला मण्डप बनावल गइल रहे ओह खम्हा में किसिम-किसिम क फूल पतइयन के माला नियर बान्हल रहे। एक तरफ खाली जगह छोड़ल रहे, ओकरा चारू ओर नवहा रच्छक मुस्तैदी से खड़ा रहलन स, ओही खाली लउकत जमीन का पछिला भाग में एगो बड़हन एकपलिया पलानी बनल रहे। ओकरा दुआरी पर कुछ युवतियन का साथ निरिमा खड़ा रहे। हिडिमा के देखते कूल्हि युवती निरिमा का सँगे दउरि के आ गइली स आ हिडिमा के लिया के चलि गइली सन। फेरू युवकन का सँगे निरिमा के छोट भाई निम्बा भीम के आदरपूर्वक लेके, दुसरा ओरि चल गइल। समारोह के दूनों ओर खड़ा नगरवासी हर्ष आ उछाह में जयघोष करे लगलन सऽ।

तनिके देरि बाद हिडिमा के नया वस्त्र में सजा के युवती बाहर आ गइली स। कण्ठ में मूँगा-मोती क दमकत माला आ हँसुली नियर बनावल फूलन के कण्ठहार। केश में गूँथल श्वेत सुगंधित फूलन क बान्हन। दूनों बाँह में गुलाबी फूलन क मोट बाजूबन्द। कमर में कउड़ी, आ हाथी दाँत क छोटी छोटी टुकड़न के गूँथि के नीला आ लाल रत्न से बनावल करधनी। कमर का निचला हिस्सा में घुटना तक, जतन से लपेटल मृगछाल... आ एह सजावट में

सलोनी, लाजवंती बहुअरि बनदेवी बनल हिडिमा। युवकन का सँगे आवत भीमो के बनवासी भेख में सजावल रहे। उनका माथ पर फूलन क मुकुट रहे, जवना में दूनों कान का ओर लटकत श्वेत फूलन क झालर रहे। कमर का निचला भाग में मृगचर्म वाला वस्त्र रतन जड़ल पेटी से कस के बान्हल रहे। उनका दूनों बाँहि आ चौड़ा छाती पर उज्जर रंग आ गेरूआ रंग क अजब-गजब चित्रकारी रहे। गर में मूँगा, मोती आ कउड़ियन क मोट माला आ दूनों भुजदंड में पीयर लाल फूलन क माला कसि के लपेटल गइल रहे।

बर आ बहू का रूप में जब प्रेमी युगल मण्डल में ले आवल गइल त बनवासियन क हर्ष भरल जयघोष से बन गँउँजि गइल। राजपुरोहित हिडिमा आ भीम पर जल आ फूल छिरिक के कुछ मंत्र बुदबुदइलन फेरू युवक युवतियन का ओरि धूमि के संकेत कइलन त बेरा, कमलिनी आ बन के फूलन के बनावल दू गो बड़ बड़ माला आ गइल। हिडिमा के सजल धजल सुघड़ सलोना रूप देखि के भीम का दीठि में अनुरागल भाव उमड़ि आइल, ओइसहीं हिडिमा का भीतर निगिचा खड़ा सजल धजल प्रियतम के देखि के प्रेमावेग बढ़ि गइल। आचार्य जी आ राजपुरोहित के मंगल कामना आ स्वस्तिवाचन सुनि के पाण्डव परिवार चमत्कृत रहे। कौतूहल में देखत भीमो के अइसन शुद्ध भाषा में गतिमान स्वस्तिवाचन सुनि के अचम्भा भइल। सबका आभास भइल कि ऊ लोग जेके जंगली, अनार्य, असभ्य आ असंस्कृत बूझत रहल, ऊ मिथ्या रहल।

जैमाल भइला का बाद हिडिमा आ भीम के एगो बड़ शंख में पहिलहीं से राखल मधुर पेय पियावल गइल। एकरा बाद एकबेर फेरू, बड़-बुजुर्गन क आसीस आ मंगल कामना का साथे बनवासियन के सामूहिक फूल-बरखा से भीम रोमांचित हो गइलन। ढोल, झाँझ, सिंघी आ नगारा बाजे लागल, त आदिवासी, जंगल में मंगल के सूचना देबे वाला नाच-गाना में मस्त हो गइलन स5। प्रफुल्लित पाण्डव परिवार ओ बेरा, बन में रहे वाला ओह सहज बनवासियन से अइसे मिल गइल, जइसे अलगा अलगा राह पकड़ि के बहे वाली नदियन के धारा एक में मिलि के एकरूप हो जाले।

महाभोज में किसिम किसिम के जंगली कन्द मूल फल का साथ साथ; विचित्र किसिम के पकावल व्यंजन एकोर पत्थल के बड़ बड़ पटिया पर सजावल रहे, त दुसरा ओर शिकार कइल वनचर पशु-पक्षी लाल लेप लगा के लकड़ी का आँच पर भूनि के राखल गइल रहे। विशेष बिधि से पकावल-बनावल मदिरा आ पेय अलगे चलत रहे। कुन्ती के मन में ओह मदमस्त उन्मादी नाच गाना में रमत ना रहे। ऊ जुधिष्ठिर से आपन बिकलता बतावते रहली, तब्बे अउरू भाई उनका लगे आ धमकलन।

ओह लोगन का ओह गुपचुप-बतकही आ हावभाव के समझत मंत्री उत्तुंग तुरंते पहुँचि के निहोरा कइलस, "माता रउरा सब खातिर, उहाँ एकोरा फल-फूल कन्द मूल के ब्यवस्था बा! रउरा सब का रुचि लायक त ना होई, बाकिर एह शुभ समय में, हम बनवासियन के जल्दी-जल्दी जवन समुझ में आइल, इन्तजाम कइले बानी जा! रउरा जलपान कइके कुटिया में विश्राम कर सकीले।" मंत्री के अनुनय भरल विनम्र ब्यवहार से कुन्ती के बहुत राहत मिलल, बाकि अइसे, बिना समग्र परिवार के ऊ भोजन कइसे करिती? असमंजस में ऊ तिरिछा दीठि से एक हाली हिडिमा सँगे खड़ा अपना भोला-भाला भीम के तकली।

वयोवृद्ध उत्तुंग के अनुभवी आँखि बहुत कुछ समझि गइल, "हम महाबली वृकोदर आ देवी हिडिमा के अब्बे बोलाइ के ले आवत बानी, तब तक आप सब उहाँ जलपान वाला वाला जगहा पर चलीं।" ऊ अँगुरी से एकोरा पत्थल पटिया पर सजा के धइल स्थान का ओर इशारा करत आगा बढ़ि गइलन।

कुछुये छिन में हिडिमा भीम का सँगे भोजन स्थल पर आ गइल, "माता छिमा करब! एह सोर-सराबा में हमरा एकर ध्यान ना रहल, चलीं माता, स्थान ग्रहण करीं।" कुन्ती जब आगा बढ़ली त ऊ पाछा पाछा आइल अपना सखी निरमा के कुछ संकेत कइलस। निरिमा दउरल आ तुरंते पलानी में से नरकुल के बीनल दू गो चटाई लियाइ के एक तरफ बिछाइ दिहलस। हिडिमा केरा क बड़े बड़े छव गो पतई बीच में धरत सबके बइठे के निहोरा कइलस। भीम के अनुज हिडिमा के सहायता में फल आ कन्द मूल क टोकरी उठाइ के बीच में रखल लोग आ फेरू प्रेम से मुस्कियात कुन्ती का संकेत पर अगल-बगल बइठि गइल। परिवार के फलाहार करावत, कुन्ती हिडिमो के सँगे बइठाइ के फलाहार करे के कहली त ऊहो लजात सकुचात परिवार का प्रेम-पगल जलपान में शामिल भइल। अपना स्वतंत्र शैली आ तौर-तरीका के जइसे ऊ भितरे जाँत देले होखे, कुन्तियें का अनुसार चुपचाप ऊहे करे लागल, जवन कुन्ती चाहत रहली।

आगे के कथा
कमशः अगिला अंक में
पढ़ी.....

भोजपुरी कविता क बिस्तार

■ डा0 वशिष्ठ अनूप

(अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन, मारीशस का संवाद–गोष्ठी में पढ़ल गइल आलेख)

भोजपुरी कविता क इतिहास बहुत लमहर बा। लिखित रूप में त लगभग एक हज़ार साल लेकिन अलिखित लोक साहित्य के रूप में एकर परम्परा मानवता, भाषा आ संस्कृति के साथे–साथ जुड़ल बा अउर कई हज़ार साल पुरान बा। एकरे आरम्भिक रूप में भक्ति, प्रेम प्रकृति त्यौहार आ संस्कार से सम्बन्धित कविता मिलेले। आगे चालिके ए सबके साथ देश–भक्ति क कविता भी भरपूर मात्रा में देखे के मिलेले। राष्ट्रीय चेतना क कविता लिखे वाले कबियन में मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, बाबू रघुबीर नारायण, चन्द्रशेखर मिश्र, कमला प्रसाद मिश्र, राजकुमार वैद्य, हरेन्द्रदेव नारायण, सर्वदेव तिवारी 'राकेश', आदि क नाम महत्वपूर्ण बा। भोजपुरी कविता में आधुनिक काल क शुरुआत उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से मानल जा सकेले। भिखारी ठाकुर एकर अगुवा रहल। जे तरह से भारतेन्दु हरिश्चन्द से हिन्दी में आधुनिकता क विकास भइल, ओही तरह से भोजपुरी साहित्य में भिखारी ठाकुर के नाटक आ गीतन में तत्कालीन समाज के समस्या क उद्घाटन देखेके मिलेला। आगे चलिके भोजपुरी में कई एइसन कवि भइलें जेकरे कविता आ गीत–ग़ज़ल में सामाजिक चेतना क स्वर मुखर भइल। हीरा डोम क 'अछूत के शिकायत' ए क्रम में उल्लेखनीय कविता ह। महेन्दर मिसिर, घरीक्षण मिश्र, मोती बी0ए0, राम जियावन दास बावला, कैलाश गौतम, रामनवल मिश्र, मोलहू प्रसाद, जुमई खाँ आजाद, हरिराम द्विवेदी, त्रिलोकीनाथ उपाध्याय, जगदीश पंथी, तारकेश्वर मिश्र 'राही', गोरखपाण्डेय, कमलेश राय, प्रकाश उदय, विजेन्द्र अनिल, शिवकुमार 'पराग', अशोक द्विवेदी, रामलखन मिश्र 'मुंशी', वीरेन्द्र मिश्र 'दीपक' आदि के कविता मे अपने समाज, राजनीति आ ए सबसे जुड़ल अनेक समस्या क बहुत प्रामाणिक चित्रण भइल बा। मोलहू प्रसाद अपने एक कविता में सामाजिक–आर्थिक असमानता प चिन्ता व्यक्त कइले बाड़नं– बाँस के झोपड़िया महलिया से पूछे सूखल खेत हरियलिया से पूछे का हमरो दिनवाँ लवटिहैं की नाहीं।..... समाज व्यवस्था क बहुत जीवन्त वर्णन गोरख पाण्डेय के कविता में भइल बा। नकली समाजवाद प उनकऽ ई व्यंग्य देखे लायक बा –

समाजबाद बबुआ धीरे–धीरे आई।
हाथी से आई, घोड़ा से आई,
समाजबाद.....
बड़का के बड़हन, छोटका के छोटहन हिस्सा बराबर लगाई, समाजबाद.....

गोरखपाण्डेय के कविता में प्रतिरोध क स्वर भी बहुत प्रबल बा। ओमें जनता के ताकत प बड़ा भरोसा बा। उनके कविता क कुछ उदाहरण एहाँ प्रस्तुत बा–

सूतल रहलीं सपन एक देखलीं
सपन मन भावन हो सखिया
फूटलि किरनियाँ पुरुब असमनवाँ
उजर घर आँगन हो सखिया
गोसयाँ क लठिया मुरइया अस तुरलीं
भगवलीं महाजन हो सखिया।...

XX XX XX

जनता के आवे पलटनियाँ
हिलेले झकझोर दुनियाँ....

आज, के राजनीति आ नेता लोगन के चरित्र क चित्रण भोजपुरी कविता में खूब होत बा। इहाँ रामनवल मिश्र के दूगो दोहा देखल जा सकत बा–

का से का कइ देत बा, राजनीति कऽ खेल,
पूजल उनके जात बा, जेके चाही जेल।
इनरासन पा गइल बा, राज करत बा भोग,
पूजि रहल जस देवता, अपराधिन के लोग।

भोजपुरी कविता में स्त्री–विमर्श अलगे ढंग से चलतबा। नारी समाज से सम्बन्धित समस्या जवने में दहेज आ कन्या भ्रूण हत्या क समस्या सबसे प्रबल बा ओकर बहुत प्रभावशाली आ मार्मिक चित्रण एहाँ देखे के मिलत बा। ए प्रसंग में हम तारकेश्वर मिश्र 'राही' के एक गीत के कुछ लाइन प्रस्तुत करत हईं–

का पइबू माई हमके कोखिया में मारि के,
एतना दिन रखले रहलू बहुते सम्हारि के।
साधि रहे तोहरा के बोलवतीं कहिके माई
अँचरा के छाँह के बितवतीं लरिकाई,
कवन पाप कइलीं फुलवा फेंकलू उतारिके।....

ए बात के रामलखन मिश्र 'मुंशी' अपने एक गीत में एह तरह से व्यक्त कइले बाड़ंऽ–

ले लिहलू आल्हर परनवाँ हो माई कवने करनवाँ।
देखहू न दिहलू जहनवाँ हो, माई कवने करनवाँ।...

ए सबके साथ भोजपुरी कविता में पशु–पक्षी,

पर्यावरण आ प्रकृति के विनाश क चिन्तो प्रकट होत बा। प्रकृति संस्कृत, हिन्दी आ हर भाषा के कविता में हमेशा से महत्वपूर्ण रहलि हऽ। लेकिन आजु ओकर तेजी से विनाश होत बा। हमार तमाम परिचित पक्षी गायब होत बाड़ंऽ। पंडित हरिराम द्विवेदी क एगो बढ़िया गीत हऽ– भिनसारे चिरइया बोले, कि बोलिया मीठी लगे।' लेकिन अब स्थिति बदलति बा अब चिरइन क चहचाहट कम होत जात बा। ए यथार्थ क वर्णन कमलेश राय के एक गीत में देखल जा सकेला–

सबेरे भोरे अबतऽ चिरइयो न बोले।
सगरो बिछल अस कारी रहनियाँ सकुचि–सकुचि उगे सुरुज किरनियाँ
फुलवा पँखुरियो न खोले।.....

भोजपुरी कविता में विश्व ग्राम आ भूमण्डलीकरण के आकर्षक नारा के पीछे छिपल बाज़ारवाद आ नए ढंग के साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद के सच्चाई क पर्दाफाश आ ओकर बिरोध व्यक्त होत बा ए संदर्भ में कुछ काव्यांश प्रस्तुत बा–

छिंटलस डालर कऽ दाना रेशम कऽ जाल बिछावत बा,
जागत रहिहऽ ए भइया फिर उहे बहेलिया आवत बा।.....

निष्कर्ष के रूप में कहल जा सकेला कि भोजपुरी कविता अपने विकास के क्रम में पहिले के सीमित संसार आ सीमित विषय से निकलि के अब देस–दुनिया के तमाम विषयन से आँखि मिलावति बा आ समाज के जागरन में महत्वपूर्ण भूमिका निभावति बा।

■■ प्रोफेसर हिन्दी विभाग, बी0एच0यू0, वाराणसी, मो0 9415895812

ग़ज़ल

■ शंकर शरण

[एक]

अबहीं तऽ चर्चा बा सगरो सितलहरी के,
जब लूह चले लागी लवटी दिन गगरी के।

अइसन आन्ही आइल, सगरी सब उधियाइल,
कइसे बाँचल खोंता, चिरई तोर अबरी के।

आपन लग्गी अपने, ढोवे के बा सबका,
बस हाल इहे बाटे, एह मायानगरी के।

मनवाँ के परती में, असरा अँखुआ जाई,
किरिपा तऽ होखे दीं, तनि बूनी बदरी के।

मउअत आँखिन सोझा ओकरा नाचल होई,
बालू पर जे देखलस छपिटाइल मछरी के।

लउकित तऽ का हमहूँ राजा ना हो जइतीं,
परतोखे के बीखे, हऽ फुलवा गुलरी के।

[दू]

खेल गोंइया बिगारे लगल का करीं
खीसि मनवा नेवारे लगल का करीं

मन के अँगऊ नियर हम सइँचले रहीं
केहू आइल जुठारे लगल का करीं

रूप के रम्मा चोन्हा के सबरी से ऊ
सेन्हि हियरा में मारे लगल का करीं

मन अन्हरिया अँजोरिया से अउँजा गइल
राति चोन्हा पसारे लगल का करीं

बाति जेउँआ जनमली स आँतर में तऽ
बुद्धि सोचे बिचारे लगल का करीं

मन के सुगना उड़े ना सकल हारि के
पाँखि साजे सँवारे लगल का करीं।

साध से चिंरई खोंता लगवले रहे
आके आन्ही उजारे लगल का करीं।

■■ नया चौक, जापलिनगंज, बलिया

साहित्यालोचन

समकालीन भोजपुरी कविता में सपना आउर जागरन

■ डा0 अनिल कुमार राय

(अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन, मारीशस का संवाद–गोष्ठी में पढ़ल गइल आलेख)

समकालीन हिन्दी कविता के तरे समकालीन भोजपुरी कवितो क चरित्र आज के समाजार्थिक राजनीतिक परिस्थिति के बीच निर्मित भइल बा। भोजपुरी के समकालीन कवियन के दृष्टि में अपने समय के यथार्थ क प्रश्न अत्यंत गंभीरता के साथ अभिव्यक्त होत अनुभव कइल जा सकेला। समय आ समाज क व्यापक समस्या आपन पूर जटिलता के साथ जौने तरह शिष्ट या विकसित कहल जाए वाली अन्य भाषा में व्यक्त भइल हवे। भोजपुरी में वईसने आपन उपस्थिति दर्ज करावत नजर आवेले। इहाँ समकालीन जीवन के संकट क चित्र हवें। राजनीतिक पतनशीलता, झूठ–प्रपंच आउर पाखंड के कारोबार क उद्घाटन हवे। गरीबी आ बेरोजगारी क दृश्य हवे। सम्बन्ध–मूल्य आ आदर्श क विघटन हवे। पूँजी आ श्रम क अन्तर्विरोध हवे। भूमंडलीकरण आ बाजारवाद क विनाशकारी प्रभाव हवे। व्यक्तित्व आउर सांस्कृतिक प्रदूषण क संदर्भ हवें, लेकिन एह परिदृश्य के अतिरिक्त समकालीन भोजपुरी कविता में जीवन के स्वस्थ आउर सृजनशील आयामन क विविध प्रसंगों चित्रित हवें, जवन मनुष्यता के संघर्ष–यात्रा के प्रति गहरी आस्था पैदा करे वाला हवे। प्रेम, उत्साह, आशा–विश्वास, जिजीविषा, संकल्प, सपना आ जागरन के असंख्य जीवन–प्रसंगन से रचल–बसल आज क भोजपुरी कविता अपने समय के काव्येतिहास में कौनो प्रभावशाली कविता –धारा से आँख मिला के बात कइले क ताकत रखेले। बेहतर समय क आकांक्षा आउर ओकरे खातिर सक्रिय–सकर्मक जीवन अर्थात स्वप्न और जागरण के महत्व क मर्म भोजपुरी के समकालीन रचनाकारन के बखूबी पता हवे, एहीलिए ऊ अगर जीवन यथार्थ के निराशापूर्ण भीषण पक्ष क उद्घाटन कइल आवश्यक समझेलें, त वोहू पक्षन पर उनकर ओतनिए गइन आ सजग दृष्टि हवे, जवन मनुष्य के इतिहास–निर्माता बनावेले।

सपना आउर जागरन, शोषित–पीड़ित जनता के मुक्ति–संघर्ष क महत्वपूर्ण चरण हऽ। दुनिया के विभिन्न भाषा में सत्ता–व्यवस्था के जटिल गिरफ्त में फँसल आम निरीह जनता क समाजिक–आर्थिक–राजनीतिक आजादी के सपनन के रचनात्मक अभिव्यक्ति क एक प्रभावशाली स्वर हमेशा से मौजूद रहल ह आउर वोह सपनन के आकार देवे वाले जागरन के प्रयत्नन आउर स्थितियनों क भोजपुरी क समकालीन कविता साहित्य के एह वैश्विक परिदृश्य क एक मूल्यवान हिस्सा हवे। जीवन के प्रगतिशील आउर जनवादी मूल्यन क पक्षधर कवियन क एगो भरल–पूरल संसार भोजपुरियो में मौजूद हवे, एह संसार में सपना हवे आउर जागरन क प्रयासो। आज के भोजपुरी कविता क सपना आउर जागरण के स्रोत ओकर आपन परम्परा हवे आ एह समय क माहौल भी। आज के समय क पूरा ढांचा परम्परा आ प्रगति से आनी लोक आ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान से बनल बा। ए लिए भोजपुरी क कविता एही दूनों स्रोतन से अपने चेतना क संस्कार करत दिखाई देले।

हम अब सीधे–सीधे आज के दौर क भोजपुरी कविताई क उदाहरन देके आपन बाति कहत चाहत हईं, सबसे पहिले अपने गोरखपुर क एगो भोजपुरी कवि पंडित रामनवल मिश्र के कविता से बात क शुरूआत करत हईं। मिसिर जी हवें त बानबे बरिस क, लेकिन उन क दिन–दिमाग एकदम समकालीन हवे। उनके अनेक कविता में सपना आ जागरण क प्रसंग सुंदर ढंग से आइल बा। साधारण आदमी के सपनन के का सचाई बा। पंडित जी के सबदन में देखीं–

"चाट जात बा खुनवाँ– पसेनवाँ/काट लेत बा सिरजल सोनवाँ/लाग जात बा गरहन सपनवाँ/बनिजाला केहू क गरास। "मिसिर जी अपने समय के एह यथार्थ के बखूबी समझत हवें। उनके मालूम ह कि एकदम प्रतिकूल परिस्थितियों में जनता क आँख सपना देखल ना छोड़ेले एही के जनता क जिजीविषा कहल जाला। ई ऊ जिजीविषा होले जवन पातालो से अपने खातिर रस सोख लेले। ऊहे रामनवल जी जे अबहिन जनता के सपनन में गरहन लग गईले क बात करत रहलन हँ, देखीं सपनन के फुला गईले क चर्चा करत बाटन...."मन में मगन बा किसनवा/फुलइलें सपनवा/काटब अब चानी सोनवा/जाई पूरि मनवा क अरमनवाँ/लगवले रहलीं ह असरा।" कठिन परिस्थिति के भित्तर से सपना कइसे देखल जाला, एकर उदाहरन मिसिर जी के एह कवितन में देखल जा सकेला। हम पहिलहीं ई बात कहले रहलीं हँ कि सपना देखल जेतना जरूरी ह, ओतनिए ओके पूर करेके खाती अदिमी क जागलो जरूरी ह। कवि आ कलाकार क बड़हन जिम्मेवारी इहो होला कि सुत्तल समाज के ऊ जागरण क सनेस दे। भोजपुरी के कवियन में एकर गहिर बोध अनुभव कइल जा सकेला। सपना के गरहन लग गइल, ई सचाई क एक पहलू हवे, सवाल एकरे आगे ई बा कि तुहूँ एकरे खातीं जिम्मेवार बाटा कि ना। भोजपुरी कवि जगदीश ओझा 'सुंदर क कविता 'कहिला ले जगब?' जागरन क जरूरत बतावे वाली बहुत सुंदर कविता हवे.....जनमें क सूतल, जिनिगिया से रूठल/टूटल ना निनिया तोहार/ बताव भइया, जगब त कहिया ले जगब?/खेतवा जगावे, खेतहनिया जगावे/अमवा–महुवा बगनिया जगावे/ फटही लुगरिया में धनिया जगावे/सुसुकेला अंचरा पसार/बताव भइया जगबऽ त कहिया ले जगब?'

आज़ादी के बाद के मोहभंग क समकालीन कविता में उद्घाटन देखल जा सकेला। भारत क जनता आज़ादी के लेके जवन भरोसा कइले रहल। ऊ खण्ड–खण्ड टूट के बिखर गयल का सोचल गयल रहे आ का हो गयल? एह दसा क बरनन ओझा जी कईसे कइले हवें, आईं एके देखीं

सभे....बटिया निरेखत नयन पथराइल हमरी दुअरिया सुरुजवा न आइल/कवना नगरिया के रहिया हेरायिल/बापू के सपना के टूटल गुमान।" समकालीन भोजपुरी कविता में सपना आ जागरन क अइसन समीकरण जगह–जगह देखल जा सकेला ई नींद वाला सपना ना हवे। ई जागरन क सपना ह, ई जागरन के भीतर से जनम लेला, आ जागरन के आगे बढ़उले में आपन सहजोग करेला। नींदी में त ई सपना कत्तई देखले ना जा सकेला। कवि गोरख पाण्डेय के आखी में कईसन सपना पलत रहे ई सपना के स्वरुप क सवाल बहुत मायने रखे वाला सवाल ह। ई समाज के भविष्य क एक तस्वीर त पेस करबे करेला, खुद कवि–कलाकार के भाव–विचार क भी पोल खोल देला। बड–बड लोग अपने कल्पना के देस–समाज क नक्सा बनौले में विचार के स्तर भारी गलती क जाल, लेकिन गोरख पाण्डेय जी क त बाते कुछ अगल ह, उनके पास दरसल विचारधारा क अईसन ताकत हवे कि उनके कविता सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन के अभिलासा आ कर्म क घोषणा–पत्र बन जाले। गोरख पाण्डेय क सपना आउर जागरन शीर्षक कविता समकालीन भोजपुरी कविता के एह प्रगतिशील धारा क प्रामाणिक प्रतिनिधित्व करत अनुभव कयल जा सकेली। ए कवि क का सपना हवे, एके एह कविता में ठीक तरह से देखल जा सकेला....."सूतल रहली सपन एक देखली सपन मनभावन हो सखिया/फूटलि किरिनियाँ पुरुब असमनवा/उजर आंगन हो सखिया ई सपना एहीं खतम ना हो जाला। ऊ आगे बढ़ेला ए भोजपुरिया कवि क आँख सपना देखेले.....'बइरी पइसवा के रजवा मेटवलीं/मिलल मोर साजन हो सखिया।" एही तरे आज क भोजपुरिया कवि जन–जागरण क जरूरत गइराई से महसूस करेला। ओके ई ठीक से पता हवे कि बिना नींदी से बाहर निकलले कौनो बड़ा बदलाव ना जो सकेला परिवर्तन खाती जागरन एकदम जरूरी हवे। गोरख पाण्डेय क दूसर कविता में जागरण आ सक्रियता के जरूरत के देखल जा सकेला..... "बीतता अन्हरिया के जमनवा हो संघतिया/सबके जगा द/गँउँआ जगा द आ सहरवा जगा द/छतिया में भरल अँगरवा जगा द/ जइसे जरे पाप के खनवा हो संघतिया/सबके जगा द।" सबके जगा देवे वाला ई भाव बिना स्पस्ट सामाजिक चेतना के केहू के भीतर ना पैदा हो सकेला। ई घोर जड़ता आउर निष्क्रियता के खिलाफ एक क्रांतिकारी जागरन क आवाहन ह। ई केहू एक क जागरन ना हऽ ई गाँव आ सहर के समूह क जागरन ह, इहाँ इकाई ना बहुवचन क आवाहन ह। गोरख पाण्डेय के ई ठीक तरह से मालूम ह कि केहू के भी मुक्ति अकेले–अकेले ना मिली ऊ जब भी मिली त समूह में मिली। एही लिए ओकरे खातिर संघर्ष भी सामूहिके करे के पड़ी। भोजपुरी कविता में एह चेतना के प्रगतिशील आधुनिक विचार के प्रभाव के रूप में देखल जा सकेला। आजु क भोजपुरी कवि जागरन–जागरन क बहुत हल्ला मचावे वाली कविता लिखले में विस्वास ना करेला। ओके आपन बात संकेते में कहले–सुनउले क हुनर मालूम बा। ऊ जनवाद के नाम प हिन्दी कविता में कौनों दौर में मचल शोर–शराबा से परिचित ह एही वजह से ओके रचना के संयम आउर स्वर के अनुशासन क महत्व पता ह कवि निलय उपाध्याय क संझवत शीर्षक भोजपुरी कविता जागरण–कविता के कला क एक बेहतरीन उदाहरन ह। आप सभे कविता सुनीं..... अलाव! दरवाजा प जाग/भंसार! मोहल्ला में/आँवाँ! चउराहा प/शहर में चिमनी!.....बोरसी! तू नीन में जाग/आ रात भर/सरसों क फूल! तू आसमान में जाग/हवा में जाग.....पलाश!/बिजली! तू मेघ में जाग/आ हर घर में/.....कवि जी! उठ/उठऽ आ घेरऽ सऊँसे ब्रम्हांड/ कि जाग जाय/ सदियन से बुताइल भोजपुरी क संझवत।

कौनो भासा क कविता होखे ओम्मे जागरन एह लिए महत्वपूर्ण ह कि वास्तव में जनता खातिर जागरण क महत्व ह। एकरे बिना इतिहास क निर्माण सम्भव ना हवे, जागरण एक प्रकार के कर्म–संस्कृति ह जौने के केन्द्र में मनुष्य क इतिहास–निर्माण ह। एकरे जरूरत क अनुभव दरसल मुक्ती के सपने क परिणाम हऽ। सुरेश काटक क 'गजाधर भाई' शीर्षक कविता सपना आ जागरन के अंतरनिर्भर सम्बन्ध क मिलल–जुलल संरचना ह। ए कविता क एक हिस्सा प तनी आप सब ध्यान देई। कविता बा कि..... "गजाधर/डाल बीया/फुलाव मत गोड–हाथ/टर्राए द कउवन के/बेंगन के/टिटिहरी के होखे द उतान/..... समय के हाथ में बरियार डंडा बा गजाधर भाई/आई जरूर सावन/झमाझम बरसी/गाईं नाच–नाच के कजरी/फुलाई सपना/ गोटाई आपन फसल/चलऽ उठऽ नाचऽ/बछरुन के/कान्ह प देके जुआठ।" देखल जा सकेला कि ई कविता सपना में जागरण आउर जागरण में सपना क अनोखा उदाहरन ह। एम्में ई दूनों अलगे–अलगे ना हवें इच्छा आउर क्रिया के कलात्मक संयोजन क अइसन विसेसता ए कविता के कउनहूँ भासा के श्रेष्ठ कविता के बराबरी में रख सकेले। भोजपुरी कविता आ ओकरे गद्य–लेखन से बहुत दिनन से गहिर जुड़ाव बा रविन्द्र श्रीवास्तव जुगानी भाई क। ऊ अपने समय के संकट के पहचनले के बाद खाली ओकर सियापा कयल उचित ना मानेलन। आलोचना आउर असहमति क भी आपन मतलब होला। लेकिन खाली ओही के लेके बइठ गयल उनके मंजूर ना ह। उनके एगो कविता ह चुप्पी तोरल जा' आखिर कउनों सपना के साकार करे खातिर कुछ–न–कुछ त करही के पड़ी ई चुप्पी तोरल बहुत जरूरी चीज हवे बहुत गहिर बात कहत हवें जुगानी भाई ए कविता में ऊ कहतहवें कि....."आयीं बतियावल जा/जईसे पनिहारिन क गगरी/अपने कूआँ से बतिआवेले/.....बतियाई कि कवनो बियावान/बर्फे क पहाड़ अपने आप में खबरिहो जा/बतियाई सिव–पार्वती नीयर/जेके सुनिके कवनो चिरई अमर हो जा/....आईं भूखी के मुहें में कवनो/बोले वाली जीभ जोरीं/बरियार एह चुप्पी कईसों त तोरीं।" समकालीन भोजपुरी कविता में शिवकुमार पराग आ कमलेश राय में सपना आउर जागरण एक केन्द्रीय विषय के रूप में मौजूद ह। हिन्दी कविता के प्रगतिशील आन्दोलन के इतिहास क जब कब्बों लिखल जाई त भोजपुरी के एह कवितन के छोडल ना जा सकेला। जनता के सपना आ जनता के जागरन क गीत गावे वाला कवनों कवि अपने समय के जीवन के समाज आ राजनीति के केतनी भीतर से समझत ह इनके कवितन के पढ़ के अनुभव होला।

विचार आ भाव दूनों क अद्भुत सामंजस्य इनके इहाँ देखल जा सकेला। हम ए आलेख के एकदम सुरुआत में गोरख पाण्डेय के सपना आउर जागरण शीर्षक दूगो कविता क जिकिर कइले रहलीं ह। कमलेश राय के इहाँ भी ए विसयन पर स्वतंत्र कविता मौजूद ह। बलुक कहीं त ऐसन कई कविता बाटी जौनन में खाली सपना आ खाली जागरण क बात भइल हवे। आईं इनक सपना शीर्षक कविता देखीं..... आँख रही जबले जगल करी सपना/पलकन के छांहें सजल करी सपना/खने रंग बनिके खने राग बनिके/धरती के माथे पर खन सोहाग बनिके/रतनार फागुन भरल करी सपना/.....केतनो जो दुःख क दुपहरिया गर्हुआइ/दाह बढी मन–पराग दहकि–दहकि जाई/छाँह बनिके घामे जरल करी सपना/जगल करी सपना–सजल करी सपना।' शिव कुमार घोर निरासा आ अन्धकार में भी सपना देखल–बांचल जानेले। एह कविता के देखीं....."लउकत नइखे साफ बड़ा धुन्धुआइल बा/बांचल बा सपना भलहीं अझुराइल बा/कब बिहान होखी कहिया सूरुज उगिहें/पूजत बा अब लोग बड़ा अकुताइल बा/..... सुनुगी–सुनुगी ई मत सोचीं ना सुनुगी/सिमसिमाह बा दिन मौसम मेहराइल बा।" पराग जी क एगो कविता हवे राति कटी, "भिनुसारे के बा कुल्हि लच्छन राति काटी/अन्जुआइ मति पोढ़ करीं मन राति कटी/भित्तर से बहरे ले जगरन चाहत बा/सोच–समझ आ बदलीं जेहन राति कटी/परिवर्तन के फसिल अगर चाहत होखीं/अग्निबीज के डालीं बेहन, राति कटी।' जागरण क इहे स्वर कमलेश के इहाँ भी हवे.....ऊँच होखत जात बा तगी–तवालत क किला/थकि गइल बा राह बेहाली क ढोवत काफिला/चेतना बदलाव क इतिहास लेके जाग/लोर में बूडल बा धनिया छूंछ होरी खेत में/चुप परल गठरी सवालन क गवां के सैंत में/गीत अब गोदान क एहसास लेके जाग।''

आलेख के उपसंहार में हम कहल चाहत हईं कि समकालीन भोजपुरी कविता में दिखाई देत सपना आउर जागरन क ई प्रवृत्ति भोजपुरी लोक–मानस क स्वाभाविक अभिव्यक्ति हवे। लोक यानी साधारण जनता क सगरो इतिहास कल्पना आ संघर्ष के जमीनी पर तैयार भइल ह। अपने विकास में लोक–समुदाय के प्रतिकूल परिस्थितिन के बीच मुक्ति क सपना देखे के पडल ह आ ओके साकार करे के खातिर जागे के आउर संघर्ष करे के पडल हवे। भोजपुरी क आजु क कवि एह जन–जीवन से जुडल हवे आ ओहीं से अपने लिए आ अपने कविता के लिए चेतना आ संवेदना ग्रहण करत ह। हमहन के ओकरे एह चरित्र से संतुष्ट हो सकीलीं।

■ ■ प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय।

मिड–डे–मील

■ शशांक शेखर

[एक]

सोचऽ कि के लील घालत बा
उहनी के कौर
के घोर जात बा जहर/पोखरा में?
ओह मछरियन के बारे में सोचऽ कि
के चोरा लेता उहनी के आहार
ओह तितलियन से पूछऽ कि
कहाँ बा उहनी के ठौर
लरिकन के बारे में सोचऽ कि
के छीन लेता उहनी के किताब
के बेंच देता उहनी के हँसी
के खरीद लेत बा उहनी के मासूमियत?

[दू]

गेना अस उछलत बाड़े स बच्चा
आपन–आपन छीपा लेले
दहकत बा चूल्हा के आँच
उन्हन का साँस से
चाउर खदकत बा
ओकरा खुशबू में डोलत बाड़न स बच्चा
देखत बाड़न स छउँक–छउँक के
भुअरा, कलुआ, टेंगरी, रजुआ
भुअरा त जाने कब से दाँत पजा के बइठल बा
खउफ त खाला ऊ शनिचरा देवता से
बाकिर तरुआर बन के
लटक जाला अतवार पेट पर...।

[तीन]

खा लो– बाबू लोग
खा लोग
खाएक ना, 'मील' खा लोग
धुन खा लोग, तेलचट्टा खा लोग
अँकड़ी खा लोग, लेंड़ी खा लोग
मास्टर जी के बेंत खा लोग
मिड–डे के मील खा लोग
मुखिया जी खा लोग
बीडीओ जी खा लोग
कलक्टर जी खा लोग, मिनिस्टर जी खा लोग
गावऽ लो गीत
छीपा बजावऽ लोग–
मिड–डे–मील
सब कुछ नील!

■ ■ मीरायतन चरित्रवन, बक्सर (बिहार)

कहानी

सेरोगेट मॉम

■ कृष्ण कुमार

रात के एक बजत रहे। अन्हरिया रात। झन–झन बोलत। सभे पटुआइल। एकदम सुनसान। आगा–पीछा केहु ना। चारों ओरे अन्हारे–अन्हार। घर के दीया–डिबरी बुताइल। केवाड़ी के पाला तऽ डेराइल दुबकल सरसती के ओह राति पसन से बुझा गइल कि रात के रात काहे कहल जाला। काहे केहु बेसबुर होके भोरहरिया के बाट निहारेला। दरद से भहरात देंहि। थोबड़ा आ दूनों हाथ के कलाई खूने–खून। उनुका बुझाते ना रहे कि कहंवाँ के खून पहिले पोंछीं। तब ऊ सोच लेली, आजु कहसुं भोर होखे से पहिले ससुरा छोड़ि देबे के बा। एह जलालत भरल जिनिगी से बिना उबरले कामयाबी ना मिली।

सरसती के जनम एगो छोटहन पिछुआइल गांव में भइल रहे। स्कूल के नाम पऽ गांव से कुछ दूर एगो मिडिल स्कूल। उनुका पढ़ाई से बहुते लगाव रहे। क्लास में अउव्वल। पढ़ाई आ गीत दूनों में। अपना सहपाठिन के मदद करे वाली। पढ़ाई के ऊ आपन सखी, सहेली, हमदम सभ समझत रही। टीचरन के दुलारी–प्यारी। 'टीचर जी' शब्द से बहुते प्रभावित। ऊ रोज समय से पहिले स्कूल के गेट पऽ जा के खाड़ हो जात रही। स्कूल में आवत टीचर लोग के देखत उनुका बड़ा निम्मन लागत रहे। तब ऊ ख्यालन में गुम हो के सोचे लागसु–काश! कबो हमहूँ 'टीचर जी' कहइतीं।

धनी–मानी बाकिर नमरी कंजड़ आ कट्टर रूढ़िवादी बाप के बेटी रही सरसती। मैटरिक पास करे से पहिलहीं उनकर बाप जुआठि फेंकि देलें, "अब गोईंठा में घीव ना सुखवाइबि। जतने आगा पढ़ाइबि ओतने तिलक दहेज अधिका देबे के परी। जवन पइसा पढ़ाई में खरचबि, ओह से निम्मन ई होई कि एकर हाथ पिअर कऽ दीं।"

ना–नुकुर करत रही सरसती। छान–पगहा तुरावत रही। बाकिर उनकर एगो ना सुनलें उनकर बाबूजी। 'पानी पीजै छान के, बेटी दीजै जान के'। एहू बात के तजबीज ना कइलें। आगा–पीछा कुछुओं ना बिचरले। दांये–बाये कुछुओ ना सवचलें। कांचे उमिर में एगो बेरोजगार लफन्दर लइका सुमन से उनका के बिहाहि देलें। राम परलें कुकुर के पाला। ऊ खाली बेरोजगारे ना रहे नमरी पाजी। अहो नाथ कुछ बाकी नाहिं। लइकांईये में सुमन के माई गुजर गइल रही। बाबूजी पूरा लाड़–प्यार से उनका के पललें–पोसले रहन। ओकर बाबूजी त निहायत मामूली किसान रहन बाकिर तबो ऊ सभ बाप लेखा अपना बेटा के पढ़ा–लिखा के बड़ आदमी बनावल चाहत रहन। बाकिर सफल ना हो पवलें। अँखुए पऽ लाही मार देलस। बेटा लफुआ निकल गइल। पढ़ाई छोड़ि सभ खुरफात ऊ लइकांइये में सीख के पक्का हो गइल। एक कश लगवलसि आ नशीला धुंआ से ओकरा इयारी के सिलसिला शुरू हो गइल। जवन समय के साथे अवरू मजबूत होत गइल। पांचवा क्लास तक आवत–आवत सभ नशा के आदी हो गइल। कॉपी–किताब बेंचि के सिनेमा देखे लागल। हाईस्कूल पास करे से पहिले पार्ट टाइम मेहनत क के चोरी, शराब आ जुआ खेले में महारथ हासिल क लेलस। अनसा गइलें बाबूजी। डांट–फटकार, मार–पीट सभ क के थाकि गइलें। कोटिन जतन कइलें बाकिर बेटा के गाड़ी पटरी पऽ ना आइल। आखिर में इयार–संघतिया सलाह देलें, "एकर बिआह क दऽ। जवान होइये चलल बा। गोड़ में पैकड़ लागि जाई आ ई राह पऽ आ जाई...।"

लोगन के सलाह आ अपना से तजबीज क के ओकर बाप ओकरा के बिआहि देलें।

ससुर के प्रभुताई प उतरल पतोहि के हालात जग जाहिर बा। कुछ दिन तक त सभ ठीक–ठाक रहल बाकिर बाद में अइसन ना गड़बड़ाइल कि सरसती फेरा में पर गइली। बीतत समय के साथे उनका एगो बेटी भइल। घर में मुरदनी पसर गइल। सुर–सवांग कपारे हाथ ध के बइठ गइलें। दू से तीन हो गइली सरसती। बेटी के जनमते ऊ अपना मन में दृढ़ संकल्प क लेली– "कुछुओ होई बाकिर ना मानबि। मेहनत–मजदूरी, कुटवनी–पिसवनी क के कसहूं अपना एह बेटी के पढ़ा–लिखा के अफसर बनाइबि।"

बेटी के जनम लेते घर में कलह–कंकार बढ़े लागल। आखिर में सुमन मारे–पीटे लगलें सरसती के। दारू पी के ऊ सुतली रात में घरे आवे आ सरसती से उलझि जात रहे। ससुर रात के खा–पी

के खेते–बधारी सुते खातिर निकल जासु। धरहरिया आ बीच–बचाव करे वाला घर में केहु ना। नशा में पागल हो जात रहे सुमन। शांत–भाव से समझावसु सरसती। बाकिर ऊ उनकर कुछुओ ना सुने। बुरबक के खूंटा लेखा दवरे पऽ जस के तस अड़ल रहत रहे। तनिको ओनइस–बीस ना। बस उहे हाल– आन्हारा के लउके हजारीबाग। जइसे बांस में कतनो पानी डाल के फल–फूल नइखीं उगा सकत, उहे हाल रहे सुमन के।

आखिर में आजिज आ गइली सरसती। हमेशा सोचसु– एकर कवनो हल निकालल बहुते जरूरी बा। एह घुट–घुट के जिअला से मुअल बढ़िया होई। तले दोसर लहरा मन में उठे–कायर मुएलें। जिनिगी से पलाएन करेले। जिनिगी जिए खातिर मिलल बा। दुख तकलीफ से फारिंग होखे खातिर मुअले एगो राह नइखे। ठीक से जिए खातिर ढेर राह बा। कुछ दोसर राह सोचल जाउ। एह तरीका से अपना मन के बटोरत रही सुरसती।

एही बीचे भाई के बिआह लागल। सरसती भाई के साथे नइहर आ गइली। अपना भाई के सभ दुःख–सुख बतवली। माई उनका के ढाढस देत कहली, "घबड़ा मत। रात के बाद दिन होला। जे दुख करेला ओकरे सुख भेंटाला। भगवान चहिहें तऽ तोहार भाग्य पलटा खाई आ सुख के दरिआव में तू पँवरबू।"

संजोग अइसन भइल कि उनकर पड़ोसिया सहपाठी नरेश ओह घरी गांवे आइल रहन। ऊ दिल्ली में निम्मन नौकरी करत रहन। पढ़ाई के बेरा सरसती आ नरेश में बड़ा मेल रहत रहे। दूनों लोग पड़ोसिया रहले रहन। आपुस में बोल–बतिया के समझि–बुझि के स्कूल परीक्षा के ऊ भरपूर तइयारी कऽ लेत रहन। बाकिर तबो दूसरा पोजिसन पर रहत रहन नरेश। सरसती के पहिला पोजिसन से धसोरि ना पवलें। बाकिर करम फूटल सरसती के। लइकी जाति। उनकर बाबूजी उनका भेजा के ना तउललें। बिआह कऽ के सरसती के। बाकिर नरेश के पढ़ाई होत गइल। कम्पीटीशन फेस कइलें आ बड़का अफसर के कुरसी पा लेलें।

पढ़ाई वाला रिश्ता इयाद परल सरसती के आ बेटी के साथे पहुंचि गइली नरेश के घरे। अपना ससुरा के सभ कहानी बतवली नरेश से, "ना जाने कवन करम कइले रहिं कि निकाम्मा सवांग से पाला परि गइल। नमरी नशेड़ी। हम त पूरा कोशिश कइनी कि सवांग के समझा–बुझा के रास्ता प ले आईं। बाकिर हमार एको बात ना माने। उलटे उलझि जाला। हमरा के मारे–पीटे लागेला। बड़ी अफदरा में परल बानी। आंखिन के सोझा अन्हरिया लउकऽता। बुझात नइखे कि का करीं? कइसे एह संकट से उबरी? जाये द, हमार बात छोड़ऽ, हम त गड़हा में गीरिये गइनी, बाकिर हेह बेटी के देखऽ। एकर पढ़े के उमिर हो गइल बा, बाकिर आजु तक कवनो स्कूल में एकर दाखिला ना करा पवनी। एकर जीवन राह प कइसे आई, एकरा बारे में कुछ सोचऽ। हमरा के कवनो राह बतावऽ आ एह धरम संकट से उबारऽ...।" ई कहत हलक में हलफनामा फंसे लागल, मुंह सुखा गइल, आ आंखिन से लोर ढरके लागल।

सरसती के बतकही सुन नरेश बड़ा दुखी भइलें। उनका थथमा लागि गइल। दस डाढ़ि मन दउरे लागल–हम का कर सकऽतानी सरसती खातिर? सवांग जोग रहित त ढेर उपाय कइल जा सकत रहल हा। बिना मेंह के दंवरी करावे के बा। दिमाग के नस तना गइल, बाकिर ऊँट कवनो करवट बइठत ना रहे। उजबुजा गइलें नरेश। अन्त दांव में सरसती से कहलें– "घबड़ा मत। हमरा के एक–दू दिन के मोहलत दऽ। हम तोहार आ तोहरा बेटी दूनों के उपाइ बहुत जलदिये कऽ देबि।"

सरसती अपना घरे चल गइली। दिमाग प जोर देके सोचे लगलें नरेश–पढ़ाई के बेरा कइसन रही सरसती। चेहरा भभकत रहे। आजु कइसन हो गइली। ठीक कहल गइल बा शस्त्र, शास्त्र आ मेहरारू ई तीनों अपने–आप में बहुते काबिल होला। बाकिर जोग मरदाना के हाथे परि के जोग हो जाला आ अजोग के संगत भइला पऽ अजोग हो जाला। का रही सरसती आ का हो गइली? सुदामा के बिगड़ला समय में कृष्ण संघतिया भइलें। मदद कइलें। हम आ सरसती त ओइसने रहीं जा। एक साथे पढ़त जात रहीं सरसती। बिना ना–नुकुर कइले पसन से ऊ हमरा के समझावत रही। आजु उनकर दिन पातर हो गइल बा। अगर हम उनकर तनिको मदद क दे तानी त उनका ऋण से हम उबरि जाइब। बहुत तरीका के लहर उठे दिमाग में आ फेरू थिरा जात रहे। अन्त दांव में एको बात उनका इयाद परल। दिल्ली में उनकर एगो बगलगीर रहत रहन। अफराद धन–दउलत। बाकिर कवनो बाल–बच्चा ना। दूनों परानी कतना लोग से लइका गोद लेबे खातिर पूरहर कोशिश कइलें। बाकिर केहू ओह लोग के एह लालसा के ना पूरावल। ओह लोग के कामना अधूर रहि गइल। आखिर में ऊ लोग 'किराया के कोख' के चक्कर में रहे लोग। मुंह–मांगा रोपेया देबे प तइयार रहन। जे केहु आपन नजदीकी रहे। सभका से ऊ लोग अपना जोगाड़ के बारे में कहत रहन। नरेश के

अचके में दिल्ली के ओह आदिमी के इयाद आ गइल। सोचे लगलें– सरसती ओकरा काम खातिर ठीक मेहरारू बाड़ी। एह से सरसतियो के जीवन पार लागि जाई आ उनकर बेटियो निम्मन से पढ़ि–लिखि जाई। आ ओह दूनों परानी के खुशी भेंटा जाई। चार जीव एक साथे आबाद हो जाई। आ हमरो लोक–परलोक दूनों सुधरि जाई। तले एगो दोसर लहर उठल नरेश के मन में– का जाने सरसती एह काम खातिर तइयार ना होखसु। अन्यथा मान लेसु त ई अवरू खराब हो जाई। पड़ोसिया के बात बा। आग–पाछ में परि गइलें। हमहूं सरकारी नोकरी करऽ तानी। ओकरा ससुरा के जनिहें सऽ त हमरो दू गो रोटी खाइल मोहाल क दिहें सऽ। प्रशासन–पुलिस के अझुरा में अझुरा जाए के परी। का करीं आ का ना? एहि में उनकर मन सउनाइल रहि गइल। ततलजबे उनका मन में एगो दोसर तुफान मचल– "नो रिस्क, नो गेन"। दोसरा के खुशी देबे खातिर आपन खुशी त हटावहीं के परेला। बिना फेरा में परले ई काम कबो फते ना होई एह से ऊ आपन मन कड़ा कइलें। आई आम कि जाई झटहा वाली मन बनवलें। जवन आगा आई तवन देखल जाई। अपना एह सोच के अमली रूप देबे खातिर बिहान होते सरसती के बोलवलें आ प्रेम से कहे के शुरू कइलें, "देखऽ, समय बड़ा बाउर आ गइल बा। इज्जत से दू पइसा कमाइल बहुते मोसिकल हो गइल बा। ओहू में मेहरारू–लइकी के त बाते छोड़ि दऽ। ओहनिन के दिन–दशा त अवरू पातर हो गइल बा। एह ममिला में पूरा दिल्ली महकी गइल बड्डए। हम तोहरा खातिर एगो बात सोचनी हां। अगर तोहरा पसन होखे त तू कहऽ। एह काम के बारे में केहु से तोहरा कहेंके नइखे। खाली हम जानी आ तू जान। दोसर जान जाई त हमरा कुछ परेशान हो जाए के परी। एह से तू अपने तक एह बात के रखिहऽ। कह त कहीं... ।"

"कह, कवन काम हऽ। हमरा जोग होई त हम करबे करबि। ना त कवनो बाते नइखे... ।"

"'सेरोगेट मदर' बनबू...?"

"ई का कहाला। हम त ई जानते नइखीं। ई कइसन काम हऽ?"

"ई बहुते निम्मन काम हऽ। संतान सुख से वंचित दम्पती खातिर दोसर मेहरारू बनावटी कृत्रिम रूप से गर्भ धारण करेली। ओकरे के 'सेरोगेट मदर' कहल जाला। सेरोगेसी विधि में संतान सुख के इच्छुक दंपति में से पिता के शुक्राणुअन के एगो स्वस्थ मेहरारू के अंडाणु के साथे प्राकृतिक रूप से निषेचित कइल जाला। माता–पिता के अंडाणु आ शुक्राणु के मेल परखनली विधि से करा के भ्रूण तइयार कइल जाला। सेरोगेट मदर के 'नेचुरल ओव्यूलेशन' के समय एह तइयार भ्रूण के ओकरा गर्भाशय में प्रत्यारोपित कइल जाला। एह में बच्चा के जेनेटिक संबंध सिर्फ माई आ बाप से रहेला। सेरोगेट मदर से ओकरा कवनो संबंध ना होखे। ओह नव महीना के पूरा समय में सेरोगेट मदर के 'ओरल पिल्स' खिआ के अंडाणु–विहिन चक्र में राखल जाला। एह से बच्चा पैदा होखे तक ओकर अपन अंडाणु ना बने। इहे बात बा। तू पसन से सोच–विचार लऽ तब हम आगा गोड़ बढ़ाइबि। ओह आदिमी से बतिआइबि जेकरा बाल–बच्चा के जरूरत बा... ।"

"एह काम के एवज में हमरा का भेंटाई...?"

"बहुते बढ़िया सवाल पूछलू। त सुनऽ, एह काम के कवनो बन्हुआ फीस नइखे। ओइसे केहु चार लाख, केहु पाँच लाख देला। बाकिर तू सोरहो आना मन बना के अगर एह काम में अपना के लगइबू त हम ओह पार्टी से पूरे–पूरी दस लाख रोपेया ओह नव महीना के अंदर तोहरा के दिअवा देबि। नारमल ना हो के अगर सिजेरियन बच्चा के जनम होई त पाँच लाख अवरू उपर से दिअवा देबि। काहे कि ऊ पार्टी पूरा मालधनी बा। ओकरा घरे रोपेया झिंटिका भइल बा। एह से रोपेया खातिर त सोचबे मति करऽ। दिल खोलि के साफ कहऽ त हम एह काम में लागि जाईं... ।"

"अच्छा हमरा के मोहलत दऽ। हम अपना मन–मिजाज के तौलि के तोहरा के बताइबि... ।"

जे ना देखल गोड़हुल ऊ देखल भुसहुल। तेजी से डेगरगर गोड़ बढ़ावत सरसती अपनी घरे अइली। रोपेया जे ना करम आदिमी से करा देबे। जज–कलक्टर, हाकिम सभे रोपेया प बिकाता। सरसती त एगो लाचार मेहरारू रही। बंद राहन के बीचे घेराइल। ससुरा के हालात खतमें समझीं आ मरद नालाएक। तब ऊ तनिको देरी ना कइली आ दोसरा दिने नरेश लगे पहुंचि के आपन स्वीकृति दे देली। ओकरा बाद त नरेश रेल हो गइलें। ओहि घरी ओह पार्टी लगे मोबाइल लगवलें आ सभ बात बता देलें। आ साफ–सूफ बतकहीं कइलें, "हम रउआ सभे के एह काम खातिर अपना चचेरी बहिन के तइयार कइनी हा। दस लाख रोपेया लागी। ओकरा एगो बेटी बिया। ओकरो खरचा रावा सभे के देबे के परी।"

नरेश के बतकही सुनि ऊ पार्टी बड़ा अगराइल। ओकरा खुशी के ठेकाने ना रहे। ऊ लोग कहल, "जब राउर चचेरी बहिनिये बाड़ी त का सोचे के बा। दस हजार रोपेया उनका के एडभांस दे देबि।

एइजा रावा आइब त हमनी के ऊ रोपेया रावा के देबि जा... ।"

ओह पार्टी से बतकही भइला के बाद नरेश सभ बात सरसती के बता देलें आ हिदायत कइलें– "ई बात केहु के जाने के ना चाहीं। आ तोहरा एहिजा से ना, अपना ससुरा से दिल्ली आवे के बा। चतुर बहिन बाड़ू। तोहरा के का समझावे के बा? ससुरा जइहऽ। सवांग जाहि दिन तोहरा जोरे अनेति करिहें, कलह–कंकार मचइहें। बेटी के साथे गंव लगा के आगा–पीछा देखि के दिल्ली के गाड़ी पकड़ लिहऽ। हमरा के मोबाइल से बता दिहऽ। टीसन पर जसहीं उतरबू, हम तोहरा के 'रीसीभ' क लेबि। हई दस हजार रोपेया तोहरा के दिल्ली आवे खातिर दे तानी। एकरा के जतन से धऽ लऽ।"

भाई के बिआह भइला के बाद ससुरा आ गइली सरसती। हप्ता–दस दिन तक सभ ठीक–ठाक रहल। फेरू कलह–कंकार शुरू हो गइल। ओह रात सवांग उनका के पूरा मरले–पीटले रहे। ओहि राति दृढ़ संकल्प क लेली–होखे दऽ बिहान। अब एह मटिलगना के घर में ना रहबि। घुट–घुट के जिअला से मुअल निम्मन हऽ। अब एको सकेन्ड ज्यादती ना सहबि.. ।

राति के चउथा पहर शुरू भइल। पूरूब आकाश में सुकवा उगल। मुर्गा बांग देलसि। सवांग नशा में डूबल नाक फोंफिआवत रहे। ससुर खरिहानी में सुतल रहन। अबहीं लोगन के सुगबुगाहट इचिको ना रहे। बेटी के गोदी में उठवली आ दिल्ली के जतरा प निकल गइली सरसती। टीसन प आवते नरेश लगे फोन लगवली– "हम अपना ससुरा से निकल गइनी। टीसन प आइल बानी। फरक्का इक्सप्रेस आ रहल बा। जल्दबाजी में रिजरभेसन के टिकट त ना मिल सकल। एह से साधारण डिब्बा के टिकट मिलल हा। लोग बताव तारें, फरक्का इक्सप्रेस में सधारण डिब्बा दू गो आगे आ चार गो पीछा रहेला। पसन से सीट मिल जाई। हम फरक्का इक्सप्रेस में पिछहीं वाला डिब्बा में रहबि। तू टीसन प जरूर चलि अइहऽ।"

दिल्ली टीसन से नरेश के साथे सरसती उनका अपार्टमेंट में आ गइली। सुबह होते उनका के पार्टी से मिलवा देले नरेश। सरसती के देखते ऊ दूनों परानी जुड़ा गइलें। सरसती सांचो के सरसती रहली। आगे के कार्रवाई में सभे लागि गइल। सरसती 'सेरोगेट मदर' बनि गइली। बैंक में खाता खोलवली आ भेंटाइल रोपेया जमा क देली। बेटी के साथे नरेश के अपार्टमेन्ट में रहे लगली।

सरसती के ससुरा में खलबली मचल। हितई–नतई सगरे धाव–धूप कइल लोग। बाकिर सरसती के आह–अंटकर कुछ ना भेंटाइल। हारि–थाकि के थाना में गुमशुदी के रिपोर्ट लिखावल गइल बा। पुलिस सरसती के ढूढि रहल बिया। एगो नेक मकसद के पूरा करे खातिर सरसती साहसिक कदम उठवले बाड़ी। कोख उधार देबे से मिले वाली राशि से ऊ अपना एकलौती बेटी के खुशहाल करिहें। ओकरा के पढ़इहें। आ बेटी के अफसर बनावे वाला अपना सपना के पूरा करिहें।

एह से निहोरा बा, कि रावा पुलिस के ई बात कबो मत बताइब कि सरसती कहँवाँ बाड़ी ना त उनकर सपना अधूरा रहि जाई आ नाहक में नरेश के हाथ में हथकड़ी आ डांड़ में रस्सा बन्हा जाई... ।

■■ महावीर स्थान, करमन टोला, आरा–802301 (बिहार)

ठंड

■ शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

ठंढ घमण्ड में होइ प्रचण्ड, लखेदि–लखेदि सतावत बाटे।
के बड़–छोट इ मारत डंक, रोवावत हाड़ गलावत बाटे।
क्रूर लगे पसिजे ना, भयानक रूप बनाइ डरावत बाटे।
का निकलीं घर से बहरा, हथवा–गोड़वा किंकुरावत बाटे।।

सून लगे पतई बिनु फेड़, लगे परिधान बिना जस जोगी।
ओस के बून जमे ओहि ठाँव, पियास मरे पनिया बिना रोगी।
राति कटे पुअरा पर जेकर, लागत साधत योग वियोगी।
आगि में आगि के लच्छन ना, बनि गइल बे उ ओकरे सहयोगी।।

■■ ग्राम–पोस्ट–मैरीटार, बलिया

कहानी

काठ

■ विष्णुदेव तिवारी

चलि गइलि माई। जवन मन में धइले रहे, पूरा क क के गइलि। ओकरा साध रहे जे पतोह घर में अइला के बाद आँखि मुँदाउ, त कवनो रंज ना। संजोग देखऽ, भला, एने दुलेसरी चउखट के भीतर गोड़ रखलसि, ओने माई के 'कागज–पत्तर' के खोज शुरू हो गइल आ सालों ना लागल तले 'बोलावा' आ गइल। मुअलि, त लागत रहे जे मंदिर में घंटी बजा के आइल बिया, मंगत पूजि गइलि त आराम करे लागलि।

हमरा त कुछ पता रहे; जबले जीअलि, दोसरा के दरवाजा टपे के जरूरत ना पड़ल। साँझि ,खा, तेलिया के दोकानि से मय सामान–गूर–गोंइठा अपने ले आवे। महीना में एक बेर हिसाब हो जात रहे। बीच में टोका–टाकी तेलियो ना करे। भाई बीच में कुछ देले होखे, त इयाद नइखे। तेलिया जोरू से बहुत डेराइ। ओकरा से पधिला–पधिला के बात कर, जइसे जनमतुआ अँगूठा चूसत होखे– गते–गते। तेलिनियाँ बात–प–बात बेले– 'जमुनी आँखि वाली!' देखि ले जे तेलिया कवनो मेहरारू से बतिया रहल बा, त उमिर के लेहाज छोड़ि ऊपर चढ़ि बइठे– 'मरकीलवनू! असहीं लुटा देबे रे? लकठो खियावऽता मछिझोकना!' ऊहे तेलिनियाँ, जब मरद के जगहा पर बइठल होखे, त का बूढ़ का लइका, सबके बतासा देइ मुफ्ते में, हँसे आ कहे, 'जिनिगी में रखले का बा? कमा, खा आ जो किछु बच जाइ, त दोसरो के खिआ के खिलखिला।' बड़ा रंगदार चरित्तर रहे गयवा के जोरू के। बाबा राति खा, जब मये गाँव सूतल रहे मरद के झउँझार क बइठे– 'करीमन! बिरत राति में कुंडी खट खटावता। धोती के पोंछिटा खसकि–खसकि जाता, बाकिर मन बा जे सुगा के ठोर नियर कुछ–ना–कुछ खोदहीं के चाहता! अब का खोदबे रे काठ?'

भरि गाँव के ऊ भउजाई लागति रहे। मियाँ–बीबी के झकाझूमर में सउदा लिहल भुला जाइ लोग। हमरा त कबो–कबो बुझाइ, जे दूनो बेकति जानि–बूझि के रार मचावे। त्रिलोक सिंह तक ले परोजन में गयवा के नेवतसु। राति–राति भ झूमर गावे तेलिनियाँ, तबो भला पिपिही अस पाजल।

ओह दिन त बड़ा अचरज हो गइल, लला! त्रिलोक सिंह के छोटकी बुचिया के बरिआति आइल रहे। गमगम गमकत रहे गाँव। चुकचुकिया के लत्तर फेंड प ले पँवरे। भोंभा गउँजार करत रहे। छत प, आँगन में, दरवाजा के भीतर–बाहर चमचम बिजुरी। बगबग लोग सेंट गमकावत। दुअरपूजा के बेर त बुढ़िया छत पर ना गइली स, बाकिर छोकरिया सब माने ना। ऊपर झमकि के चढ़ली स। ओहिजे से खूब गीति गाँवऽ स। नीचे से छोकरा लोग उपरे देखे। ऊपर देखे आ मुसुकाइ। छोकरिया त उखमजल रहबे करेली सन। कवनो दसनयकी–पँचनयकी भरि मुट्ठी नीचे छरछरा दिहली स। नीचे के लोग खदबदाइल। तुरते कान आ मुँह जोराए शुरू। तले, फेरू ऊपर से पइसा के फेंकलउल। फेरू लाटरी के टिकट के, फेरू अबीर, फेरू पता ना का–का खाक–राख! नीचहूँ लोग उमखल। एनियो से, असहीं, पइसा के, अबीर के, सोपारी के फेंका–फेंकी ऊपर का ओर। छोकरिया सब ऊपरे से 'ही–ही' हँसे आ छोकड़ा लोग नीचे से सैन चलावे। दस मिनट ले अइसन होत रहल। बड़–बूढ़ लोग डाँटल, त सरतर–परतर पड़ल ममिला। एही बीचे, केहू एगो ढेला घुमा के...। लला, पता ना चलल के? नीचे से ढेंला ऊपर... लागल जइसे बमगोला। लागल ठीक गयवा के जोरू के लिलार प। छोकरिया रंग ले–ले के गीति गावत जात रही स आ तेलिनियाँ घूघ कढ़ले, खून बहावत बे–दम। भागलि।

'का भइल? का भइल भउजी?'

'... कुछ ना हो, तनी परतापवा के बाबूजी के चाभी दे के आवऽतानी।'

फजीरे जब तेलिनियाँ दोकानि खोलि के बइठलि, त लिलारे पट्टी।– 'अब ना जाइबि बर परिछे! बिआह करी के आ लिलार रंगाई केकर!'

त्रिलोक सिंह सुनले, त आगि में ढलला सिरिफल नियर फटले– 'ओ घड़ी काहें ना बतउए भउजी! आँखि काढ़ि के ध दिहितीं ससुरन क! का समझले बा लोग, बिआह ना भइल बेसवा के नाच हो गइल!'

– 'सब नीक से गुजर गइल, बाबू साहेब, जाए दीं। दू–एक दिन में झुरा जाई!'

– 'बाकिर इज्जति त गइलि! देसा–देसी हाला होई!'

– 'कुछ ना होई जी आ इज्जति काहें जाई? ऊ अतना तेज ना ह, जे लिलार खरोंचइला से भागे–पराए लागी।' – तेलिनिया मुसुकात बोललि– 'अच्छा, ई बताईं, जँवाई बाबू त नीमन बाड़े नू?'

– 'नीमन बाड़े भउजी।'

– 'फेरू का! जोड़–जुगुत बर मिले, बेटी खुश रहे, दूनो कुल गहगहाइ, अउर का चाहीं?'

साँझि ले अफसोस जनावे वाला लोग के भीड़ि आवत–जात रहे दोकानि। अब केहू मजाक ना करे। दू–चार दिन ले सून–सपाट लागे दोकानि। लटकल थोबर आ घुरुचिआइल आँखि। बस एक दिन, सबके सामनहीं, तेलिनियाँ दू मुट्ठी सरफ गयवा के कपार पर भुरभुरा दिहलसि– 'गरमी के दिन बा नहाते नइखे। गतर महकऽता, राम रे राम! जो, जाके नहा आउ, ना त घर में घुसे ना देबि।'

ओकरा बाद फेरू शुरू हो गइल मउज–मस्ती के टपके के सतरंगी सीजन।

माई से तेलिनियाँ कहलसि जे बेटा के हाथ जल्दी से धरा दे बहुरिया के हाथ में, त बुढ़ौती चोखार हो जाइ। बहू तेल मलि दी। गोड़ दबा दी। चूल्हा–चउका से फुरसत मिली त ठठरी देंहि फेरू से कोंचार हो जाई। माई त कब से इहे चाहते रहे। हमीं ना चाहत रहीं। माई कहलसि– 'तेंही समुझाउ, भउजी! हम त निहोरा करत–करत थाकि गइनी। किताब–कुताब पढ़ि के दिमाग खराब क लेले बा कि राम जानसु।'

'मनाही कइले बा का विराटवा?' – तेलिनियाँ अचरज से पूछलसि।

'एकदम मनाही कइले बा।' – माई बोललि।

'कवनो अएव बा का ओकरा में?'

'ना भउजी।' – माई के आँखि चुकचुकिया नियर चमकली स आ बुता गइली स– 'कहेला जे का फंदा बा! बिआह करऽ, त लइका–फइका होइहें स। अकेले त कटनी–पिटनी क के चाहे ईंट–पत्थर ढोके, गुजर हो जाई। अदिमीं बढ़ी त पचास झंझट!'

'अदिमी त बढ़बे नू करी, आ ओकर जोरूआ कुछु ना करी का?'

'कहेला जे ओकरा के बहरा ना निकसे देबि। बड़ लोग के मउगी कहँवा जाली स भूसा ढोवे?' बार सँवारि के आ ओठ रंगि के दिनभर गलचउर। बस बियाऽ आ कंचन चरऽ। हमरा ना सुहाई जे हमार बहुरिया पेट खातिर मुँह लउकावत फिरें।'

माई तेलिनियाँ के मुँह फोटो खींचे आली मशीन अस बरोंबरे निहारते जाइ।

तब तेलिनियाँ हँसि परलि, उ त बुरुबक ह, बाकिर तूँहूं कम नइखू हो राम!

माई अनखलि– 'हम का करऽतानी?'

'आरे, लइका कब अपना बिआह के हुँकारी पारेला? एकर मतलब ई त ना जे बालक ना रोवे त भोजने ना दिआइ! बिआह करा दऽ आ निहिचिंत हो जा। फेरू ओकर जोरू आ ऊ ओकर मरद। चाहे घरे राखे, चाहे बधारी। मचिआ बइठाई, त अपने खटी। बहरी राखी, त दूनो–परानी मिलि–बाँटि के खेइहन जिनिगी। जब जइसन, तब तइसन। तू कतना दिन जिअबू? कहऽ, पागल?'

गयवा अगुआई कइलसि। माई के दुलेसरी एके नजर में भा गइलि। बाजा बाजल। बिआह भइल। जे देखे, से दाँते ओठ काटे– भरिनिया के पतोहि अस सुन्नर, अत् सुन्नर जे लागे राजाजी के बाग के मलिनियाँ दोसाला ओढ़ले खाड़ बिया। हमरो चित्त ओकरा में अइसन मगन भइल, लला, जइसे मधु के खोंता में रानी माछी के। छोड़ि के कतहूँ बहरी ना जाईं। मनकरे, बभना के जनेव अस हरदमे छाती से सटवले रहीं। ऊ समुझावे जे ए तरी हाथ–गोड़ तूरि के बइठला से काम ना होई। तोहरा से नइखे होत, त हमीं आईं खटे। कबले हड़री चूसत रहबऽ? बाकिर हमार जीव ओकरा के छोड़ि के कतहूँ अउरी जाए के तनिको ना करे। ओकरा के उपरिए भरोसा दिहीं जे 'काल्हु से'; बाकिर भीतर के डोरी कटले ना कटे। माई कुछ बोलति ना रहे। फजीरे, अकास ललछहूँ होखे के पहिलहीं ईंटा के भाठा चलि जाइ। आवे त साँझि के सँगे गोड़ घिसिरावति। घर के भीतर के मए काम दुलेसरी सँभारे। माई कमात का रहे? तबो जोड़ि–जाड़ि के तीनि अदिमी के सतुआ–नून चाटे भरि होइए जात रहे। बस अतने।

एक दिन निसबद दुपहरिया में तेलिनियाँ केवाड़ी भड़भड़वलसि। हमरा देहि में आगि लागि गइलि।... ससुरी! दुपहरियो में चैन से नइखे बइठति। मति खोलु! अपने हारि के लवटि जाई। लला, दुलेसरी दरवाजा खोले त ना गइलि; बाकिर खटिया से उतरि के खाड़ हो गइलि। हम ओकर हाथ पकड़ि लिहलीं– 'सुतु ना! देखत नइखे, कतना घाम बा!'

ऊ हाथ झटकारि के मरखाह गाइ अस हँकड़लि– 'घाम तोहरे लागेला? अइसन काठ–करेज होखबऽ जनितीं, त गरदनि कटवा लिहितीं, माँग ना भरइतीं। माई खातिर घाम बरफ के फूहा नू ह?'

'बीच में माई कहाँ से आ गइलि?' – हमरा किरोध बरल।

'ना आवे के चाहीं?' – उहो गुन्नाइलि।

'ना आवे के चाहीं।' – हम हुमचि के कहलीं।

'तू चूल्हा–भाँड़ में जा तूँ आ तोहार घर! हम जातानी।' – कहत–कहत, दउरला अस जाके, ऊ दरवाजा खोलि दिहलसि।

'कहँवा जातारे रे...?' पहिला बेरि अपना जोरू के हम एगो खराब गारी दिहली। ऊ एकरा प ढेर ध्यान ना दिहलसि। कहलसि– 'कहाँ जाइबि?' – 'ईंटा के भाठा प, माई के लगे। तू कोरिह अस गिरल रहु कुलच्छन।' ऊ दरवाजा लाँघि गइलि। हमार रोआं–रोआँ खीसि के फूल से लवरि गइल रहे, लला! गत्तर–गत्तर काँपे लागल। दउरि के ओकर झोंटा पकड़लीं, घसीटत दरवाजा के भीतर ले अइलीं आ घूसे, लाते, जवन हाथे लागल ओकरा से, तबले मारत गइलीं जले तेलिनियाँ आँखि लाल–लाल गइले ठीक में ना आ गइलि।

'हरमजादा, अबले पसेना सूँधत रहले हा, अब हाथ चलावतारे' लंठ?

'तू मत बोलू, भउजीः ना त के ना छोड़बि। मुँह लड़ावे के माजा एकरा के दिखाइए के दम लेबि, चाहें मुए चाहें जिए।'

'मारे दीं, भउजी! मारे दीं टुकरखोर के। माई के त मारिए चुकल बा।' हमरो के मुआ दिही, त तमासा खतम। दिन–रात लोघड़ियाइल रहेला। निकसबो करी, त घाम तापि के लवटि आई। मारे दीं, रउवा मत बोलीं कुछु।

तेलिनियाँ ओही तरे आँखि गेंड़ोरले खड़ा रहलि दरवाजा प। ना भीतर पइसे, ना बहरा जाय। हम दुलेसरी के झोंटा छोड़ि दिहलीं। खीसि के मारे बोललो ना जात रहे कुछुओ। आँखि लटकवले, 'हुम! हुम!' करत, घर में घुसि गइलीं। तेलिनियाँ बीछी के टूँड़ अस हरमेस घूरत गइलि। ऊ दुलेसरी के कपार प, ढरकल लूगा ओढ़वलसि, केंवाड़ी बन कइलसि आ आँखि से भँभोरत चलि गइलि। जोरूवो चुपचाप गोड़ पीछे कइलसि। घर में आइलि। एक बार हमरा के देखलसि। हम खाड़ रहीं। ऊ बिना रोअले–गवले खटिया पर गिरि गइलि।

माई के अइला प ऊ ओकरा से कुछुओ ना कहलसि। चूल्हा सुनुगवलसि आ रोटी बेले बइठि गइलि। गयवो के मेहरिया केहू से कुछ ना कहलसि। दुलेसरी अब बोले कम, सूते जास्ती। तनिक नाओ–नुकुर ना करे।

'ए तरे त बेमारे परि जाइ आदिमी।' – हम कहलीं।

'तोहरा का? अपनाकाम से मतलब राखऽ। केहू बेमार परे, चाहे मुए।' – ऊ भुनुकलि।

'अइसन कठेठ मति बोलु रे...।' हमरा दुख बरल।

'काहें ना बोलीं? फेरू मरबऽ का? मारऽ। भरि जीवन मारि लऽ, बाकिर साँच कहि देतानी, माई अब ढेर दिन जीही ना। कतहूँ चिरूकी जो काटि गड़ले होखऽ, खोदि–निकालि लऽ मजल का साथे मुर्दघटिया त जाहीं के परी।'

'तें....' – दोसरका हाली फेरू उहे खरबकी गारी।

तिसरका दिने माई भाठा प ना गइलि। चउथा दिन आइल त सोचलीं, आजु त आई। ओहू दिन ना भइलि। लगातार सात दिन तक ऊ कतहूँ ना गइलि। छठवें दिने घर से सब दाना–पानी चुक गइल रहे, माई खातिर कवनो दवा–दारू ना कइलीं तबो। दुलेसरिए अँगना में जामल तुलसी के पतइन के कबो काढ़ा बनावे, कबो माथ प आ पेट प माटी लीपे। कबो बाँहि टोए, त कबो सकर–सकर करत छाती मले। मने–मन रोए। हमरा से कुछ कहे ना। भाई खाँसत कहे– 'भइले का बा? तनीए सा जीव असकतिया गइल बा...।' काँपे। हम सोचीं– 'अब काम प जाहीं के परी। सुबह सात बजे से साँझि पाँच बजे तक रगड़ा खा। पचीस रूपया मिली। थाकि के घरे आवऽ। खा–पी के सूतऽ, त किरिन फूटे के पहिले आँखिए ना खुली।'

आठवाँ दिने हमार आँखि जल्दिए खुलि गइलि। ओ दिन माई के आँखि मुदाइल, त फेरू कबो ना खुललि। सबसे पहिले दुलेसरी जागलि रहे। ओकरा बाद हम। घर में सबसे पहिले तेलिनियाँ आइलि। ओकरा बाद गयवा। तब जाके मए गाँव। हमरा से केहू ना बोलत रहे। दुलेसरी से सभे बोलत रहे। ऊ केहू से लजइबो ना करे। बड़ा अनख बरे, लला! मन करे जे सउँसे गाँव में किरासन छिरिकि के आगि लगा दीं। दाँत कटकटा के रहि गइलीं। माई के लगावे खातिर घीव तेलिनियाँ लेके आइलि। पहिने खातिर सफेद सारी नउनियाँ लेके आइलि। बभना धूप, अगरबत्ती आ घरीघंट लेके आ गइल। हमरा से केहु कुछ पुछबे ना करे, त हम का करीं?

जब चाँचरि दुआरी से हटलि, त हम पछाड़ खा के गिरि परलीं।

'अब रहे दे बिसुरल।' – दुलेसरी बोललि 'घरिआर के लोर अइसने होला।'

तीसरा बेरि उहे खरबकी गारी बोलत–बोलत हम रहि गइलीं। तेलिनियाँ दूनों हाथ पकड़लसि, दुलेसरी दूनो गोड़, त्रिलोक सिंह डाँड़ के नीचे से हाथ लगवलें आ हमरा के, घर के ओही खटिया प पटकि दिआइल, जवना प सात दिन ले परल–परल माई

बिना गारी दिहले मरि गइलि रहे।

गयवा बहरी से सिकड़ी लगा दिहलसि आ दुलेसरी से कहलसि– 'अब चलऽ बेटी। सात कोस पएदल त चलि जइबू नू?'

इयाद नइखे, दुलेसरी कवनो जबाब देले रहे कि ना कि खाली मुड़िए हिला के रहि गइल रहे। हमार कान जबदि गइल रहले स कि लोगवे बतिआवल बन क देले रहे। मअ् घर एके बार झाँय–झाँय बोले लागल रहे। कवनो एगो मकसद सूझत ना रहे। हारि के खटिया प ओठँघि गइलीं। उतान होखलीं, त घर के सब छाजन लउके। – 'साला! बरिसात में इहो चुई।'

गदह्बेरि में दुलेसरी सिकड़ी खोललसि। अधिभिंजल बस्तर में। बरफ अस अँगुरिन से कुरेदि के हमरा के जगवलसि– 'चलऽ, हाथ–मुँह धो लऽ। कबले गिरल रहबऽ अइसे?'

हम ओकरा ओरि हाथ बढ़वली दोसरा रुख से, ऊ हमरा ओरि हाथ बढ़वलसि दोसरा रुख से।

'दिन भर त भूखे रहल होइबऽ! लऽ खा लऽ कुछु। पेट त का भरी, पेट में पहुँचिए जाउ त समझि लिहऽ माई तरि गइलि।'

'का ह?' – हम घूरलीं।

दुलेसरी कहलसि– 'तीनि गो पेड़ा, चीनी के' आ लला, दस दिन पहिले के पिटाई के ओकर मए घाव खुलि गइले स– 'माई रे।'

■■ तिवारीपुर, दहिवर, बक्सर–821160 (बिहार)

दू गो कविता

■ कन्हैया पाण्डेय

तुहीं ना बतावऽ धनि

तुहीं ना बतावऽ धनि
कइसे छोड़ी गाँव हो।
ममता–मयरिया
जकड़ले बा पाँव हो।

कइसे भूल जाईं हम
बाबू के दुलरवा
एक कइले रहे माई
अँगना–दुअरवा
बूढ़ आंखि खोजत फिरे,
लेइ–लेइ नांव हो।

बचपन में बाबू घूमें
कन्हिया प लेइ के
खूंटवा में बान्हें माई,
बायनो के सेइ के
ढ़ापि के सुतावे हमें,
अंचरा के छाँव हो।

होखे कब्बो हमरा जो
दरद–बोखरवा
कोरवा उठाय भागे,
बैद के दुआरवा
सबसे छिपावत फिरे
हिअरा के घाव हो।

चढ़ल खीस आपन

तनी आपन आदत सुधारे के होई
घरौंदा न कवनो उजारे के होई

तनी में जे लहके तनी में बुता जा
उ आगी जरूरे पुआरे के होई

जनावर जे भागल मुवल मांस लेके
जरूरे उ करतब सिआरे के होई

समुझ–बुझ लेईं न झगरी परस्पर
इ झगरा लगावल लबारे के होई

उठल ज्वार भीतर त भितरे दबा लीं
चढ़ल खीस आपन सम्हारे के होई।

■■ उ0 मा0 विद्यालय, टण्डवा, बलिया

कहानी

सुगिया

■ सुरेश कांटक

हँ जी, एकर नाव सुगिया ह।

आई, मिल लीहीं एकरा से। देखीं, छोट कद। थुलथुल देह। मटमइला थूसर आँखि। अधपक्क–खिचड़ी छोटे छोटे बार। साधारने पहिरन–ओढ़न। बाकी बोली मरद जइसन, भभड़ाह। ना देखे में सुन्नर, ना सुने में मिठगर। सँउसे गाँव घूमि आवेले अकेले। कबो, कवनो बेरा। रात–विरात, फजिर–दुपहरिया, भा साँझ बिहान। तनिको डर–भय ना देह में। एकदमें नीडर। अजबे औरत हीयऽ। गाँव–गली में चलेले त लोग देखते थथम जाला। आवऽतिया सुगिया। जरूर कुछ कही। कही का, आपन फरियाद सुनाई!

गाँव में एक पीस हइये हीय। सुनबो करी लोग ठाढ़ होके एकर बात। बाकिर जब घसकि जाई, त ठहाका लगाई, रार बेसहले बिया भाइये से। बहिन होके लड़ा देलस भाई के। केहू के कहल ना मनलस। सिपाही, दरोगा, कोट–कचहरी सभ एकरा ठेंगा प।

बाकी आगे के बात जाने से पहिले एगो बात कहब रउवा से। माफ करब हमरा के, सुगिया के एकरा–ओकरा कहला खातिर। सँउसे गाँव इहे कहेला ओकरा के। आदर वाला बोली नाबोले। मुँ प भलहीं हँ, हूँ। ठीके कहत बाड़ू। तहार गलती नइखे। तू त अपना हक के लड़ाई लड़त बाड़ू। कह दीही। बाकि जसही अन्ह होई, एकरा–ओकरा, बेकहल, छछबेहर, जइसन ओछ सबद बोली। ऊहे सभ बोलिया हमरो लत लाग गइल बा। सुगिया के आहो, अजी, रउवा, केहू ना बोलो। तहरा के, बदले तोरा कहेला। छोड़ीं, जाये दी। अब मूल बात प आई।

सुगिया के बियाह ओकर बाबू कमे उमिर में क देले रहन। आपन जाँघ पवित्तर करे के साध पुरावे खातिर। लइकवा मलेटरी में रहे। बबूर तर आम भेंटा गइल उनुका। घर के चार बिगहा बपहँस खेत रहे। एक बिगहा कोइराड़ रहे। नीके तरी घर–गिरस्ती चलत रहे। कवनो हरज ना रहे। ओही में से दस काठा खेत बेच दिहलें आ खूब रउज–गउज से बाजा–गाजा, नाच–समयाना का साथे बेटी बिआह दिहलें। एके बेटी रहे बेचारू के। सूगा कहत रहन प्यार–दुलार से। ई त गाँव–मोहाला के लोग ओकर नाव बिगाड़ के सुगिया कहे लागल। आ तबे से ऊ सुगिया कहाये लागल।

सुगिया के भाइयो एके रहन। उनुको कवनो अमनख ना रहे खेत बेंचि के बेटी के बिआह कइला के। गाँव–घर के कवनो शादी–बिआह असही होखबे करेला। चाहे किसान के होखे, चाहे मजूर के। किसान आपन खेत बेचेला। मजूर आपन मेहनत बेचेला। केहू से करज–गुलाम ले लीही। काज–परोजन निपटा लीही। बाद में भलही साल–दू साल केहू के बन्हुआ–बनिहार बने के पड़ो, भा लइका–लइकी के चरवाही–हरवाही खातिर मालधनी के सँउपे के पड़ो। भा अपने बुढ़वती तक ले हाड़ के चूना बनावे के पड़ो।

बाकिर देखीं सुगिया के भाग। करम में लेंढ़ा लिखाइल रहे। गवना के साड़ी अबहिन धूमिलो ना पड़ल कि आ गइल काम प से तार। पेन्हे के परि गइल रँड़सारी। जवानी के देहि तनिको कुम्हिलाइल ना रहे बेचारी के। फूल जइसन उगल रहे, गम–गम गमकत गदराइल देह। ना जाने कवना मुहई के नजर लाग गइल। पाकिस्तान अइसन रार बेसहलस कि ओकर मरद सीमे प शहीद हो गइलें, छाती प गोली खा के। सूगा अब सूगी हो गइली आ जब लोगन के छाती के दाह ठंढ़ाइल, सुगिया के नाव धरा गइल।

अब का करस सुगिया के बाबू। बेटी के बेवा भइला के दुख अइसन समाइल छाती में कि ओही हूक से ऊ खटिया ध लिहलन। एगो भाई रहन निठोहरा के, किसुन जी। अब धंसगर हो चलल रहन। बहिन के साथे भइल घात के सुनते ओकरा ससुरा दउरलें आ लिया अइलें अपना सँगे, अपना गाँवे।

भाई के अँकवारी में बान्हि के बिलिख–बिलिख के रोवलस सुगिया, आ गइल भाई के साथे अपना गाँवे। उदास माँग, सुन हाथ, मुरझाइल चेहरा, आ ढ़हुआइल देह देखते पूरा घर बिलखि उठल। टोल–पड़ोस के मेहरारू सभी जुटली स, त गगरिन लोर बहवली स। सुगिया के करम–भाग प तरस खा के खूब सरपली–गरियवली स दइब के। बाकी जवन होखे के रहे, तवन त हो गइल रहे, जाये वाले के लवटि के आवे के त रहे ना।

कुछ दिन ले भाई–भउजाई, माई–बाबू तरहथी प उठवले रहलन सुगिया के। समय के कबूतर दिन–रात के पाँखि मारत जइसे जइसे आगे बढ़त गइल, सुगिया के गोड़ तर के जमीन घसके लागल। मरद के शहीद भइला के बाद सरकार से

पुरहर पइसा–कउड़ी मिलल त सुगिया के ससुरा के लोग ओकरा के अपनावे खातिर खीच–खाच करे लगलें आ आवा–जाही सुरू क दिहलें।

एने सुगिया के भाई किसुनो जी के नजर लागल ओह गोट माल प। दीदिया के गोड़ पर सोहरि गइलें।

भइल बिपत सुगिया खातिर। आल्हर जीव, केकरा के धरो, आ केकरा के छोड़ो। सुगिया के ससुरा के लोग कहे कि हमरा केहें चलऽ किसनु जी कहस कि हम अपना बहिन के भेजबे ना करब। खटिया धइले रहन बेमार बाप, उनुकर मनसा रहे कि कुछ दिन बितला के बाद सुगिया का दुख के घाव भरि जाई, त एही पइसा से ओकर दोसर बिआह क देब।

बाकी बूढ़ बाप के बात के सुनेला? सुगिया के परान उल्ह मेल्ह में पड़ल रहे। सही निर्णय लेबे के होस ना भइल। मोट माल के चक्कर में किसनु जी और सुगिया के ससुरा के लोग आपस में खींच–खाँच क के झड़पो–झड़पी क लेलन। तहरा के बताइब, त तहरा के बताइब होखे लागल। सुगिया का करो, बुझाते ना रहे। टोला–मोहाला में बेवा मेहरारून के हालत आ गोतिन–देयादिन के खोभसन सुनले रहे। अकेल जिनगी के सुन्न अन्हरिया रात ओकरा लउके लागल रहे। ससुरा के लोगन के लड़ल–झगड़ल देखलस त अचके मुँह से निकलि गइल– "हम ससुरा ना जाइब। बाबुए–माई के घरे रहब।"

"तहार हक–हिस्सा कुल्हि गायब हो जाई। सभ सोचि के कहिह।" ससुर–भसुर कहलें।

"जब हमार सेनुरे ना रहल, त हक–हिस्सा रही भा जाई, हमरा ओकर फिकिर नइखे।"

"हमरा बल–अउसाय होई त हक–हिस्सा ले लेहब। केकरा बाप से रोकाई।" बीचे में किसुन जी बोल पड़लें।

"तू हमनी के धमकावत बाड़? तहार बल बउसाय देखि लेब जा। अइहऽ तब फरियाई। इनिका अबहीं बुझात नइखे नू। भाई–भउजाई के बल पर कूदत बाड़ी। बाद में छछनो–पाती रोइहें। केकर भाई–भउजाई साथ देले बा? पइसा झीट लीहें स त दूध के माछी बनि जइहें। ना घर के रहिहें, ना घाट के। ठीक बा, हमनी के जात बानी जा।" ससुर–भसुर दाँत किट–किटावत चल दिहलें।

किसुन जी, बहिन के पाँव ध लिहलें। "बहिनिया, मोछि के पानी राखि दिहले। तोरे प जय–विजय रहे। तोरा एह घर में कवनो चीज के कमी ना होई। हमार मेहरारू, तोर सेवा करी। बेटा–बेटी तोरा गोड़तारी लोटिहें स। तें कवनो बात के चिंता मत करिहे। ते दूध के कुल्ला करबे। जिनगी भर पिनसिन मिली। दोसर बिआह के बात सोचबो मत करिहे।"

भाई के तोख–बोध से सुगिया के मन गद गद हो गइल। घर–दुआर, खेत–बधार सभ सम्हारे लगली। कब का करे के बा, आग–पाछ सोचे लागल। माई–बाबू के घर माटी के रहे। छप्पर खपड़ा–नरिया के रहे। एगो बैल रहे। एगो बछिया रहे। लइकन–फइकन के कपड़ा–लता जस–तस रहे। सूते–बइठे के बँसखट आ तरकुल के चटाई रहे। ओढ़े–बिछावे के लेवा–गुदरा रहे।

सुगिया सरकार से मिलल गोट पइसा से ईंटा के घर बनवा देहलस, पत्थर से छत पटवा देवलस। हर जोते खातिर एगो धावर बैल कीन देवलस। काहें कि ओह घरी खेती में टरैक्टर आइल ना रहे गाँव में। किसुन जी के नान्ह–बार के नया नया पाएँट–कुरता कीन देलस। सूते–बइठे खातिर दूगो चउकी कीन देलस।

भाई के लथराइल घर सोझिया गइल। भउजाई नया नया साड़ी झमकावे लगली। सुगिया के मान–जान बढ़ि गइल। गाँव–घर टोला–मोहल्ला सुगिया के बाह! वाह! करे लागल। किसुन जी के धनहर खेत में धान गेहूँ लहराये लागल। यूरिया, डी0ए0पी0 डलाये लागल। तेलहन–दलहन, साग–सब्जी मिले लागल, अपना बोरिंग से समय से पानी। घर–गिरस्ती सभ बग–बगा गइल।

इहे चीजवा कुछ लोग के करेजा में तीर अस लागल। सोचे लगलन– "अरे, ई त कुछुए दिन में धइले धराई ना। मारऽ ना कवनो लँगड़ी कि चारो खाना चित्त हो जाय। बच्चू बड़ा उड़ल–फिरत बा।"

भीतरे–भीतर बात पहुँचि गइल, सुगिया के ससुरा– "तोहरा लोग के पइसा से दोसर माल मारत बा, तू लोग भकुआइल काहें बाड़ऽ। कुछ खींच ल लोग। ना त फेरू हाथे ना लागी।"

हितवन के बात रूचल त भेज दिहले स घर के एगो पढ़वइया लइका के सुगिया से नाता लगावे खातिर– "जो चाची से कहिहे, पढ़े–लिखे खातिर कुछ मदद करऽ।"

लइका आइल त चाची के गोड़ प सोहरि गइल। "चाची हो बड़ा संकट में बानी। बुझाता कि पइसा बिना हमार पढ़ाई थउसि जाई। जिनगी खराब हो जाई। तहरा रहते हम इंजिनियर ना बनि पाइब। चाची हो, आपन बेटा समुझि के हमार जिनगी सँवार द। जिनगी भर तहार गोड़ धो के पीयब तहार नेकी

ना भुलाइब।" लइका छछनो–पाती रोवे लागल। ओकरा लोर से सुगिया के आँचर भींज गइल। आँखि बदरी अस टपके लगली स। करेजा में हूक उठि गइल। ममता उमड़ि पड़ल। मातृत्व छलकि उठल। कंठ भर–भरा गइल।

"कतना पइसा के जरूरत बा बबुआ?" लइका से पूछली।

"कतना कहीं चाची, तू जवने देबू, तवने तहार आसिरबाद समुझब। हमार जिनगी अब तहरे हाथ बा। आपन बेटा समुझिह। असमन जनिहऽ कि तहार बेटा तहरा चरन में गिरल बा। उठा ल गोदी में।"

कवनो मतारी अपना बेटा के अतना बिलखत ना देखि सकेले। सुगियो त मेहरारू रहे। कइसे काठ करित अपना करेजा के। मोम अस पिघिल गइल ओकर हिरदय। सँउतल सपना साकार होके सँसरे लागल हियरा में। फूटि परल झरना के सोत। कहलस, रोव मत बेटा, अबहिन हम जीयत बानीं। लऽ हई बैंक के पास बुक। दसखत क देत बानीं। चलऽ निकाल ल जतना जरूरत होखे।

सुगिया के धधकत करेज तनी सा ठंढ़ई पावते बदरी अस बरिस गइल।

लइका पइसा ले के चाची के गोड़ लगलस आ चल गइल कहि के, चाची, कबो कवनो जरूरत होखे, अन्हारे–अँजोरे, तनिको सकुचइह जनि खबर भेंजि दीह। हम तहरा सेवा में हाजिर हो जाइब।

ओकरा जात खा, सुगिया के आँखि सावन–भादो के बदरी बनि, गइल रही स। अपना मरद के जिनगी, आ ओकरा सँगे रहल–मिलल सुख के इयाद ओकरा के ससुरा से जोर देलस। उहँवा के लोग बरबस याद पड़े लगलन। सास–ससुर, भसुर–जेठानी, देवर आ भरल पूरल परिवार पहिला बेर ओकरा हियरा में हिलकोरा मारे लागल। अपना परिवार के भर नजर देख लेबे के चाह से ऊ हहरि उठल। मनबेदिल हो गइल ओह लइका के जाते। मन मारि के बइठि गइल चउकी प, घर के एगो कोना में।

ई देखते भउजाई के करेजा प साँप लोटि गइल। सुख ना सवारथ का दो जरेला अकारथ टुभुकि दिहली। कवन नाता बा अब ओकनी से कि रोआँ गिरा लिहलू? कतना झींटि के ले गइल हा। राते–दिने जे करत बा ओकरा खातिर लोर ना नू गिरल होई। इहे कहाला, "मरि मरि कइनी कतवनी, खा गइल चूत मरवनी। आपन ह से आपन ह, बिराना बेटीचो.... ह।" हमनी के कतनो करब जा, हमनी के कतनो करब जा, बाकिर हमनी के नाव ना होई। इहँवा मन नइखे लागत त ओहिजे जा के रहऽ। रोवाँ काहें गिरा लिहलू?

सुगिया के भउजाई के टिबोली–बरदास ना भइल। मन कड़ा क के बोलल– "अइसे काहे कहत बाड़ू ए भउजी? लइका पहिला बेर आइल रहल हा। तहार का बिगाड़ देलस?"

"कहलू नू। तहार मन ओहिजे बसत बा। आज पता चलल। नइखे बरदास होत त कहऽ दोसर बिआह करवा दीहीं। भा ओहिजे चल जा। बड़ले बाड़न स सेयान–जवान देवर।" नव मन अउरी लादि दिहली भउजी।

सुगिया के जीव तड़पि उठल, भउजी के बात सुनि–समुझि के। ई दिने–राती इहे सभ सोचत होइहें, तबे त मुँह से निकल गइल। हमरा मन में त कबो ई बात ना आवत होई। अनेरे हमरा के बदनाम करत बाड़ी। बाकी मन के बात मनहीं में राख लेलस सुगिया। सोचलस, कबो पसगबत में ई सभ बात कहब भइया से। ऊहे इनिकर खबर लीहें।

कइ दिन गुमसुम में बीत गइल। ना भइया के समय मिलल, बहिनी से कुछ पूछे के, ना बहिनी के मोका मिलल भइया से भउजी के बात कहे के। बाकिर भउजी के लाई लगावे के मजगर मोका मिल जात रहे। मरद के कान फूँक दिहली पलखत पावते। किसुन जी के मन–मिजाज में भेद डिभिया गइल। गाहे–बेगाहे सुगिया प नजर राखे लगलन। कब केकरा से बतियावत बिया। कब केकरा केहे जात बिया। के का बतियावत बा। उनुको मन में भीतरे–भीतर लालच के साँप सुरसुराये लागल।

एने सुगिया गाँव–घर के लोगन से घुले–मिले लागल। किसिम–किसिम के बात सुने के मिले लागल। केहू दोसर मरद क लेबे के सलाह देबे, केहू काली माई के मंदिर बनावे के राय देबे। ऊँच–नीच, आग–पाछ सभ सुनत सुगिया भावना के उड़ान छोड़ि के ठोस जमीन प पाँव टिकावे लागल। पहाड़ अस अकेल जिनगी अकेले काटे के अलावे दोसर कवनो राह लउके ना। सुन्नर–सुभेख रहित त कतने भँवरा आगे पीछे भन–भनइतें। ओही में से कवनो के आपन पराग सँउपि दिहित। बाकिर दूर दूर ले अइसन कवनो नजारा ना लउकल त मन अहथिर क लेलस। जवानी कब चढ़ल, कब उतरे लागल तनिको ना बुझाइल। जब बुझाये के मोका रहे, तब मरद के हूक अइसन झकझोर देलस कि सभ कुछ झरि गइल।

अब टोल–पड़ोस के भइया–बहिनी के दुख ओकरा आपन दुख बुझाये लागल। 'आरति के गति

आरत जाने' वाली बात भइल। सुगिया सभके दुख–सुख में हाथ बँटावे लागल। पइसो–कउड़ी से लोगन के मदद करे लागल। कालियो माई के मंदिर में नया मूरत बइठा देलस। गाढ़–सकेत में लोग सुगिया के दरवाजा खटखटावे लागल।

ई बात किसुन के मेहरारू के तनिको ना सोहाइल। उड़ली ना बुड़ली, मरद के ललकार दिहली। सास–ससुर एही बीचे सरग सिधार गइल रहे लोग। घर के मलकिनी ऊहे रहीं। सुगिया त थानी रहे ना, उड़ियाइल–बुड़ियाइल इनिका सरन में गिरल रहे। सभ कुछ कइला का बादो ओकर कवनो कदर ना रहे। मरद से कहली– "ई राँड़ नइखी भइल, साँढ़ हो गइल बाड़ी। खात बाड़ी हमार आ पइसा कउड़ी उड़ावत बाड़ी दोसरा प। जल्दी से जल्दी कुछ हाथे लगा ल। ना त फेनु हाथे ना लगिहें। कवन ठीक बा, कबो–कवनो के लेके निकलि जात बाड़ी। देखत नइखीं घर में कइसन कइसन लोग के आवाजाही लागल बा। अब पगड़ी रहे ना दीहें। अँखफोर हो गइल बाड़ी।"

किसुन जी के बुझाइल कि साँचे बात मउगी कहत बिया। ससुरो वाला लसतागा लगवले बाड़न। सभ टान लीहें स।

एक दिन सुगिया से कहलन– "कुछ पइसा दे बहिनिया। बड़ी करजा में बानी। गाँव के महाजन बेआबरू करे प लागल बाड़न स।"

"हमरा भीरी पइसा नइखे। तहरा खातिर सभ कुछ कइये दिहनी। अब हमरो देह–नेह, बेमारी खातिर कुछ रहे द। जब सभ कुछ ठीके–ठाक चलत बा, त करजा काहें के लेले बाड़ऽ?"

"तोरा ना नू बुझाई। खेती में कतना खरचा बा। तोरा त बने–बनाई खाये के मिल जाता। खात बाड़े आ घरे घरे घूमत बाड़े। हमार बाल–बच्चा मारल फिरत बाड़न।"

"कहि देनी नू, हमरा भीरी पइसा नइखे।"

"पिनसिनिया का हो जाता?"

"तहरा नइखे बुझात?"

"ना।"

"त हमरो नइखे बुझात।"

"त तें आपन देख। हमरा से ना चली तोर खरच।"

"हम तहार नइखीं खात!"

"त केकर खात बाड़े?"

"आपन! जतना खात बानी ओतना तहरा बाल–बच्चा में लगा देत बानीं।"

"आज के बाद से हमरा बाल–बच्चा में एको पइसा मत लगइहे। तें हमार घर छोड़ दे।"

"ई तहार घर ना ह। हमराबाप के घर ह। हम बनववले बानीं।"

"एही भरम में बाड़े का? जबे चाहब तबे झोंटा ध के घर से निकाल देब। तोरा चलते केहू हमरा घर में ढुकि जाता। गुंडन के अड्डा ना ह ई। हमार घर ह।"

सुगिया के परान टँगा गइल, किसुन जी के मुँह से ई बात सुनि के। एक प एक आँखिन में लोर उमड़ि पड़ल। भाई होके हमरा प ई अइसन लांछन लगावत बाड़न। हम दुखी लोगन के जरूरत प मदद क देत बानी, ओकर अरथ ई दोसर लगावत बाड़न। फफकि फफकि के रो पड़ल सुगिया।

एही घरी एगो तीर मरली भउजी– "देख लिहनी नू इनिकर छहित्तर। तिरिया चरितर देखावे लगली नू। अउरी पिआई साँप के दूध। राउर ना भइली त केहू के ना होइहें। गवने भतार के खइली। अब हमरो परिवार के उजाड़े प लागल बाड़ी। बढ़िया बा, ई अपना घरे दुआरे जास। हमार घर छोड़ देस।"

"ई तहरा बाप के घर ना ह। हमरा बाप के घर ह। एमे हमरो हिस्सा बा। हमार हिस्सा बाँट दे।" सुगिया भर आँखिन लोर भरले बोलल।

"सुनि लिहनी नू? अब अउरी कुछ बाकी बा? इनिकर झोंटा ध के बहरी काहें नइखीं घिसियावत? हाथ में दही जामल बा? मरद ना हई। जाईं इहँवा से। दम इनिकर कुल्हि करम क देत बानी।" अतना कहते भउजी सुगिया के झोंटा ध लिहली।

अब सुगिया का करो? सभी कइल धइल बेअरथ हो गइल। रोवल बन क के ऊहो ध लिहली भउजी के झोंटा। होखे लागल झाका–झूमर भउजी के मरद उहँवे रहन। कदुआइल रहन। केकरा के का करस? ऊ मेहरारूए, ऊ बहिनिये। अरे! अरे! करत रहन, तब ले मेहरारू छोड़लस बान।

"तोर मेहर हीयऽ का रे। सोझा खाड़ हो के हमार गती करावत बाड़े। हाथ में दही जामल बा। अब एकरे साथे रहिहे। हई हऊ करिहे। हिंजड़ा!"

एहू से फूहर–पातर बात उगिले लगली किसुन बो। बहिन के लगा के। अब भला किसुन जी से बरादास होखो। जाग गइल मरदानगी। लात मूका शुरू क दिहले सुगिया प।

सुगिया, भउजी के कहला में भइया के मारल देखि के बिफर उठल। ओकर होस गायब। जवना भइया के दुलार–प्यार में पड़ि के हम ससुरा तेयाग दिहनी, ऊ भइया हमार ई गती बनावत बाड़े। आहि हो बाबू! बाबू के आहि आइल। माई हो माई। माई के दुलार इयाद पड़ गइल। सुगिया बेहोस हो गइल।

दाँत–काठ लाग गइल।

"देखनी नू एकर नखड़ा?" भउजी अपना मरद का ओर तकि के कहली।

किसुन जी मारे के त मारि देलन खूब बाकिर जब सुगिया बेहोस हो गइल, उनुको कठेया लाग गइल। "ई हरामजादी मेहरारू हमरा के फँसा दीही अब का करीं?" खीसिया के दाँत पीसत बोललें– "एकरा मुँहवा प पानी डलबे कि तोरो कुछ बाकी बा?"

मेहरारू उनुकर तेवर समुझि गइल। झट से गिलास में पानी ले आइल आ सुगिया के मुँह पर छिरिके लागल। दाँत बइठल रहे, तुरंते दाँत छोड़वलस। आँखि पानी से पोछलस। सुगिया के आँखि खुलि गइल। ऊ भोंकार पार के रोवे लागल। दूनो मरद–मेहरारू ओकरा के रोवत छोड़ि के हटि गइलन।

अँगना में खेलत रहे किसुन जी के छोटकी लइकी। सुगिया के रोवत देखलस त पहुँचि गइल ओकरा भीरी। ओकर मुँह देखत पूछे लागल– "काहें पुआ, काहें लोअत बाड़ू? के मालल हा? चुप लहऽ पुआ, चुप लहऽ।"

लइका के बुधी, ऊ का जानत रहे रोआई के कारन। कइ बेर इहे रट लगवलस।

सुगिया ओह लइकी के गोदी में सटा लेलस आ सुसुके लागल।

कुछ देर बाद जब सुगिया के लोर सूखल, ऊ एकदमे बदलि गइल रहे। सोचलस, भउजी हमरा के उपहिया कहले बिया हमहूँ घानी बनि के एकरा के देखाइब। अपना बपहँस में आपन हिस्सा ले के मानब। दोसरे दिन से ऊ आपन रसोई अलगे बनावे लागल। टोल–पड़ोस, गाँव–मोहाला सगरो भाई–भउजाई के बात पुँगा आइल। मेहरारू सुनली स त दाँते अँगुरी कटली स। "अहि ए भगवान, जेकरा खातिर ई बेचारी आपन सभ धन–दउलत लुटा देलस, ओकर ई हाल! पंचइती क द सूगा। ना त तहरा के रहे ना दीहें स।"

सुगिया पंचाइत बटोर देलस। बाकी कवनो पंच परमेश्वर ना निकललन। सभे ओकरे के समुझावे लागल– "एक पेट बाड़े, काहे के रेड़ बेसहले बाड़े? जवन मिलत बा चुपचाप खो आ परल रहु। केकरा खातिर हक–हिस्सा आ खेत–बधार लेबे?"

"ई कवनो पंचइती भइल। रउवा सभे मुँह देखल बात कहत बानी कुकुर कवरा खाई आ रोज रोज खोभसत सही? गारी–मार खाईं? ई हमरा के खदेरल चाहत बाड़े स। हम अब कहँवा जाईं। ससुरा में अब के बा। कबे तेयाग दिहनी। आपन रुपिया लगा के एकर घर–दुआर खेत–बधार सभी सँवार दिहनी। अब दूनो बेकत मिलि के हमरा के मारत बाड़न स। कहियो मारि के मुआ दीहें स। जहर–माहुर दे दीहें स। हम एकनी सँगे ना रहब। हमार हिस्सा बँटवा दीही सभे।" सुगिया अपना जीद प अड़ल रहि गइल।

पंचइती उठि गइल। "जो जवन मन करे तवन कर। हमनी के कवनो मतलब नइखे।"

अब का करो सुगिया? केहू ओकरा पछ में बोले खातिर तेयार ना रहे। किसुन जी गाँव भर घूमि के कहि आइल रहन। भाई–बहिन के ममिला बा, केहू हमनी का बीच में पड़ी त ठीक ना होई। दू चार गो गारियों–फजीहत सुनवले रहन। जे जाई ओकरा पीछे ओकर हई–हऊ करब।

सभे हड़कि गइल। जेकरा मोट रहे किसनु जी से उनुका नीमन मोका मिलल। सोचलें, बढ़िया मोका बा, किसुना से बायनो फेरा जाई आ सुगिया से कुछ हाथे लागियो जाई।

ऊ लोग सुगिया के मदद करे खातिर तेयार हो गइल। गाँव के पंचइती से निराश हो के सुगिया थाना प केस क देले रहे। उहो लोग गवाह बने खातिर तेयार हो गइल। सुगिया के मन में भउजी के थानी आ उपहिया वाली बात ओकरा हिया के कचोटत रहे। ऊहो एही जीद में आ गइल। किसुनो जी अब बहिन के दुश्मन बनि गइल रहन। झूठ–साँच कहि के ओकर इज्जत उघारे लगलन। गवाह लोग के लहि गइल, आपन जरूरत बता के सुगिया से मनमाना पइसा अँइठि लिहल लोग।

थानादार आइल त ऊहो इहे बात कहलस– "मिलजुल के रहु। केकरा खातिर हक हिस्सा लेबे? भाई के चैन से रहे दे। ओकरा पाँच गो बाल–बच्चा बा। तोरा के बा? आगे नाथ ना पीछे पगहा। गवाहन के रूपिया पइसा मत दे, ना त लूटि लिहें स तोरा के। फेर लवटइहें स ना। जान के दुश्मन बन जइहें स।"

"जान के दुश्मन त हमार भइयवे बनल बा। कहत बा कि कहियो गड़ासी से गुरिये–गुरिये काटि के नदी में बहवा देब। ओकरा डरे हम टोला पड़ोसिया के घरे खात–सूतत बानी। ओहू लोग के गारी–फजीहत करत बा। जे गली गली हमार इज्जत उघारे, ऊ हमार भाई कइसन? रउवा हमार केस आगे बढ़ाई, ना त हम कोट–कचहरी में जाइब।"

दरोगा जी के मन में जाने का आइल, कहलें– "थाना प आ के मिलिहे, तब तोर केस आगे बढ़ी।"

"ठीक बा, हम आइब, रात में आईं कि दिन में?"

दरोगा जी दहलि गइलें। ई त बड़ा थेथर मेहरारू बिया। हमरो के फँसा दीही। रूपिया के गुमान में बिया। कुछ खीच लीहल–चाहत बा। जौ जानो आ जाँता जानो, आपन काम बना लेबे के बा। कहलें– "बारह बजे दिन में अइहे। सही सही बात बतइहे। दान–दछिना ले ले अइहे। तोर केस बढ़ा देब।"

दरोगा जी लवटि गइलें।

सुगिया गवाह लोग के दुआर खटखटावे लागल। बाकि गवाह लोग आपन काम बना ले ले रहन। लौटा देबे के बहाने मुँह माँगा दाम झींटि ले ले रहन। केहू सुगिया के सँगे जाये खातिर तेयार ना भइल। खेती–बधारी के ताव बता के दिन टारत रहि गइल। किसुन जी सगरो बात पटा देले रहन। "जवन बेटी... पहिले उनके से फरियाई।" के जाइत झुर से झगरा करे आ धूरि में जेवर बरे।

मरता का नइखे कर सकत। सुगया के देह में अब कवनो बात के डर ना रहि गइल रहे। अकेले पहुँचि गइल थाना प, आ पइसा दे के आपन केस बढ़वा देलस आगे।

बाकी आगे केस कइसे सँभरी? इहे चिंता ओकरा दिमाग में अँटकल रहे। गाँव–घर के देख लेलस। पइसा खा के बइठि गइल। अकेल जियरा कइसे का करो। घरे घरे घूमि के बतियावे लागल मेहरारुन से। कहे लागल आपन दुख। गरियावे लागल गवाहन के, जे पइसा ले के बइठि गइल। देबे के नाव नइखे लेत। देखते मुँह फेर लेत बा।

मेहरारू कहली स– "ससुरा वालन से काहें नइखी स कहत रे बचिया। ऊ जरूर तोर मदद करिहें स।"

गाँव के लोग नइखे करत, त ससुरा के लोग के कवन विश्वास बा। जेकरा के तेयाग दिहनी, ओकर कवना असरा।

"एगो लइका रहे नू, जवना के पढ़े खातिर मदद कइले रहू?"

"हँ, रहे। बाकिर ओकरा कवन ठीक। अपना पढ़ाई–लिखाई में बाझल होई। आपन लड़ाई हम अपने लड़ब। एक बेर खबर देले रहीं, बाकिर आइल ना। ओकर बापे–मतारी मना क देले होई।"

"तब कइसे का करबू?"

"काहें, तू लोग साथ ना देबू? मरद त मरद के पछ लेत बा। तू लोग मेहरारू हऊ, तू लोग त हमार साथ द। चलऽ लोग हमरा साथे।"

कवनो मेहरारू ओकर जबाब ना दिहली स। सभ के सभ सुगिया के मुँह ताकत रहि गइली स। जवन मेहरारू ओकर दुख सुनि के भरि आँखि लोर भरि लेत रही स। लोर से आपन अँचरा भिजा लेत रही स।

ठीक बा, मत जा लोग। खाली रोवला–गवला से ई दुख दूर ना होई। कबो तोहरो लोग प पड़ी। हम त मानब ना, आपन लड़ाई अपने लड़ब। पहिले सभ के टटोल लेत बानी। सुगिया गाँव के गली में निकल गइल।

■■ कांट (ब्रह्मपुर), बक्सर–802112 (बिहार)

भ्रष्टाचार के कहवाँ खोजब

■ प्रो0 विजयानन्द तिवारी

धरम करम सत्ता विपक्ष सबका खातिर बा ठीका
पीठ प लदले सभ मंडी दुलकत आवत अमरीका।।

भ्रष्टाचार के कहँवाँ खोजब कुइए भांग घोराइल
पकड़ाई त चोर कहाई अब ई बात बुझाइल।।

कविता कहनी नाटक के का दीहीं आजु हवाला
जामा जूता पहिरि घरे में, खेत प लेख लिखाला।।

आपन हाल कहीं का, गदहा से बा भइल इयारी
जेकर पोंछि उठवलीं मादा पवलीं ए बनवारी।।

■■ ज्योति प्रकाश लायब्रेरी के सामने, बक्सर, बिहार

कहानी

ठेस

■ डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा

कहल जाला कि पेंचे पंचायत होला ओइसहीं अगर कवनों पिछड़ा जाति के आदमी कवनो ऊँच पद प चलि जाय आ कवनों बड़ जाति के आदमी के ओकरा से कवनों काम आन पड़ल होखे आ ऊ ओकरा से आपन काम करावे जाव त अपना के हीन जरूर महसूस करेला बाकिर काम निकलि गइला के बाद ऊ बाघे बनि जाला।

कुछ अइसनके जाति के चक्कर आ चकरबिहू में दिवाकरो अपना के खाड़ पावत रहले। ऊ कथित पिछड़ा जाति के बढ़ई रहले। एगो बढ़िया जानकार होमियोपैथिक डाक्टर का रूप में उनकर रोजी–रोटी चलत रहे।

डाक्टरी के अलावा उनिकर रूचि साहित्यो में रहे। कविता–कहानी लिखल करसु आ कवनो–कवनो पत्र–पत्रिकन में भेजि देसु। कबो छपे त कबो ना छपे। छप जाय त मन के कुछ तोख मिले, ना छपे त सोंचसु कि हमार रचना बढ़िया ना होखी। एही से ना छपल होई। एकरा खातिर इनिका मन में कवनो किसिम के तकलीफ ना होत रहे। काहें कि ई कवनों बड़का लेखक त रहले ना। दिवाकर, ऊ सवखिया लिखत रहले। अगर कवनों पत्र–पत्रिका में रचना छप जाये त उनका खुसी के ठेकान ना रहत रहे। एहू से कि उ रचना बिना कवनों पैरवी आ परिचय के छपे।

इहे सभ लिखत–छपत आ मरीजन के रोग के ईलाज करत इनिकर समय कटत रहे। एही बीच में उनकर जान–पहचान धीरे–धीरे साहित्य के धुरंधर लोगन से होखे लागल। साहित्यकार लोग से सम्पर्क बढ़े लागल। ऊ ई सोंचि के एह लोग से सम्पर्क बढ़ावत रहले कि ई लोग साहित्य के जानकार आ विद्वान बा, सम्पर्क में कुछ नया सीखे–जाने के मिली बाकिर केहू उनके सिखावत रहे ना, बाकिर बात–बतकही से कुछ–ना–कुछ इनिका जरूर सीखे के मिल जात रहे।

पहिले त ना बाकिर जइसे–जइसे साहित्यकार लोगन से परिचय बढ़त गइल, दिवाकर का जातियो के जानकारी साहित्यकार लोगन के होत गइल। बड़ जाति के लोगन के नजरिया आ बेवहार उनके बदलत नजर आवे लागल। पहिले ऊ ई एह सभ प धेयान ना देत रहले बाकिर धीरे–धीरे बुझाये लागल कि बड़ जाति के लोगन का नजरिया में हमरा प्रति खोट आ उपेक्षा जरूर बा। एह लोगन का बीच में दिवाकर के योग्यता कवनों खास माने ना राखत रहे। चाहे ऊ चिकित्सा से संबंधित होखे भा साहित्य से।

केहू के जब कवनों दुख–तकलीफ होखे त उनका हाथ से छुआइल दवाई घोंटे में नरेटी में कवनों किसिम के अड़ंगा ना लागत रहे, बाकिर खुद ऊ बड़ लोगन का नजरी में घोंटात ना रहले। सभसे जादे तकलीफ त इनिका ओह दिन लागल रहे जब इनिका से एगो बड़ जाति के साहित्यकार पानी पिअवला का बाद गिलास–प्लेट खँघारे के कहि देले। दिवाकर उनुका के सभसे जादे तवज्जो देत रहले आ ऊहे जब अइसन बेवहार कइले त उनका दिल में भयंकर आघात पहुँचल। सोचे लगले कि डाक्टर आ साहित्यकार के जाति होला का? ऊ बड़ जाति के साहित्यकार कई बेर दिवाकर से दवाई ले के खइले रहले। दवाई के त जाति रहे ना बाकिर दवइया त एगो छोटे जाति के डाक्टर अपना हाथ देत रहे। तब अइसन भेद–भाव काहे? दिवाकर उनुका कहला से गिलास–प्लेट खँघार दिहले आ अपना जाति में अपना जनम लेला के मने–मन कोसत घरे लवटले।

ऊ रहि रहि सोचस कि एह लोग के हमरा जाति से काहें अतना घीन बा? इहे बढ़ई बड़ भा छोट सभका खातिर पलना बनावत बा, जवना में जनमतुआ लइका के झुला–झुला के लोरी सुना के हरेक जाति के लोग सुतावत बा। इहे बढ़ई कुरसी, टेबुल, चउकी, पलंग वोगैरह बनावत बा, जवना प हरेक जाति के लोग बइठत सुतत बा आ थाकि गइला पर ओठँग के आपन देंहि–हाथ सोझ करत बा। बढ़ई के बनावल एह चीझन के उपयोग/उपभोग करे में ई लोग इचिको हिचिकत नइखे, आ बढ़ई से घीन करत बा लोग।

ईहे बढ़ई बड़ आ छोट लोगन खातिर मुअला प लास के चहुँपावे खातिर टिकठी–रंथी बनावत बा। कोरा में टाँग के केहू ले ना जाई? मूअल आदमी के उ चाहे लोग गाड़ी क के ले जाय भा कान्हा प, ओकर आसन कवनों बढ़इये के बनावल रंथिये प रहेला। ऊ रंथी शमशान घाट पर, चाहे जवना विधि जाव।

दिवाकर सोचसु कि भगवान त हरेक आदमी के एके जइसन बनवले, ऊ त कवनों किसिम के भेदभाव ना कइलें। एह धरती पर आवते ओकरा के जाति–धरम में बांटि दीहल गइल। बेटा भा बेटी के जनम भलहीं आजु अस्पताल में होता बाकिर पहिले भा अबहियों नार काटे खातिर चमइनिये खोजात रहे

आ आजुओ खोजाले। इहे ना, लइका जनम लेला के बाद जब कुछ दिन तक, माई के दूध ना उ त इहे चमइन आपन दुधवो एह जनमतुआ के पिआवेले। ओह घरी जाति कहवाँ हेराई जाला? ओह घरी बड़ जाति के मनई के अकिल कवना खोह में लुका जाला? इन्हन लोग क हाल ई बा कि जरूरत पड़ला प ई लोग गदहो के बाप कही। मतलब निकल जाई त घिनाई।

कतने अछूत जाति के लोग बा, जिनिका बिना बड़ जाति के काम ना चली। जइसे धोबिये बा। कपड़ा धोबिये किहां धोआई, घरे ना फिंचाई, धोबिये किहां से धोआ–फिंचा के आइल कपड़ा पहिर के ए लोग के हरेक काम नधाई, बाकिर ओह धोबिया से घीन करी। डोम क सूप–दउरी सुपुली अनाज फटके–बनावे से लेके पूजा–पाठ में काम आई। जवना के फटके–बनावे में ऊ सूप–सूपली इकोरा रहत होखे। ओही छठ में सुरुज भगवान के अरघा देबे के काम आई, आ लोग ओकरा जाति से घिनाई। मुअलो प मुहें आगी भलही डोमवे देत होखे।

दिवाकर के मन में ई सभ बाति घिरनई अस नाचत रहे। बड़ के बुधी बड़ लेखा नू होखे के चाहीं? ई त नान्हो के बुधी से गइल–गुजरल बा। नान्ह जाति के लोग में संस्कार व्यवहार भलहीं मत होखे बाकिर बड़ जाति वाला लोग त पढ़ल–लिखल संस्कारी बा। फेरू अइसन सोंच–बिचार आ मानसिकता एह लोग में काहें? कतनों एह प ऊ आपन दिमाग दउरावसु बाकिर उनुकर जलखर दिमाग जबाब ना खोज पावे। ऊ पुछियो त ना सकत रहलन कि आखिर रउआ सभे के बेवहार हमनीं खातिर अइसन काहें बा? हमनी काहें अलगियावल आ बरावल जात बानीं?

दिवाकर के पढ़ाई–लिखाई वाला एगो गुरूजी रहले। बाबू साहेब। गुरू–चेला के संबंध पढ़ाई–लिखाई के सँगे–सँगे दवाइयो–बीरो से जुड़ल रहे। दिवाकर जब उनुका घरे जासु त अतना अपनापन वाला बेवहार इनिका जवरे होखे कि ई ओह घटना के मोटा–मोटी भोरा गइल रहले। उनुका गुरूदेव के घर में केहू बेराम–हेराम पड़ि जाय त तुरत इनिकर खोज होखे लागे। ई दवाई देसु त सभकर बेमारियो ठीक हो जाव।

दिवाकर के गुरूआइन के लीवर में कैंसर हो गइल। दिल्ली के बड़का अस्पताल में उनुका के देखावल गइल। ओहिजा डाक्टर जबाब दे दिहले सऽ। कहलें स कि इनकर टिकट लगभग कटि चुकल बा अब ऊ जाये के इन्तजारी करीं। कुछ दवाई वोगैरह लिखि–देहले कि इहे खिआवत रहीं सभे। एह रोग के बारे में दिवाकर के गुरूजी कुछुओ ना जानत रहले भा ई कहल जा सकत बा कि उनुका से ई सभ छिपावल गइल रहे। एह रोग के जानकारी खाली उनुकर छोटका बेटा आ पतोह के रहे।

एक दिन उनुकर छोटका बेटा दिवाकर भिरी गइले आ कहले कि जब तक हमार माई जिन्दा बिआ तब तक कुछ आपन दवाई चला दीं कि हमरा माई के कवनों खास तकलीफ मत होखे। गुरूआइन दिवाकर के खूब मानत रहली। दिवाकर ई जानि के बड़ा दुखी भइले किउनुका लीवर में कैंसर बा। ऊ भगवान प भरोसा कइ के आपन दवाई चालू कइले। भगवान के महिमा, दिवाकर के गुरूआइन के दुइये महीना में एह बिमारी से राहत मिलि गइल। दू महीना के बाद गुरू जी के छोटका बेटा जब महतारी के लेके दिल्ली चेक करावे ले गइल त ओहिजा के डाक्टर अचम्भो में पड़ि गइलन कि भला एह रोगी के बाँचे के इचिको उमेदे ना रहे तवन रोगी बेलकुल चंगा कइसे हो गइल? दिवाकर के गुरुआइन दिल्ली से अपना घरे वापस आ गइली। सभे खुस रहे। सभसे जादा खुशी त दिवाकर के भइल रहे। ऊ एह से कि होमियोपैथिक दवाई में अतना दम बा कि अइसन खतरनाक रोग के ठीक क देलस? दिवाकर क पूछ ओह घर में अउरी बढ़ि गइल रहे। गुरूवाइन के उमिरो लगभग होइयो गइल रहे। कुछुए बरिस में ऊ गुजर गइली। उनुका गुजरला के बाद धीरे–धीरे उनुका घर के लोग सामान्य भइल।

एक दिन दिवाकर कवनों दवाई अपना गुरूदेव खातिर पहुँचावे गइल रहले। जलखई खातिर कुछ मिठाई एगो प्लेट में ले आ के गुरूदेव के पतोह दिवाकर के सामने धइली। फ्रीज वाला पानी के एगो बोतल आ एगो गिलासो राखि दिहली। दिवाकर जब जलखई क लिहले त गुरूजी के पतोह दोबारा ओह गिलास में पानी देबे लगली। ओही घरी दिवाकर के गुरूजी अपना पतोह के डाँटि के बोलले, बोतलवा अउरी ऊपर क के पानी दऽ। बोतल अउरी ऊपर हो गइल आ गिलास में पानी अइसे दिआये लागल जइसे भिखमंगा के भीख दीहल जात होखे। जबकि बोतल आ गिलास का बीच कवनो कम फासला ना रहे। दिवाकर के बड़ी जोर से झटका लागल। ऊ सोंचले कि जूठ गिलास में डालल जाये वाला पानी के धार जब बोतल से मेल क गइल त अब बोतलवो कहवाँ निछून रहि गइल? उहो त जूठ हो गइल। एह घटना से आहत भइला का बादो ऊ कुछ ना बोललें। दवाई त देइये देले रहले, घरे वापस आ गइले। उनकर मन एकदम छोट हो गइल रहे।

एक दिन संजोग से फेनु गुरू जी के फोन

दिवाकर भिरी आइल कि फलाना रोग के दवाई चाहीं। बेचारू फेनु अपना करेजा प पाथर राखि के दवाई पहुँचावे गइले। पहुँचला का बाद दवाई अपना गुरूजी के थम्हा दिहले आ खाये के तरीको बता दिहले। अबहीं दिवाकर के बइठले दुइयो मिनिट ना भइल रहे तले उनुकर पतोह फेनु कुछ मिठाई एगो प्लेट में लेआ के एगो स्टूल पर राखि दिहली। संगे–संगे फ्रीज वाला पानी के एगो बोतल आ एगो गिलास। संजोग से ओह स्टूलवा पर दिवाकर के गुरूदेव वाला पितरिया लोटा राखल रहे, जवना से ऊ पानी पीयत रहले। दिवाकर मिठाई उठा के मुँह में डालले चाहत रहन तले गुरूदेव चट से आपन लोटा ओह स्टूल प से उठा के दोसरा जगह राखि दिहले। दिवाकर के अब ऊ मिठाई अँटके लागल तबो ऊ मिठाई खइले आ पानी पीयले। दिल के लागल ई ठेस अबकी बरदास से बहरी हो गइल। जवन दिल के भड़ास पहिले जबान आ कंठ के भितरी रहि गइल रहे, तवन अबकी बहरिया गइल। गुरूजी, हमरा हाथ के दिहल दवइया रउआ देखते–देखत घोंटि गइनीं हो हाँ फेर एह् बढ़इया से अतना घीन बरल हा कि आपन लोटवा स्टूल्वा पर से तुरते हटा देनीं हाँ? स्टूल पर लोटवा राखल रहित त जूठ हो जाइत? गुरू जी भिरी कवनों जबाबे ना। दिवाकर छोट मन कइले घरे के राहि धइले। सोचले कि जब गुरूआईन के कैंसर भइल रहे आ हमार दवाई चलत रहे त ओहू घरी इनिका घरे गइला पर त ई लोग हमरा के बरिआरी कुछ–ना–कुछ खिआवे। ओह घरी थरिया, प्लेट, गिलास में जूठ ना लागत रहे, बाकिर आजु स्टूल प लोटा रहला से लोटा जूठ होत रहल हा। दिवाकर के लागल कि ई दुनिया एकदम मतलबी बिया। जरूरत पड़ला पर गदहो के बाप माने के तइयार रही आ जरूरत पूरा हो गइल प दूध में पड़ल माछी लेखा निकालि के फेंकि दीही। अब दिवाकर के ए बड़ जाति के लोग से घीन हो गइल रहे। अब ऊ ऊँच जाति के लोगन से परिचे राखे में डेरात रहले। आदमी के ओह दुआर प ना जाये के चाहीं जहवां ओकर मान–सम्मान के ठेस पहुँचे।

■ ■ अनाईठ, आरा, भोजपुर–802302 (बिहार)

लघुकथा

आपन आपन नजरिया

कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा

एगो सीसा के घर रहे। देवाल सीसा के, छत सीसा के आ फर्सो सीसे के। कहे के मतलब कि घर खाली सीसे के रहे। कवना हासिल खातिर ई घर बनावल रहे, एकर पता ना रहे।

एक दिन घर के रखवार भूल से दरवाजा खुलल छोड़ दिहलस। महल्ला के झबरा कुकुर जवन बड़ा जबरदस्त रहे पता ना कइसे घर में ढुक गइल। एही बीचे रखवार के अपना भूल के अहसास भइल आ वापस जाके दरवाजा बन्द कऽदेहलस। झबरा भीतरे बन रह गइल। झबरा बड़ा जब्बर रहे। मोहल्ला आ गाँव के कवनो कुकुर ओके देखते रास्ता बदल द सन। आज ऊहे झबरा जेने देखे ओने अपने नियर कुकुर देख भकुआइल रहे। घबड़ा के ऊ एके जगह थिर हो गइल। सामने अपने नियर झाबर कुकुर लउकल। ऊ ओकरा के देखि के गुरनाइल। सीसो वाला कुकुर गुरनाइल। ऊ भउँकलस त सीसो वाला कुकुर भउँकलस। झबरा खिसिया के जेतना जोर से भउँके, सामने वाला कुकुरो ओतने जोर से भँउके। झबरा से सहाइल ना त ऊ झपटल। सीसो वाला कुकुर ओतने तेजी से ओकरा ओर आइल। सीसा से टकरा के लड़त झबरा खूने खून हो गइल। अंत दाव में पस्त होके गिर पड़ल आ मू गइल।

ए घटना के कुछे महीना बाद फेरू घर के रखवार से ओइसने भूल भइल। घर के केंवाड़ी खुले छूट गइल। अबकी बार एग्गो दोसर कुकुर घर में घुसल आ बन्द हो गइल। ई कुकुर सीसा में अपने नियर कुकुरन के देख के बहुते खुश भइल। जेने ताके ओनहीं अपने मतिन कुकुर देखि मगन होत ऊ मुस्किआइल। सीसो वाला कुकुर मुस्किआइल खुशी में ऊ आपन दाहिना गोड़ हाथ मिलावे के तर्ज पर आगे बढ़वलस, सीसो वाला ओतने खुशी से आपन गोड़ आगे बढ़वलस। कुकुर बड़ा खुश रहे। अनासे ओकरा अपने नियर अतना सँघतिया जे मिल गइल रहलन सऽ।

■ ■ आनन्दनगर, रामपुरउदयभान, बलिया

जनपद

बलिया के बलियाटिकपन

■ भगवती प्रसाद द्विवेदी

बलि, भुगु, वाल्मीकि, दर्दर, सुदिष्ट आ अनगिनत पीर अउर बाबा का नाँव का सँगे जुड़ल बलिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उन्मुक्त ठहाका अउर लालित्यपूर्ण साहित्य–अस ललित बलिया। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के संत साहित्ये नियर साधुता खातिर विख्यात बलिया।

बलिया, जवना के विलष्टता आ सरलता में विलक्षण सामंजस्य बा– ठीक आचार्य रघुनाथ शर्मा के संस्कृत वांङमय–अस दुरूह, बाकिर उन्हुका व्यक्तित्वे नियर सहज–सरल। ई सहजता–सरलता ददरी, धनुषयज्ञ वगैरह सालो भर चलत रहे वाला मेलन में बा, कृष्णदेव उपाध्याय के लोक–साहित्य में अउर लोक परब–तेवहारन में बा, इहाँ के विस्तृत भू–भाग में फइलल–पसरल लोक जिनिगी के बा। बाकिर जब एही लोक में विद्रोह के बिगुल बाजेला त बेयालिस जइसन विस्फोटक क्रांतियन के अमरत्व मिलेला। तब चित्तू पाण्डेय, मंगल पांडे, कौशल किशोर, जयप्रकाश नारायण जइसन प्रकाश स्तंभन के रुधिर–कथा जियतार हो उठेले आ दुर्गा प्रसाद गुप्त के क्रांति–साहित्य सभका के अचरज–रोमांच से भरि देला।

बलिया के माटी में जवन सोंधापन बा, ओकर आपन मौलिकता बा। एकरा में जतना ताकत चोट करे के बा, ओतने कूबत खुद पर हँसे आ सभकरा उपहास का पात्र बनहूँ के बा। इहे माटी चतुरी चाचा आ विवेकी राय के विवेक के विस्तृत फइलाव अउर आयाम देले आ रामविचार पाण्डेय के 'भोजपुरी रतन' के अनमोल गहनो पहिरावेले। साँचो, बेगर कवनो लाग–लपेट के कतना खाँटी बिया इहाँ के माटी!

बलिया के कबीरी ठाट के त बाते निराला ह। अरुवाइल–बासी, रुखल–सूखल खाए आ ठंढा पानी पीए के बाते दीगर बा, इहाँ के फाकामस्तियो के का कहे के बा! पेट में भलहीं चूहा कूदत होखे आ मुसरी दंड करत होखे, बाकिर शानो–शौकत में कवनो कमी ना आवे के चाहीं। दिल आ गइल त सउँसे दुनिया आपन... आ जदी ना, त अपनो बाप–महतारी बेगाना।

बलिया के सुभाव ह अड़ल। अड़ल त फेरु मुड़ल ना आ अगर मुड़बो कइल त फेरू कबो जुड़ल ना। एकरा के रउआँ जिद कहीं भा अहम, बाकिर आन खातिर जान गँवावल बलिया के फितरत रहल बा। मारपीट, लड़ाई–झगड़ा, खून–कतल आ पुश्त–दर–पुश्त मोकदिमाबाजी बलियावासियन के इज्जत–प्रतिष्ठा के अभिन्न अंग रहल बा। नाप–जोख के नायाब पैमाना ई कि जेकरा लगे जतने अधिका मोकदिमा, ऊ ओतने बड़ आदमी! तबे नू बड़प्पन के गहिराई नापे खातिर केस–ममिला के फीता भिड़ावल जाला। रउआँ भलहीं एकरा के बेवकूफी मानीं, बाकिर हम त एहके अड़ियल रईसी कहब। कबो बिगड़इल साँढ़–अस खूंखार लउकिहें त कबो खुद मूड़ी नवाके कहिहें–आवऽ बैल, मारऽ!

पहिले बलिया के लाठी आ लंठई मशहूर रहे। मोंछ खातिर किछऊ करे–करावे प उतारू हो जइहन बलियाटिक। लउँडा के नाच देखे खातिर दस–दस कोस ले सूँघत चलि जइहन– अन्हरा भइँसा नियर। नचनियन खातिर हजार–लाख के कुरबानी त आम बात बा। बनूक के नोखी प नोट के गड्डी राखिके गोली दागि दिहल, नोट के हवा में उड़ा दिहल आ समियाना में फायर क के छेदे–छेद क दिहल, नचदेखवा लोगन के शगल होला। लउँडा–रंड़ी का सँगे जदी छेड़छाड़ आ हुड़दंगई ना कइलऽ त नाच का देखलऽ खाक–पथल!

भला कवन माई के लाल टिकि पाई बलिया के बलियाटिकपन के सोझा! बाकिर खाली बलिया में रहला भरि से केहू बलियाटिक ना हो जाला। बलियाटिक होखे के मतलब होला कवनो–ना–कवनो रूप में हमेशा चरचा में बनल रहल। एकरा खातिर भलहीं बेवकूफाना हरकते काहें ना करे के पड़े! नजीर खातिरः 'भोला' पांड़े जी नियर झुनझुना के हथियार बता के विमान–अपहरण भा बेंग (भदइलवा) – अस उछलत–कूदत कबो एम.पी. तक कबो पी.एम. के तरजूइ पर तउलाइल। कबो आशिकाना अंदाज में सियासती चाल चलल, त कबो कानूनेदां का ओर से कानून के शीलभंग कइल।

बलिया वाला हर भेस में, हर देश में, परदेस में, हरेक सूबा के कोना–अँतरा में अपना बलियाटिकपन का सँगे मिलि जइहन। जहँवें भेंटइहन, आपन छाप अउर लोगन पर छोड़त लउकिहन। जेनिए से होके गुजरिहन, अपना आगा–पाछा चेला–चाटी अउर अनुयायियन के लेले–देले।

बलियाटिकन के सवद्गर पकवान आ भाँति–भाँति के लजीज व्यंजन से ना, बलुक सातू आ लिट्टी (फुटेहरी)–चोखा से मोहब्बत बा। उन्हुकरा अपनन से ना, परायन से अपनापन बा। ऊ पहिले अपना महतारी आ मातृभाषा के उपेक्षा करिहरन, फेरू लमहर अरसा के बिछुड़न का बाद जब कतहीं अपमानित आ जलील होइहन त अपना महतारी आ मातृभाषा के ओरि लवटिहन। महतारी भासा के सीढ़ी–अस इस्तेमाल कके ओकरा अस्तित्वे के मटियामेट कऽ दिहल चहिहन।

तबे नू सदियन से शोषित, उत्पीड़ित, उपेक्षित आ प्रताड़ित रहल बा ई बलिया। हालांकि इहाँ के माटी में फरल–फुलाइल एक से बढ़िके एक, लाल अपना चमक से देश–दुनिया के रोशनी दिहलन, बाकिर इहवाँ के हाल हरमेसा बदहाले रहल। कतना निरीह आ बेबस बिया बलिया के जिनिगी! बाकिर तबो कतना प्रतिभावान, जुझारू आ जीवट वाला बाड़न– नगर–महानगर में छिछियात, देश–विदेश में आपन धाक जमावत बलिया के बलियाटिक! अपना लोकशक्ति आ आत्ममुग्ध रोमानियत से भरल–पुरल सँचहूँ कतना निश्छल बेधड़क आ जियतार बा बलिया के ई बलियाटिकपन!

204 टेलीफोन भवन, आर ब्लाक, पो0बा0 115, पटना–1 (बिहार) ■■

दू गो लघुकथा

■ विनोद द्विवेदी

[एक] अच्छा दिन

लइकन के भुखाइल, छटपटात देखि के महतारी के आँखि रहि–रहि डबडबा जात रहे। हालांकि ऊ इहो जानत रहे कि देर–सबेर पंडीजी आटा आ तर तरकारी लेके लवटबे करिहें, ऊहो जब रेक्सा चलवला से आमदनी भइल होई।

रात के नौ बजे लागल रहे आ ऊ बरियाई लड़िकन के सुतावे का कोसिस में लागल रहे। आँख से लोर ढरकत रहे। पंडीजी एक हाथे आटा का ठोंगा, नून क पाकिट आ दुसरा हाथे थोरिकी आलू लेके जब लवटले त पंडिताइन आपा खो बइठली, "ईहे दिन देखावे के बाकी रहल हा नऽ? का मिलल इहाँ शहर में आके? एहसे अच्छा त गँउँवे रहे; कम से कम उहाँ इस्कूल में लडिकन के खिचड़ी त मिल जात रहे। तूँ त बार बार शहर में कमाये खाये क बात करत रहलऽ आ कहत रहलऽ कि हमनियो क अच्छा दिन आई। अब चएन मिल गइल नऽ लड़िकन के भूखे मार के। अरे हमरा के त तूँ जइसे रखलऽ, रहि गइनी। बलुक गरीबी आ अभाव के आदते डाल लिहनी बाकिर हे लड़िकन क दुख बरदास के बाहर बा!"

पंडी जी के कठया मारदेलस फेर हाथ क समान एकोर धरत झनकलन, 'छव घंटा रेक्सा खिंचला क बाद जवन भेंटाई ओही में न गुजर होई। कवनो अपना बस में बा? अच्छा दिन क सपना त सब केहू देखेला, हमहूँ देखनी त कवन पाप क दिहनीं?'

पंडी जी क छोट बेटी आँख मुनले मतारी–बाप के बात सुनत रहे। जब ओकरा से ना अड़ाइल त बिच्चे में बोल परल, "बाबू, जब तूँ गाँवे रहलऽ तबो माई से रोज लड़ाई करत रहलऽ आ इहवों आ के झगरा सुरू। काल्हु जब तूँ ना रहलऽ त पूरा दिन अच्छा रहे। घाम उगल रहे आ हमनी के तनिको ठंढा ना लागल, काल्ह कतना अच्छा दिन रहे। माइयो कहत रहे कि देख बचिया, कतना अच्छा दिन बाटे? आ आज एबेरा, जड़वतो बा आ तहरा आवते लड़ाइयो सुरू हो गइल! हमके त इ अच्छा दिन नइखे लागत।"

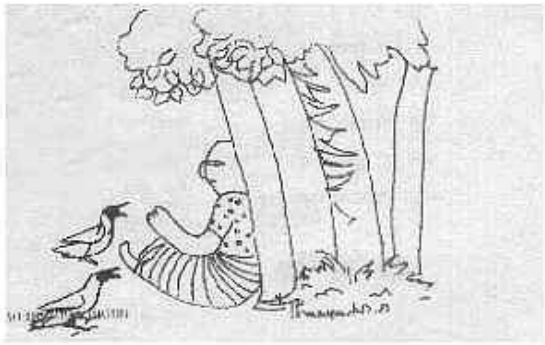

[दू] घर पर कब्जा

चिरइन में सबसे सोझिया गौरइये के मानल जाला। अदिमी का सँग–साथ रहे आ जिये वाली ईहे चिरई अजुओ अदिमी के सँग साथ धइले रहि गइली स। हमरा शहरवाला मकान में, जँगला–रोसनदान प दू–तीन गो घोंसला बा आ एह चिरइन क चूँ चूँ से हमहन क मनसायन होत रहेला।

एक दिन हम अपना बाहरी कमरा में बइठल अखबार पढ़त रहलीं। अचके चूँ चूँ, चीं–चीं करत एगो गौरइया के रोसनदान पर तकनी त ऊ उड़त ओसारा का ओर का रोसनदान प जा बइठल। उहाँ ढेर दिन से परल एगो खाली घोंसला रहे। हमके तयजुब भइल कि ई त साल भर से खालिये लउकत रहल हा, आजु इ नया चिरई कहाँ से? सफाई करावत खा हम जानबूझ के ओघरी इ पुरान घोंसला छोड़ देले रहनी ई सोच के कि जाये दऽ बेचारी गौरइया के घर हऽ। चलऽ आज एहू घोंसला क दिन बहुरल। ई फुदुकत गौरइया बुझला अपना प्रवास से लवटि आइल। नीके बा, घर गुलजार रही! हम सोचलीं आ अखबार पढ़े लगनी।

ओह दिन के हमार विचार गलत ना रहे। ऊ गौरइया अब ओही में रहे लागल। ऊ अक्सर बहरी का रोसनदान से घुसे आ भितरी का रोसनदान वाला घोसला में समा जाव। कुछे दिन बाद अब ओमे, ओकर दू तीन गो बच्चा चीं चीं, चूँ चूँ करे लगलन स। एक दिन चूँ चूँ चीं ची करत दू–तीन गो नया चिरइन क हउँजार सुन के हम कमरा में ढुकलीं त देखत का बानी कि एगो बच्चा घोंसला से नीचे गिरल बा। हम सीढ़ी मंगाइ के ओके फेरू घोंसला में राख दिहनी आ बहरा हाथ धोवे चल गइनी। लवटनी त फेरू हउँजार सुनलीं ऊहे दू–तीन गो चिरई ए रोसनदान से ओ रोसनदान उड़त हल्ला मचवले रहली सऽ। नीचे तीनू बच्चा गिरल रहलन सऽ। हम धवर के उठावे लगनी। ओम्मे से दू गो बच्चा जियत रहलन सऽ, एगो मरि गइल रहे। हमरा खीस बरल। ऊपर तकलीं त बाहर वाला रोसनदान प बइठल अकेल चिरई चिचियात रहे। बाकी दूनों चिरई साइत बहरा चल गइल रहली स। हम सीढ़ी प चढ़ के फेरू दूनों जीयत बच्चन के घोंसला में ध दिहनी आ नीचे छितराइल घोंसला क तिनका बटोर के ऊपर अरियाँ–अरियाँ सरिहाइ दिहनी। थोरिके देर में बहरी वाला रोसनदान पर बइठल गौरइया उड़ के, ओह घोंसला में चल गइल। चूँ चूँ के आवाज अब कम हो गइल रहे। थोड़िकी देरी बाद हमहूँ कमरा ओठँघा के दोसरा जगह चल गइनी।

साँझ के चार बजे लवटला प हमके फेरू चिरइन क हउँजार सुनाइल। धावल कमरा खोललीं त का देखत बानी कि दू तीन गो गौरइया आपुस में भिड़ल बाड़ी सऽ नोचा–चोंथी में घोंसला क बच्चा नीचे गिरल बाड़न स। घोंसला क तिनका नीचे छितराइल बा। हम अवाक ताकत रहलीं तले एगो उजराह गौरइया, नीचे गिरल बच्चन का चारू ओर फुदुक–फुदुक के चिचियाए लागल। हमरा समझ में आ गइल.. बुझला ई घर का कब्जा क लड़ाई रहे। ऊ दूनों गौरइया घोसला वाली जगहा प चूँ चूँ करत तरनात रहली सऽ।

एगो बच्चा जवना क पाँख ज्यादा नोचाइल रहे, मर चुकल रहे, बाकि दोसरका अभी जीयत रहे। हम सोचलीं कि मिल–जुल के रहे वाली एह सोझिया चिरइयनो क सुभाव अइसन निरदई हो गइल, कि अपने जात के बच्चा तक के नइखे चीन्हत? कूल्हि तिनका बटोर के ओप्पर जीयत बच्चा के धइनी आ ले जाके दोसरा कमरा का रोसनदान प ध अइनी। हमके पूरा माजरा समझ में आ चुकल रहे। अदिमी का साथ–सोहबत में बुझला ईहो बदलि गइल बाड़ी सऽ, हमरा उन्हनी का व्यवहार से बुझाइल।

■■ आर0 के0 पुरम, ककरमत्ता, वाराणसी

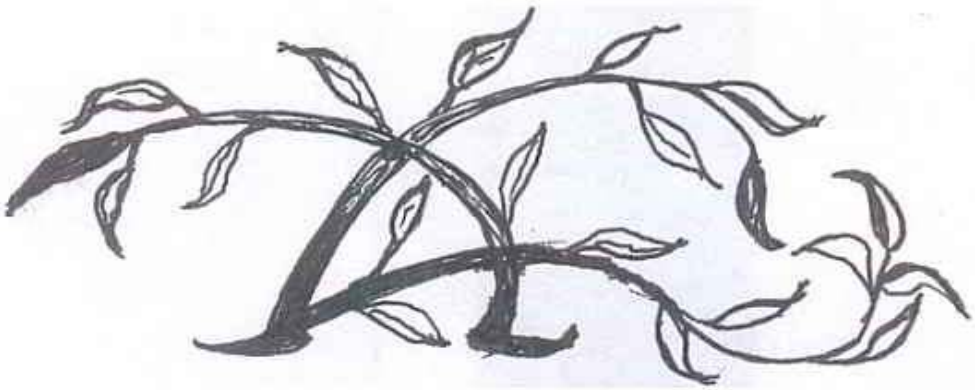

स्व0 शम्भुनाथ उपाध्याय के प्रति

■ त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'

पाँच पदारथ ले, पिंजड़ा गढ़ाइल
तीनि रंगवा में रचि रचि के रँगाइल
अजबे लोहार के, गजब रचना हो
पिंजड़ा उदास तोरा बिन सुगना हो।

ताहि बीच मगन, बिजनवा के वासी
अलख जगावे दिन रात बनवासी
हियवा में राजेला, रामनाम रतना हो
पिंजड़ा उदास, तोरा बिन सुगना हो।

मधुआ बोरल तोर निरमल बानी
करे गूढ़ बतिया, मरम नाहीं जानी
रस सरसावे, सरस रसना हो
पिंजड़ा उदास, तोरा बिन सुगना हो।

बुति गइलें दियना, सनेहिया ओराइल
रीति गइले पिंजड़ा, हिरमना हेराइल
धनि हऽ विधान, धनि–धनि विधना हो
पिंजड़ा उदास, तोरा बिना सुगना हो।

याद पड़े सुघर, सलोनी, सुरतिया
निरमल, तन–मन, मधुरी–मुरतिया,
बिसरे ना मोतिया जड़ल नयना हो
पिंजड़ा उदास, तोरा बिन सुगना।

■■ ('शारदा सदन' कृष्णा नगर, बलिया)

ग़ज़ल

■ शशि प्रेमदेव

पटकऽ टीन, बजावऽ थरिया : हूले–ले–ले करत रहऽ!
बा भकसावन रात अन्हरिया : हूले–ले–ले करत रहऽ!

चुप रहबऽ तऽ कइसे मानी लोग पहरुवा तहरा के
रहऽ बनारस चाहे झरिया : हूले–ले–ले करत रहऽ!

मंदिर–मस्जिद, घर–दफ्तर, थाना... ख़लिसा दलिए में ना–
जहँवे कुछऊ लउके करिया : हूले–ले–ले करत रहऽ!

अजुवो ओतने साँसत में बा जिनगी तहरा चिरइन के
साधो, परिकल बिया बिलरिया : हूले–ले–ले करत रहऽ!

उहँवाँ पीपर, पनघट, पुरुवा, खेत, बगइचा–का नइखे
इहँवाँ ईंटा, पत्थर, सरिया : हूले–ले–ले करत रहऽ!

■■ प्रवक्ता, कुँ0 सिंह, इ0 कालेज, बलिया

इतिहास

अंग्रेजी सामाज्यवाद आ भारत

■ विजय शंकर पाण्डेय

भारत में अंग्रेजी शासन क आरम्भ सन् 1757 से मानल जाला। जब ब्रितानी शासन के सेना बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के पलासी के युद्ध में हरवलस लेकिन अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ राष्ट्रीय संघर्ष के जनम त उनइसवीं सदी में मानल जाए के चाही। अंग्रेजी शासन के अत्याचारे का कारन पूरा देश एकजुट होके ओकरा खिलाफ खड़ा भइल। सन् 1757 से अंग्रेज भारत के उपयोग अपना निजी हित खातिर शुरू क दिहले रहलन। पहिले ईस्ट इण्डिया कम्पनी कऽ मुख्य उद्देश्य भारत से पइसा बटोरे के रहल। कम्पनी ई ना चाहे कि भारत के सौदागर भारत कऽ कच्चा माल खरीदे–बेचे में अंग्रेजन के मुकाबिल खड़ा होखँ स। कम्पनी चाहत रहल कि कच्चा माल सस्ता दाम पर खरीद के महँगा दाम पर बेचे आ ओकरे व्यापार पर एकाधिकार रहे।

भारतवर्ष अपना समृद्धि खातिर ओघरी प्रसिद्ध रहल। अंग्रेजन के आपन साम्राज्य बढ़ावे खातिर काफी धन कऽ आवश्यकता रहल, ओनके जल सेना तथा थल सेना का जरिये आपन प्रभुत्व बढ़ावे के रहल ईहे ना, धनो के व्यवस्था भारते से करे के रहल। सन् 1765 से 1770 के बीच में कम्पनी अपना आमद के 33 प्रतिशत बाहर भेजलस। ब्रितानी पूंजीपतियन के भारत में अपना इच्छानुसार व्यापार करे के छूट दे दिहल गयल। परिणाम स्वरूप भारत के बाजार विदेशी माल से पट गयल।

भारत में प्रशासन आ अउर काम बदे कर्मचारियन के आवश्यकता पड़े लागल। एही से 1833 के बाद ब्रितानी शासक निचला स्तर के एक विश्वसनीय कर्मचारी समूह के निरमान शुरू कइलन। अधिक से अधिक कच्चा माल भेजे खातिर अंग्रेजन का सामने यातायात के बड़ी समस्या रहल। एके दूर करे खातिर सड़क निरमान, रेल क निरमान, अउर समुद्री जहाज आदि के आवश्यकता अंग्रेज महसूस कइलन। उनहन के कोशिश से 1853 के बाद मुख्य नगर अउर बन्दरगाह, रेलपथ से जोड़ल गयल। सन् 1905 तक लगभग 3 अरब 50 करोड़ के लागत से 38 हजार मील लम्बा रेल–पथ क निरमान भयल। संगे–संग डाक–तार क तेज इन्तजाम कइल गइल। उन्नीसवीं सदी के शुरूआते में ब्रितानी शासन के धन कऽ आवश्यकता अउर बढ़ गयल, लेहाजा किसानन के ऊपर लगान के भार बढ़ावल गयल।

अंग्रेज नील, अफीम, चाय के खेती करे बदे किसानन–मजूरन पर दबाव डाले लगलन। सन् 1824 में भारत से बनल कपड़न पर ब्रिटेन में 30 से 70 प्रतिशत तक आयात शुल्क लगा देवल गयल। भारत के चीनी पर ओकरे असली कीमत से तीन गुना टैक्स लगा दिहल गयल। कुछ मामलन में ई शुल्क चार सौ गुना रहल। एह प्रकार से भारत के निर्यात ब्रिटेन में बन्द हो गइल। सन् 1860 के बाद ब्रिटेन के शान–समृद्धि में कमी आवे लगल। फ्रांस, बेलजियम, जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस अउर जापान अपने इहाँ शक्तिशाली उद्योग के विकास कर चुकल रहलन। सन् 1850 से 1900 के बीच इस्पात कऽ उत्पादन सारी दुनिया में 2 करोड़ 80 लाख टन तक पहुँच गइल। सन् 1850 के बाद ब्रिटेन के बहुत बड़ी पूंजी रेलवे, भारत सरकार के ऋण देबे में, जहाज रानी में, चाय–बगानन में अउर कोयला के खदानन में लगा देवल गयल रहल। एही वास्ते ब्रिटेन सरकार कऽ चिन्ता रहल कि भारत में हर हाल में अंग्रेजन के अधिकार बनल रहे के चाहीं।

ब्रिटेन कऽ एक प्रशासनिक अधिकारी जवन बम्बई कऽ राज्योपालो रहल रिचर्ड टेम्पुल सन् 1880 में लिखलस कि हर हाल में हम लोगन के भारत पर अधिकार बनवले रहला के जरूरत हौ। ब्रिटेन के बहुत बड़ी पूंजी एह देश में एही विश्वास पर झोंकल गयल रहल औनकर अनन्त काल तक अंग्रेजने के शासन रही। एह उद्देश्य से ब्रिटानी सरकार प्रशासनिक ढ़ांचा पर बहुत जियादा खर्च करे लगल। सन् 1904 में भारतीय राजस्व के 52 प्रतिशत भाग एकरे रख–रखाव में खर्च होवे लगल। औपनिवेशिक शोषण खातिर आन्तरिक विकास कऽ आवश्यकता रहल लेकिन भारत के जान–बूझ के पिड़छा रखल गयल। शोषण चालू रहल एकरे फलस्वरूप राष्ट्रवादी सामाजिक शक्तियन के उदय भयल। अंग्रेज भू–राजस्व के वसूली खातिर दू प्रकार के तरीका इस्तेमाल कइलन स। जमींदारी पद्धति अउर रैयतदारी पद्धति। ई दूनो पद्धति में एतना घौंच–पौंच भयल कि किसान बेहाल हो गइलन। अंग्रेजी राज के खिलाफ असन्तोष होवे लगल। ब्रिटानी सरकार के व्यापार में सन् 1858 के बाद बढ़ोत्तरी होते चल गयल। सन् 1924 में व्यापार 7 अरब 50 करोड़ तक पहुँच गयल लेकिन कवनो लाभ भारत के नाही

मिलल। अंग्रेज भारत में उद्योग–धंधा लगावे में रूचि नाही लिहलन। सन् 1913 तक देश में कुल फैक्ट्रियन में मजदूरन के संख्या मात्र 10 लाख रहल। प्रथम विश्व युद्ध अउर सन् 1930–40 के बीच मंदी में भारत कऽ पूंजीपति काफी लाभ कमा लिहलन, बाकि युद्ध समाप्ति के बाद पुनः स्पर्धा शुरू हो गयल। एह से सन् 1947 तक भारत में औद्योगिक विकास बाधित रहल।

भारत में ब्रिटानी शासन के लूट के परिणाम ई भइल कि इहाँ दरिद्रता चरम सीमा पर बढ़ गयल। एक अनुमान के अनुसार 1854 से 1901 के बीच अकाल से 2 करोड़ 90 लाख लोगन के मृत्यु भयल। ब्रिटानी शासन के पहिले भारत अउर देशन के तुलना में पिछड़ल ना रहल। सन् 1750 तक भारत के रहन–सहन में अउर देशन के रहन–सहन के मुकाबले एतना अन्तर नाही रहल। मुगलोकाल में अतना गरीबी नाही रहल ब्रिटानी उपनिवेश बाद के मुख्य शिकार किसान आ किसान–मजूर रहलन। सन् 1918 से तेजी से बढ़ल राष्ट्रीय आन्दोलन के पूंजीपतियनो के सहयोग मिले लगल।

19वीं शताब्दी के आरम्भ में राजा राममोहन राय ई महसूस कइलन कि खाली अन्धी देशभक्ति से काम ना चली। सबसे मूल जड़ बा अंग्रेजी संस्कृति आ भाषा के भारतीयन पर थोपल। कुछ उच्च वर्ग के मिलाके अंग्रेज ई देखावे के नाटक करत रहलन कि ऊ भारत देश के शुभचिन्तक हवन।

भारत में अंग्रेज खुला घोषणा कइलन कि भारतीय छोट आ हीन जाति हऽ। वायस राय मेमो सन् 1870 में ई घोषणा कइलस कि अंग्रेज एक संभ्रान्त सभ्य वर्ग हौ, जवन हीन जाति के ऊपर शासन करे के जोग्यता वाला वर्ग हौ। 1870 में पंजाब क हिन्दुस्तानियन के आत्म–सम्मान पर बड़ा गहरा आघात पहुंचल। एकरा प्रतिरोध में लोग संगठित होवे लगलन।

अंग्रेजी उपनिवेशवादी चरित्र क कारन भारतवर्ष पर ओकर कुप्रभाव देख के बुद्धिजीवी लोग एकजुट होके ब्रितानी सरकार के खिलाफत शुरू क दिहलन। सन् 1857 तक कवनो साल अइसन ना बीतल होई, जब देश में कहीं न कहीं सशस्त्र विद्रोह ना भयल होखे। सन्यासियन क बिद्रोह 1857 में पुलिस बिद्रोह बाकिर अंग्रेज सेना जवना में ज्यादातर हिन्दुस्तानिये रहलन अपने देश के लोगन का प्रतिरोध आ बिद्रोह के कुचल दिहलन।

बड़का जमींदारन अउर पूंजीपतियनों के आखिर राष्ट्रवादी ताकतन के संरक्षण आ साथ देबे के मजबूर होवे के पड़ल। अंगरेजो समझ गइलन कि भारतवर्श में अब बहुत दिन तक उनकर शासन ना चल पाई। धर्म का आधार पर हिन्दू–मुसलमान में भेद डालल गयल। कुछ मुसलमानन के अंग्रेज खूब बहकावें। उन्हन के कुछ सफलतो मिलल लेकिन ई जियादा दिननाहीं चलल। सन् 1857 के बाद तात्याटोपे अउर लक्ष्मीबाई शान्त ना भइलिन। एक अनुमान के अनुसार अवध में डेढ़ लाख अउर बिहार में एक लाख नागरिक शहीद भइलन। 17 जून 1858 के अंगरेजन से लड़त समय झांसी कऽ रानी शहीद हो गइलिन। सन् 1859 तक बिहार कऽ कुंवर सिंह, दिल्ली कऽ बख्त खां, बरेली कऽ खान बहादुर खां, अउर फैजाबाद कऽ मौलवी अहमदुल्लाह आदि लोग मारि दिहल मयलन, मगर आजादी कऽ भूख कम ना भयल। अंग्रेजी शासन के खिलाफ असन्तोष आ गुस्सा बढ़ते चल गयल। कुछ नायक मरा जाँय तऽ दुसर आ तिसर नायक पैदा हो जॉय। इहां तक कि साधारन जनता एह लड़ाई में जुड़े लगल।

■■ गुंजन कुटिया, नारायणी बिहार कालोनी, सुन्दरपुर, वाराणसी, 221005

गज़ल

भालचन्द त्रिपाठी

ठीक–ठाक तऽ लउकत बाड़ऽ।
एतना काहें सउकत बाड़ऽ?

दुसरा खातिर ठीक रहल हऽ
अपना बेरी छउँकत बाड़ऽ।

जा, जा के उनका से पूछऽ
हमरा से का छउँकत बाड़ऽ।

जवन करे के होखीं करिहऽ
अबहीं से का फउँकत बाड़ऽ?

मनला नाहीं प्यार करे से
पागल लेखा डउँकत बाड़ऽ।

आगि लगलि त पानी फेंकऽ
बेना ले, का हउँकत बाड़ऽ?

■■ गौरी, आजमगढ़,

लघु कथा

समाधान

■ धनंजय गुडाकेश

लगातार तीन गो फलाप फिल्म दिहला का बाद डाइरेक्टर के एगो तरकीब सूझल रहे। एगो हॉट सीन देबे के। हीरोइन के परदा पऽ बिकनी में उतारे के। आपन कैरियर दांव पऽ लागल देखि के हिरोइनो डाइरेक्टर के बात मान लेले रहे। समुद्र के किनारे बिकनी में नहात एगो हॉट सीन देले रहे अपना अगिला फिल्म में आ ऊ फिल्म बाक्स आफिस पऽ जोरदार ढंग से सफल भइल रहे। उ साल के सबसे बढ़िया फिल्म साबित भइल रहे आ फिल्म फेयर के चार–चार गो पुरस्कार झटक लेले रहे।

आजु ओही सफल फिल्म के सफल हिरोइन के जादुई बिकनी नीलामी खातिर तइयार रहे। बहुते भीड़ जुटल रहे। कुछ लोग नीलामी में भाग लेबे आइल रहले, ढेर लोग ओह जादुई बिकनी के देखे आइल रहले। बाकिर शहर के सबसे बड़ व्यापारी ओकरा के खरीदलस, जवन ओकर कीमत पचीस लाख लगवले रहे।

ओइजा से तनी दूर हटि के एगो चित्रकार के पेंटिंगो बेचात रहे। ऊ चित्रकार कवनो पसिद्धि के मोहताज ना रहे। ऊ देश के एगो बढ़िया चित्रकार रहे। रामायन के पात्रन पऽ कइल ओकर चित्रकारी बहुत प्रसिद्ध रहे। ओकरा चित्रन के कीमत रहे खलिसा पचास हजार। बाकिर ओकरा ओर केहू देखबो ना करे आ जे देखबो करे ऊ मुँह बना लेबे। जइसे ऊ कवनो गंदा चीज देखि लेले होखे।

चित्रकार एक बेर ओह जादुई बिकनी के आ एक बेर अपना चित्रन के देखलस, बड़ा घृणा से। एगो कुटिल मुस्कान ओकरा चेहरा पऽ फइल गइल। दिन ढलत रहे। सुरूज पच्छिम क्षितिज का ओर बढ़ल जात रहे। चित्रकार अपना कमरा में टहलत रहे। घाम जंगला के सीसा से छनि–छनि के आवत रहे। बाकिर ओकरा में अब ओतना गर्मी ना रहे। एगो गर्मी चित्रकार के भितरो रहे, जवना में ओकरा मन के कई–कई गो सुरूज भसम होत रहले।

अचानके ऊ उठल आ चित्रन के फारे शुरू क दिहलस। फेरू कूँची उठवलसि। कुछ देर अइसहीं बइठल कुछ सोचत रहल। फेर कैनवस पऽ सीता के नंग–धड़ंग चित्र बनावे शुरू क दिहलस। चित्र पूरा होखते जइसे ओकरा एगो वहशी खुशी मिलल होखे। ऊ ठठा के हँसल। जइसे पागल हो गइल होखे। ओकरा गतरे–गतर पसेना बहत रहे। बदहवासी में दउरत ऊ कमरा से बाहर आइल आ दउरते सबसे ऊपरी मंजिल पऽ चढ़ि गइल।

गिरत खा ओकर मूड़ी ऊपर रहे।

■ ■ तिवारीपुर, दहिवर, बक्सर (बिहार), 802116

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से अनुरोध.....

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा टाइप कराके रचना–सामग्री आ साथ में संक्षिप्त–परिचय आ फोटो ग्राफ भेजीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

विचारपरक लेख

नशा के समाजवाद आ समाजवाद के नशा

■ अशोक कुमार तिवारी

एह दुनिया में केवनो चीज अपने–आप में पूरा ना होला। हर अच्छाई में कुछ ना कुछ बुराई होला, ओसहीं हर बुराई में कुछ–ना कुछ अच्छाई जरूर होला। जे केहू अच्छाई में बुराई खोजेला ओहके निगेटिव सोच, अउर जे बुराई में अच्छाई खोजेला ओहके पाजिटिव सोच के कहल जाला। अइसे हर नशा में बुराई होला ई एगो कटु साँच बा, बाकिर जरूर एहमे कुछ ना कुछ निमनो बात होई एही से एकर समाज में साथ–सोहबत से नशा के प्रचलन चलल आवता। हमरा इहो बुझाता कि ई अन्त काल तक रही। नशा के अच्छाई हमरा समझ से ई होला कि ई आपसी गुट–गोल अउरी समाजवादो के जनम देला। अब एगो उदाहरण लीहीं, अइसे उदाहरण शब्द दू गो मूल शब्द 'ऊद' अउरी 'हरण' के संजोग से बनल बा, जेवना में 'ऊद' शब्द के मतलब मूरख अउरी 'हरण' चाहें हरन शब्द के मतलब होला ले–लिहल। एह तरी जेवन बात केवनो कथ्य चाहे तथ्य के सन्दर्भ में ऊदई के हरन क लेब यानी मुर्खता यानी अन्धकार के हरन कइ लेव ओहके उदाहरन कहल जाला।

अब मूल बात पर आईं जा, नशा कइसे आपसी भाई–चारा, गुट–गोल आ समाजवाद के जनम देला? उदाहरन लीहीं, हमनी के यू0पी0 आ बिहार में सुर्ती–चूना के बड़ा क्रेज बा। मोटा–मोटी साठ परसेंट लोग सुर्ती–चुना के सेवन करेलें। एह साठ परसेंट में बीसे परसेंट लोग खरीद के खालन बाकी के चालिस परसेंट लोगन के काम मँगनिए से चलि जाला। एह भोजपुरिया समाज में एहके खराबो ना मानल जाला। एगो खीसा कहल जाला कि एक बेर एगो राजा हाथी चढ़ल कहीं जात रहलन। राह में देखलन कि एगो गिरहत आपन हर–बैल खड़ा कइके खइनी पीटत रहे। ई देख के राजा के सुर्ती के एतना तलब लागल कि महावत से कहिके हाथी रोकवलन आ किसान किहाँ जाके खइनी मांग के खइलन। अइसन होला सुर्ती के तलब। अइसहूँ हमनी के अकसर देखेके मीलेला कि सुर्ती मांगे वाला के भाव में केतना अनुनय–बिनय, चिरउरी होला। ऊ दाँत निपोरले विनयवत होके चाचा–बाबा–मउसा–काका–भइया कहिके सुर्ती माँगल अजबे भाव–विभोर कइ देला, देबे वाला के पास अगर सुर्ती बा त ओकर कदम जहाँ के तहाँ ठिठक जाला। हाथ बगली में आ चुनवटी–डिबिया बाहर। ओही में मान लीहीं जदि सुर्ती बा आ चूना ना, तब चूना खातिर तिसरका के इन्तजार। तिसरका आइल ओहूके पास सुर्ती–चुना कुछ ना बा, लेकिन सुर्ती खाएके मन जरूर बा। तब चउथका के इन्तजार। चउथका आइल, चूना देहलसि, चार खीली सुर्ती रगड़ाये लागल। एही बीच घर के दुखम–सुखम होता, केहूके शिकवा–शिकायत होता, केहू के बड़ाई होता। अब आपे बताई कि ई समाजवादी गोष्ठी का अलावे का ह?

एक दिन हम बाजार गइल रहीं। एगो दोकान पर बइठले मुस्किल से पाँच मिनट बीतल होई कि देखत बानी कि गाँवे के एगो पंडीजी बड़ा बेचैनी में सामने से गुजरले। फेरू थोरहीं देर में ओतने बेचैनी में वापस अइले फेरू गइले आ अइले। काफी खुरियाबॉट कइ देहलन। अन्त में हमरा ना रहाइल। हम पुछिये दिहलीं– "का पंडीजी, का बात बा? बड़ा बेचैन लागतानी?" पंडीजी कहले– "ना हो, कवनो खास बात ना बा। बात एतने बा कि एह घरी पउवा के दाम एक–स–तीस हो गइल बा। अस्सी गो त हमरा लगे बा, आउर अगर कोई साठ गो मिला दीहित त एगो पउवा अउरी चिखना हो जाइत, आ दूनो लोग के कामो हो जाइत।" हम हँसि दिहलीं "आछा त ई बात बा, हमू कहीं कि काँहे रउवाँ एतना तेजियाइल बानी?" अभी एतने बात भइल रहे कि तेजना नउवा लउकल। पंडीजी आपन प्रस्ताव रखले, आ ऊ तुरन्त मान गइल। दूनो लोग मिलके भट्ठी का ओर चल दीहल। हमरा मन में सहजे एगो कविता आ गइल–

"मिलले पंडित, मिलले नउवा,
दाम मिलाके, आई पउवा।"

अब रउवे बताईं, भइल कि ना ई आपसी समाजवादी भाई–चारा?

जेवना गाँव में दस गो गँजेड़ी बाड़े, ओह दसों में जबरदस्त सेटिंग देखल जाला। दसों समय से नित्य क्रिया कइके, नहा–धो के, बबरी झार के नियत समय पर सेटिंग वाला जगह पर पहुँच जइहें। भले आपस में पहिले खानदानी दुसुमनी रहल होखे, लेकिन उनका बीचे ओघरी अइसन कुछो ना रही।

समय से जगह पर सब जुट जइहें। लागी गाँजा मलाये। सुर्ती कटाए, केहू गोटी रगड़ता त केहू लकड़ी से चीलम साफ करता। एही में केहू साफी भिंजावता। आधा घण्टा गाँजा बनेऽ में, अउरी आधा घण्टा ओके पीयेमें। ओही गाँज के सोन्ह आ मीठ खुशबू के बीच राजनीति, दरशन शास्त्र, भक्ति, गाँजा के महिमा लेखा विषय पर चर्चा। चीलम दहिने से बाँये घूम रहल बा, जेकर नम्बर बा ऊ "दानी चॉप के मार तीन पानी।" "लहरी भेंज दू गो मेहरी, एगो देहाती एगो शहरी। एगो भागी–एगो ठहरी।" "जे ना पीए शिव के बूटी, ओकरा पिछवारा रहरी के खूँटी।" लेखा नारा लगा रहल बा। ई ह नशेड़ी समाज आ ओकर समाजवाद।

जइसन कि सभे जानता कि 'नशा' शब्द के अर्थ होला केवनो विषय चाहे वस्तु में आसक्त हो गइल, ओकर गुलाम हो गइल। अब गुलाम होखला के मतलब हम ओह लोगन के बतावल जरूरी नइखीं समझत जेकरा पर सैकड़न बरिस अंग्रेजन के गुलामी, सैकड़न बरिस तक गुलामी के अबहिन ले असर बा। भारत पर अंग्रेजी शासन के रूप में लदाइल अंग्रेजन के समाजवाद रहे। देश आजाद भइला पर जेवन समाजवाद आइल ओकर नाँव रहे कांग्रेसी समाजवाद। बीस–पचीस बरिस तक ठीक–ठाक रहला के बाद, जब कांग्रेसी समाजवाद देश पर बोझा अस हो गइल, आ भितरे–भीतर हाहाकार अस बेयापि गइल, त जयप्रकाश नारायण के समाजवाद उदित भइल आ जयप्रकाश के समाजवाद में सगरो प्रकाश के जय भइल। डॉ0 राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव, मा0 कांशीराम लेखा लोगन के समाजवाद के अँजोर कमतर नारहे। एही उठती–गिरती, बनती–बिगड़ती के बीचे एगो युवा तुर्क देश के सत्ता के सर्वोच्च शिखर प बिराजमान भइल। एकरा बाद से त समाजवाद के आड़–अलोत लेके केतने साँप–गोजर आ बेरीढ़, बे घाँटी के जीव–जन्तु देश आ प्रदेश के कुर्सियन पर वैध–अवैध कब्जा करत–छोड़त अइले आ आजुवो लपटल बाड़े। आज समाजवाद ऊ गाइ के खाल हो गइल बा, जेकरा आड़–अलोते में सारा जाएज–नाजाएज काम हो रहल बा। समाजवाद के नारा लगाके समाज में 'वाद' पैदा कइल जाता आ ओही वाद–विवाद में स्वार्थ साधल जाता। भोजपुरी कवि गोरख पांडे गवले रहले– "समाजवाद बबुआ धीरे–धीरे आई / आन्ही से आई / गान्ही से आई / टुटही मड़इयो उड़ाई / समाजवाद बबुआ धीरे–धीरे आई।" त 'समाजवाद' नित नया चोला आ मुखड़ा पहिरि हाजिर होते रहत बा। केतने भ्रष्ट नेता, अधिकारी, आतंकवादी अपना–अपना समाजवाद में मस्त बाड़े। ई हवे समाजवादरूपी नशा के नशेड़ी, आ ई ह समाजवाद के नशा। कुछो होखे ई तय बा कि आज 'नशा के समाजवादी' होखे भा 'समाजवाद के नशा' समाज खातिर घातक बा।

■■ ग्राम व पत्रालय : सूर्यभानपुर, बलिया (उ.प्र.)

लघु-कथा

लड़ाकिन

■ राजगुप्त

ऊ बजार से सेब कीनि के ले आइल रहली। घरे अवते, धोइ–धाइ के एकान्ता में खाये बइठ गइली। एगो सेव कटली त अतना मीठ लागल कि पूरा खा गइली। दुसरका सेव कटली त भीतर से सड़ल निकल गइल। अब का कूल्हि मूड चउपट। झनक के उठली आ काटल सेब लेले बाजार में, ठेला वाला किहाँ पहुँच गइली।

दुकानदार एगो परिचिताह गँहकी के सेव तउलत कहत रहे, 'का बताईं महतो सेठाइन आपन छोटकी पतोहि बड़ा छाँट–बीन के बिछली। सुन्नर, सुशील पतोहि क डोली उनुका घरे उतरल तऽ बूझऽ कि पूरा घरवे उतराइल फिरे, बाकि कुछुए दिन बाद ऊहो लोग बूझ गइल। जान लऽ कि ऊ अइसन लड़ाकिन निकलल कि घर क सज्जी सुख चैन गायब हो गइल।'

सेब फेरे पहुँचल ठेला वाला क बात सुनते थथम गइली। सेब क ठोंगा वाला उनकर बढ़ावल हाथ गते–गते पाछा लवटि आइल। फेरल त दूर, सरल सेव वाला झोरी लेले वापिस घरे लवटि अइली।

■■ राज साड़ीघर, चौक बलिया

समीक्षा

एगो नया गांव के संरचना के सपना : गांव कऽ बात

■ कृष्ण कुमार

कथा शिल्पी विजयशंकर पाण्डेय के पहिला कहानी–संग्रह 'गांव कऽ बात' (पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2013) भोजपुरी कहानी साहित्य के एगो विशिष्ट उपलब्धि के रूप में हमरा सोझा बा। एह में भरपूर मार्मिकता आ संवेदना के साथे लोकजीवन के समकालीन समस्यन के चित्रित कइल गइल बा। खासकर नारी–संघर्ष आ नारी चेतना के केन्द्र में रखत पच्चीस कहानियन के एह संग्रह में अइसे तऽ पच्चीस गांव के बतकही भइल बा। बाकिर पूरा संग्रह पढ़ला के बाद बुझाता कि एह में भारतवर्ष के एक्को गांव छूटल नइखे। भिर्जापुरी बोली में पाण्डेय जी सभ कहि देले बानीं।

हिंदी आ भोजपुरी दूनों भाषा में समानरूप से लेखन करे वाला विज्ञान के छात्र अवकाश प्राप्त अभियंता विजयशंकर पाण्डेय के कहानी व्यापक रूप से उत्तर प्रदेश के देहाती परिदृश्य के उद्घाटन करऽतारी स; जेवना में मेहरारून के करुणा आ संघर्ष भरल जीवन के बयान भावना के अछूतापन, चाहे अनकहल प्रेम के खिंचाव, सभ पाठकन के सोझा सघल रचनात्मक भाषा में परोसल गइल बा।

'बहू' कहानी में दहेज के लालच में झूठ बोलि के वशिष्ठ राय अपना बेटा धर्मेन्द्र के बिआह एगो अभियंता कमलेश राय के बेटी राधा से कऽ देहलें। वशिष्ठ राय कानूनगो के पद से तहसीलदार होके दू साल पहिले रिटायर भइल बाड़ें। जनता–जनारदन के पूरा माल घोंटले बाड़ें। घूसखोरी के पइसा आपन ब्याज लेके चल गइल। लजाइल लइका ढोंढ़ी टोवे। उहे हाल धर्मेन्द्र के भइल। अन्त दांव में अपने आप से कहऽतारें, "पिता जी डी0एम0 होखे के सोर क देलें आ हम कानूनगो भी ना हो पवनी। बाद में राधा धर्मेन्द्र के राह बनली। आ उनका जीवन के गाड़ी पटरी पऽ लिया दिहली। बहू होखे त राधा अइसन, एह कहानी के शीर्षक बहुते सटीक बा।"

'भग्गल कऽ मड़ई' के नायक राम अधीन बाड़ें। बीस बरिस के उमिर में घर छोड़ि के मिरजापुर वाली सड़क के किनारे एगो मड़ई बना के रहे लगलें। घर से भागे के चलते उनकर नाम भग्गल हो गइल। लोग–बाग के सेवा करते आपन जीवन गुजार देलें। एह कहानी में उपभोक्तावादी समय के चित्रण मन के मोहि लेता। का रहनी जा, आ का हो गइनी जा...?

'चोर' कहानी के नायक सुरेश आ नायिका मल्ली बाड़ी। सुरेश चोरी क के कीमती साड़ी, कपड़ा, गहना के डब्बा ले आवऽतारें। पति के एह काम से मल्ली के दुख बा। अन्त छाँव में सुरेश के पुलिस पकड़ि लेतिया। आ मल्ली आ उनकर तीनों बच्चा रोअत–कलपत बाड़ें सऽ। एगो उपदेश–दृष्टि मिलऽता कि बुरा काम के बुरा नतीजा भोगे पड़ेला।

'सराबी के घर' बड़ा मार्मिक कथा। कन्तवा नमरी शराबी बा। ओकर घरनी कलुई कालोनी में दाई के काम करऽतिया। एकदम पतिबरता मेहरारू बिया। तीन गो बच्चा बाड़ें स। ऊ मेहरारू जांगर ठेठा के खटऽतिया आ परिवार के परवरिश करऽतिया। कहानी में एगो खलनायक बा, सोहना। जवन कन्तवा के दस–बीस रोपेया से मदद करऽता। बाकिर निकम्मा कन्तवा ओकर करजा नइखे लवटा पावत। अंत में अपना घरनी कलुई के साथे संभोग करे खातिर दस बजे रात में कन्तवा ओकरा के नेवतऽता। बाकिर लंगोट के पक्का मेहरारू कलुई एह खातिर तइयार नइखे होत। आजिज आ के कन्तवा आपन घरे ओकरा के लिख के अहथिर हो गइल। कलुई तीनों लड़िकन के लेले सड़क किनारा झोपड़ी लगा के रहे लागल। पूस के जाड़। रात के बेरा। एगो ट्रक ओह झोपड़ी में समा गइल। आ चारों जीव के मुआ देलस। कहानी में सम्वाद ना होखे के चलते कहानी तनी नरम हो जाले। ना त ई नियतिवादी कहानी करेजा खँखोरि दे तिया।

कन्या भ्रूण हत्या आ दहेज के चित्रण 'पेट कऽ बिटिया' में लउकऽता। एकर मुख्य नायिका स्वामीनाथ के माई बाड़ी। जे अपना चार गो बेटिन के बिआह कर में जमीन–जायदाद आ पति सब खो चुकल बाड़ी। लाचार में विचार ना होला। एह से ऊ अपना बेटा स्वामीनाथ के बेटी पैदा ना होखे के सिखवली। माई के कहला में परि के स्वामीनाथ तीन गो बिआह कइलें आ दस गो भ्रूण हत्या। तिसरकी पत्नी के दुसरका भ्रूण हत्या पऽ तइयार ना भइला के चलते तैराकी सिखावे के बहाना से टायर में पीन से छेद कइले आ ओह घरनी के गंगा जी में डुबा देलें। पुलिस पीछा लागल। सभ सच्चाई के पता लगवलसि। आ स्वामीनाथ का साथे उनकर माई आ भ्रूण हत्या करे वाला डॉक्टर सभे जेल के हवा खाता। कहानी के अन्त कथाकार के सूक्ष्म सोच के सवाल के साथे अपना मुकाम प पहुंचऽता कि का अतना भइला के बादो कन्या भ्रूण हत्या रुकल...?

'कड़ुवा सिंह' एगो डकैत के कथा बा। जवन सिर्फ गहना–गुरिया के छिनइती करऽ ता। दोसर कवनो गड़बड़ी ना। खून–खराबा से कोसन फरका। खुर्दा के राम निहोर बाबू के घरे नयी दुलहिन जाहि दिन आवऽ तिया, ओही राति अपना साथिन के साथे उनका

घरे डाका डाले आवऽता। एगो डकैत के रामनिहोर बाबू के बेटा महेन्दर से उठा–पटक हो जाता। ऊ डकैत महेन्दर के गोली मार देता। कड़ुवा सिंह समझि जाता, कुछ गड़बड़ हो गइल। ऊ आपन गिरोह के साथे नव–दु–एगारह हो जाता। पांच दिन के बाद खड्ग सिंह लेखा रामनिहोर बाबू के सभ गहना उनका बर्दवानी में फेंक के, अहथिर हो जाता। आपन डकैत के गैंग तूर देता। आ रामनिहोर बाबू के मुअला के बाद उनका पतोह के नौकर बनि के आपन जीवन खपावत बा। हृदय परिवर्तन का थीम पर लिखल आदर्शवादी कहानी बिया 'कड़ुवा सिंह'।

पारिवारिक कलह के कहानी बिया 'नइहरे में ननद' बेजोड़ कहानी बा। झगराहिन ननद कमली अपना भउजाई धनेसरा के बारे में चुगली कऽ के पागल बना दे तिया। अन्त में धनेसरा मू जा तिया। सांचहूँ मेहरारू के दुश्मन मेहरारू, पुरुषो से जादे होली। बाकिर विधना के नजर से केहु ना बांचि पावे। अन्त दांव में कमली के मुंह में कैंसर हो जाता आ अछैवर जवना पैर से धनेसरा के मारत रहे ओह पैर में लकवा मार देता। कहाब हऽ– "जइसन करबऽ ओइसन पइबऽ।"

सोंठउरा आ घीव लेले बेटा पतोह किहां बम्बई पहुंचल बाप राम खेलावन के कहानी 'रिटायर पिता' आजु के बदलल परिवार आ समाज के यथार्थ चित्रण करऽता। बाकिर राम खेलावन के मउअत कहानी के अंत में हो जाता। ई त जीवन से पलायन कइल कहाई।

बेमेल बिआह के बखान करत कहानी 'भउजी' बरगद के नीचे चदरा पर बइठल आपन बेटा इन्द्रकमल आ बेटी सोनी के लोर भरल आंखिन से खोजत ससिकला के कहानी 'आज कऽ दिन' मार्मिक कहानी बा। अवसर पाके बेटा–बेटी, माई–बाबू से कइसे मुंह मोड़ लेलें एकरे कच्चा चिट्ठा बा ई कहानी।

सरजू के हुक्का पीये में पूरा कहानी कहा गइल बा 'गांव कऽ पूजा'। रूढ़ियन के तूरत लोगन में विश्वास जगावऽता। सरसिया गांव के लोग निकाली कऽ भेंड़ा काट के खा गइल, बाकिर ओह लोग के कुछुओ ना भइल।

'रामदुलारी बूढ़ा' कहानी इंदिरा गांधी के खानपान आ उनका मउअत के चर्चा करत, अंग्रेजन के क्रूरता आ देश के आजादी के लड़ाई के वृत्तांते में अझुरा जाता। ओझा, सोखा, डाइन के कहानी बा 'बाँझिन'। गुर्दा डोनेट करे वाली कहानी 'गुर्दा' के क्लाइमेक्स से अस्पताल के सब पोल खुल जाता। एह कहानी के अंत बहुते मार्मिक– "ई संसार अइसै चली। मरेवाला मरिहैं। पइसा कमाये वाले पइसा कमइहैं। कानून आपन काम करी। आपने चाल से चली। सरकार आपन काम करी।"

नाजाएज कमाई वाला के बाल–बच्चा कबो सही राह पऽ ना आवे, एह बात के सटीक जानकारी देत कहानी 'कुलटा' काबिले तारीफ बा। आदमी के जीवन में कब आ कइसे गंवे से दुःख समा जाई एकर बानगी 'अलगू' कहानी में झलकऽता। का रहन अलगू आ का हो गइलें?

चीफ साहेब सुरेन्द्र चौहान के भानमती कइसे सबक सिखावऽतारी एकर प्रमाणिक दस्तावेज बा 'बदला'। आजु के समय में भानमती लेखा मेहरारून के जरूरत बा, जे समाज के कुछ सबक सिखा सके। 'गांव के फुआ' कहानी के मुख्य पात्र राधिका फुआ के बात–व्यवहार बहुते काबिले तारीफ बा। एह कहानी के कहऽतारे जामवन्त दद्दा। जहंवा ले फुआ के बेटा नन्दू चाहे सेवारमवां के बतकही बा, ओह से राधिका फुआ के जोड़ल वाजिब नइखे। बात–बतकही के दुःख जब करेजा में पइस जाला ओइजा आदमी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाला। ऊ ओह घरी कुछुओ कर देला। काहे कि ओकरा विवेक के मउअत हो जाला। सेवारमवां भले राधिका फुआ के नेकी भुला गइल, बाकिर ओकर बाप जोखू अपना बेटा से बदला लेबे के वादा कइलें। ई बात मन के भीतरी तक हिला देता। राधिका फुआ आ जोखू दूनों के चरित्र प्रभावी बा।

'दसा दस बरिस, चाल चालीस बरिस' कहानी के मुख्य पात्र श्याम लाल बाड़ें। जे धन–सम्पत्ति के मामला में शून्य से शुरू होके शिखर तक पहुंचत बाड़ें। बाकिर अपना चाल–स्वभाव के चलते फेरू शून्य पऽ आ जा तारें। भारतीय किसानन के दुःख–दर्द बखानत कहानी 'बिरजू किसान' एह संकलन के सबसे लमहर कहानी बिया। सरजू के नौवीं संतान बिरजू एगो मेटाफर बा। जवन पूरा भारतीय किसानन के दास्तान बतावऽता। कहानी के अंत में भले बिरजू के दिन–दशा पलटि जाता बाकिर सांच कहीं त भारतीय किसान के हालत आजुओ बिरजुए अइसन हो गइल बा।

एह संकलन के शीर्षक कहानी 'गांव कऽ बात' के नैरेटर राधेश्याम भइया बाड़ें। गुलामी के समय में गांव के दुर्दशा का रहे आ ओघरी कतना गरीबी से गांव के लोग गुजरत रहे, एकरे वृत्तान्त बिया ई कहानी 'गांव कऽ बात'। 'चरवाहा' कहानी के नायक घरबरन बाड़ें। जंगल में गाइन के झुंड के कइसे चरवाही करावल जाला, एह कहानी में खूब अच्छा तरीका से बतावल गइल बा। 'राम अधीन कारतकार' कहानी किसानी समस्या से भरल कहानी बिया। भानमती के दुःख–दरद से लबरेज कहानी 'गांव कऽ मौसी' संकलन के अंतिम कहानी बिया। एगो विधवा के मार्मिक प्रसंग हिया के छू देता। बाकिर उनकर सफल मृत्यु से पाठक के बहुते खुशी भेंटाता।

'गांव कऽ बात' अपना ठेठ देशज मुहावरादार भाषा, अलंकाररहित आत्मीय वर्णन शैली, जीवन्त परिवेश आ व्यापक राजनैतिक–सामाजिक सरोकार के

साथे एगो नया अनुभव से गुजरे के अवसर देता। निरंतर जटिल होत जाए वाला ग्रामीण परिवेश के प्रमाणिक चित्रण खातिर कथाकार जवन शिल्प निर्मित कइले बा, ऊ एह संग्रह के चिन्ताधारा के विकास के संदर्भ में सटीक आ उचित बुझाता। यद्यपि एह संग्रह के अधिकांश कहानियन में नायक–नायिका विहीन यथार्थ रचाइल बा जहँवाँ सामूहिकता में चीजन के देखे–देखावे के रिवाज बा। सामूहिक–संदर्भन में यथार्थ के रचना कवनो अवगुण ना हऽ, बलुक समय के बदलाव के सबसे अधिका बेहतर तरीका से जाने–समझे के भरपूर अवसर भेंटाला, बाकिर एह में एगो चुनौती हरदम रहेला, समूचा संदर्भन के सामूहिकता में संतुलन साधे के। काहे कि ई बिखराव कथाकृति के ना खाली शिल्प के कमजोर बनावेला बलुक वैचारिक दृष्टियो से रचना के क्षति पहुंचावेला। बाकिर एह कसौटी के संदर्भ में कथाकार के प्रशंसा करे जोग बा कि बिखराव के बावजूद, शिल्प के एकाध प्रसंग के छोड़ि के झोल नइखे आइल। वैचारिक दृष्टि से यथार्थ के बिखराव के जिम्मेदारी भी कथाकार पर डालल उचित नइखे बुझात। एकरा के हम यथार्थ के द्वंद्वात्मक प्रकृति के हिस्सा मानत चरित्रन के व्यक्तिगत कमजोरी से जोड़ि के देखीला। जे जइसन बा, कथाकार ओकरा के ओइसन रचि देले बाड़ें। इहे ईमानदारी शिल्प के बचावेला आ विचार के नैतिक दबावो से कथाकार के मुक्त करेला। एह दृष्टि से समीक्ष्य कथाकृति कथाकार के सुंदर रचना बा।

■■ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा–802301 (बिहार)

पुस्तक चर्चा

'सइंचल सपना' (कहानी संग्रह)

लेखक- रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, मूल्य-120/- प्रकाशक : सूर्यश प्रकाशन, आनन्द नगर, बलिया (उ0प्र0), 277001

रमेशचन्द्र जी भोजपुरी अउर हिंदी के जानल–पहिचानल उपन्यासकार आ कथाकार हईं। 'सइंचल सपना' उहाँ के एगारहवीं कथा पुस्तक हउवे जवना में तेरह गो कहानी संकलित बाड़ी सऽ। सन् 2004 में अपना पहिलका कृति 'तरायल' (हिंदी उपन्यास) का माध्यम से साहित्य जगत में पदार्पण कइला का बाद से उहाँ का लगातार लेखन में जुटल बानीं जवन उहाँ के सृजनशीलता कऽ प्रमाण बा। एकरा पहिले रमेश जी कऽ 'चिमनी के धुआँ' नाम कऽ भोजपुरी कहानी संग्रह चर्चित भइल रहे।

बहरहाल, चलीं, कथाकार के एह् नवीनतम कृति पर बियान केन्द्रित कइल जाव। रमेश जी कऽ विशिष्टता हउवे कि उहाँ का कथानक चुने खातिर ढेर मगजमारी ना करेलीं। लोग जवना घटना भा खबर के रोजमर्रा के चीझु मानि के तुरन्ते बिसरा देला, उहाँ का ओही घटना चाहे खबर के एगो दिलचस्प काहनी में ढाल देवे के क्षमता राखेलीं। उहाँ का लेखन में 'कानो सुनी' ले बेसी 'आँखों देखीं' कऽ प्रभाव नजर आवेला। आत्मानुभूति का बले अपना कल्पनाशीलता से कहानी में एगो आदर्श निरूपित कइला के प्रयास करेलीं जवना से साँच उजागर होखे आ समाज के कवनो दिशा मिल सके; जइसे, एह् संग्रह के कहानी 'बलि के बकरा'। सियासी दाँव–पेंच, विभागीय भ्रष्टाचार, बाजारवाद आ शहरीकरण के दुष्प्रभाव अउर पारिवारिक सम्बन्धन में तेजी से व्याप्त हो रहल संकीर्णता आदि का पृष्टभूमि में कथाकार कऽ हर कहानी बेल–नियर पसरत प्रतीत हो रहल बाड़ी सऽ। कुछ कहानी जइसे कि 'हेराफेरी', 'वोट बेचवा', 'कोदो देके पूत पढ़वलीं', 'कोलवारी के रूपिया' आ 'सांसद निधि' तऽ बहुते पठनीय बाड़ी सऽ। इन्हनीं में राजनीतिक आ सामाजिक विसंगतियन पर कथाकार के व्यंग्यात्मक दृष्टि बा। कई गो अइसनो कहानी बाड़ी सऽ (जइसे– 'बलि के बकरा', 'घरवा कइसे अगोराई', 'सइंचल सपना') जवना के कथानक जानल–सुनल लागत बा। उन्हनीं में कथाकार के कथा सृष्टि ओतना जियतार नइखे हो पावल जेतना एगो मँजल लेखक से अपेक्षा होखेला। आज प्रस्तुतिकरण में सांकेतिकता आ नाटकीयता के इस्तेमाल हो रहल बा यानि कि बहुत ज्यादा का बजाय बहुत कम में सार्थक आ सोद्देश्य कहे कऽ जरूरत बा। रमेशचन्द्र जी अपना कथाशिल्प में तनी अउरी सजग रहितीं आ जथारथ से केतना लेबे के बा, केतना छोड़े के बा– एकरा प्रति अनुशासन रखितीं, तऽ भोजपुरी कथा साहित्य के मान बढ़ावे वाला कहानियन के सृष्टि करितीं।

भाषा आ वर्तनी सम्बन्धी कइगो त्रुटि एह् संग्रह के कहानियन में अक्सर खटकत बा। कहीं–कहीं शब्दन कऽ अइसन क्षेत्रीय प्रयोग भइल बा जवन मानकीकरण का लिहाज से उचित नइखे बुझात काहें कि ओ शब्दन कऽ भोजपुरी के विशाल क्षेत्र में दोसरा ढंग से इस्तेमाल कइल जाला। संवाद में प्रासंगिक आ सुभाविक प्रवाह ना रहलो से कथा के प्रवाह में खलल पैदा हो रहल बा...। एह् कूल्हि कमियन के नजरअंदाज कइ दिहल जाव तऽ 'सइंचल सपना' एगो उत्कृष्ट अ पठनीय कथा संकलन कहल जा सकेला। गेटअप आ छपाई आकर्षक बा। ■■ **शशि प्रेमदेव,**

अंग्रेजी प्रवक्ता, कुँवर सिंह इण्टर कालेज, बलिया

एगो पाठकीय प्रतिक्रिया

'परनाम ईया' : आशारानी लाल

■ डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव

लोक–संस्कृति के कुआँ बड़ा गहिर होला। कुछ लोग ओमे झांके तक से डेराला आ कुछ लोग साफे डूब के चुभुक–डुबुक करत ठंडा पानी के आनन्द लेला। डॉ0 आशारानी लाल एह सांस्कृतिक कुआँ में पाताले डूब के, मने–मन हुलास भरत बाड़ी।

अइसन–अइसन प्रसंग कि ओमे लेखिका कबो डूबत बाड़ी, त कबो उतरात बाड़ी। रउवा चुपचाप एह के देखीं भा पढ़ीं। 'ईया' के आगे एह चिठियन में भोजपुरी प्रदेश के ईया–दादी, अइया के मानसिकता के बड़ा स्थिर भाव से उकेरल गइल बा। पाठक लोग का सामने एगो बीतल दुनिया के नजारा पेश हो रहल बा। खल–बेखल के सवाल उठावत बाड़ी पोती आ ओही में सझुराइल–अझुराइल बा जवाब; जवना में अतीत आ वर्तमान के अनुभव आ ओकर समन्वय देखाई पड़त बा। एमे त कवनो शक नइखे कि समय बहुत तेजी से बदलत बा, जीवन के मूल्यों प्रभावित हो रहल बा। सूप में पड़ल–फेटाइल सतमेझड़ा दाल में से ओह दालन के बीन लेबे के बा, जवन कवनो अवगुन ना करे आ नीमन से पच जाव। इहे सब पचावे के कोशिश में लेखिका अपना याददास्त के इस्तेमाल खूबसूरती के साथ कर रहल बाड़ी–एगो जरूरी सवाल के साथे 'काहे कहली ईया'।

नीमन प्रसंग के रोचक भाषा में कहल बहुत आसान ना होला। जे मन से एह चिट्ठियन में डूबी ओकरा आगे अतीत में भागत बिरासत आ आधुनिक जीवन दृष्टि के प्रभाव साफ लउके लागी। गहराई से बिचार करीं त आज के ऊटपटांग बदलाव के लेके लेखिका का भतर पीड़ा बा।

एह संस्करणात्मक कथनी में कहीं आपबीती बा त कहीं जगबीती बा। डॉ0 भगवती प्रसाद द्विवेदी के चटक चिंतन (प्राक्कथन) में 'काहें कहली ईया' सांस्कृतिक विरासत के जियतार ऐनक बा। मगर पुरान ऐनक में धब्बा लागे के डरो होला। आशारानी लाल जइसन लेखिका के अगर कलम जागल रही त ना धब्बा लागी आ ना विरासत के कबो हरारत महसूस होई।

लेखिका ईया से बेर–बेर बतिया के आपन मन हलुक कर लेत बाड़ी। बाँझ मेहरारू के पीड़ा, सहनशीलता आ विडम्बना के एगो उदाहरण – बाँझ मेहरारू समाज में उपेक्षित बाड़ी। निराशा में आपन अंत कर देबे के चाहत बाड़ी मन कहत बा कि उनकरा के जंगल में कवनो मादा जानवर खा जाइत त अच्छा होइत। मगर कवनो मादा जानवर उनकरा के खाये खातिर तइयार नइखे। ओकरो भय बा कि उनकरा के खाते उहो मत बाँझ बन जाव। बांझपन से सभे डेरात बा। मगर आज के संदर्भ में यंत्र आ दवाबीरो के चलते बांझपन डेराये के विषय ना रह गइल। आधुनिक युग में ओकरो सामंजस्य बइठ जाता। एही तरे डेगे–डेगे लउके वाली ईया से आपन बात कहला से लेखिका के मन नइखे भरत–

"ए ईया, तोहार दलिद्दर केतना जबरजस्त रहे कि रोजे–रोजे ओके दीया जरा के भगावल जात रहे, तबो दिया–देवारी के बिहान भइला जबले तोहार दिहल मंत्र के जाप सूप के साथे ना कइल जाय, तबले ऊ घर–गाँव छोड़ के भागते ना रहे।"

"केतनो दुनिया बदली बाकी तोहरा दलिद्दर के नांव सुनते सब घबड़ा जाई।"(85)

बत्तीस गो 'पाती' प्रसंग में ईया के आगे जेतना बात उभर के आवत बा ओमे पुरनका–नवका के फेंट कम नइखे। समाज आ संस्कृति में सनाइल धरोहर समय के अनुसार सामंजस्य के खोज करत बा। भागत समय के जीवन–दर्शन आ बदलत परिस्थिति के दुख–सुख लेखिका 'ईया' के आगे रखत जात बाड़ी।

मुख्यतः नारी समाज आ परिवेश पर केन्द्रित क के डॉ0 आशारानी लाल आपन जिज्ञासा रख रहल बाड़ी। ईयो धन्य बाड़ी, अइसन पोती पाइ के, रचना में स्वर बा कि ईया के जीवन काल में समाज सरल सीधा रहे। आज गिरावट के पीड़ा वर्तमान पीढ़ी भोगत बा। दउरा में गोड़ डाल के आइल बहुरिया दोसर के दिने अपना मरद के साथे नौकरी पर जाए खातिर मन बना लेत बाड़ी स।

दुनिया के बदलत हवा–पानी के जिकिर पढ़े के होखे त अपने जरूर पढ़ीं– 'काहे कहली ईया'।

अइसन सहज, विश्वसनीय, आ पठनीय सृजन खातिर लेखिका के बधाई।

■■

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया आ बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा के संयुक्त आयोजन

बलिया टाउनहाल में जनपद के चर्चित कवि स्व0 शम्भुनाथ उपाध्याय का पहिल पुण्यतिथि पर आयोजित समारोह में जनपद अउर बाहर से आइल साहित्यकार आ विद्वानन संग कवि लोग श्रद्धांजलि देत उनका व्यक्तित्व आ रचनापक्ष पर चर्चा कइल। विश्वभोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय सचिव आ "पाती" पत्रिका के संपादक डा0 अशोक द्विवेदी कहलन कि उपाध्याय जी जन्म आ संस्कार से किसान रहलन। शिक्षा जगत से जुड़ल अध्यापको का रूप में ऊ ठेठ आ खरा रहलन। उनका रचना–पक्ष में उनकर इहे सुभाविक विशेषता सादगी आ खरापन अपना ठेठ रूप में मौजूद बा। डा0 अजय बिहारी पाठक उनके नया उभरत कवियन के संरक्षक आ मार्गदर्शक बतवलन। हिन्दी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष डा0 रघुवंशमणि पाठक उपाध्याय जी के अपना समर्पित आ अनुशासन प्रिय सहयोगी साथी का रूप में इयाद कइलन। प्रोफेसर के0 पी0 श्रीवास्तव उनका छात्रजीवन के संस्मरण सुनावत कहलन कि उपाध्याय जी बहुत नेक इन्सान रहलन। पत्रकार अशोक उनके समाजवादी विचार धारा के पोषक कवि का रूप में इयाद करत कहलन कि ऊ शोषण अन्याय के मुखर विरोधी रहलन। डा0 विष्णुदेव तिवारी उनका आखिरी दिनन कर मुलाकात के इयाद करत कहलन कि अंतिम घड़ी ले उनके सबकर खयाल रहल आ ऊ छोट–बड़ सबके सजगता से समान महत्व दिहलन।

प्रोफेसर आर0 एस0 राय आ शैलेन्द्र मिश्र का गायन आ पुष्पांजलि का बाद डा0 शत्रुधन पाण्डेय, डा0 शिवकुमार मिश्र, त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम', अनन्त कुँवर, लालबचन तिवारी, विजय मिश्र आदि लोगन का भावभरल शब्द–श्रद्धांजलि का बाद दुसरा सत्र में श्री विजय मिश्र का अध्यक्षता में कवि–गोष्ठी भइल जवना में श्री शिवजी पाण्डेय 'रसराज' हीरालाल, हीरा, कन्हैया पाण्डेय, विष्णुदेव, अशोक द्विवेदी, शशिप्रेमदेव, डा0 जनार्दन चतुर्वेदी, वी0 एन0 शर्मा मृदुल, अमरनाथ शर्मा, नवचन्द्र तिवारी, फतेहचन्द बेचैन बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी' आदि लोग काव्यपाठ कइल। सभा के संचालन डा0 शत्रुधन पाण्डेय कइलन। एह समारोह में स्व0 शम्भुनाथ उपाध्याय के पुत्र–पुत्रियन का अलावा पौत्र–पौत्री लोग अइसन हिसदारी निभावल जइसे ओह लोगन के घर के समारोह होखे। इहे ना उपाध्याय जी का गाँव मैरीटार से आइल लोगन का साथ उनकर प्रिय सगा संबन्धियो लोग भागीदारी कइल।

निराला पुरस्कार से सम्मानित कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी के सम्मान

श्रीराम बिहार कालोनी स्थित "पाती" कार्यालय में विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया का तरफ से आयोजित एगो कार्यक्रम में भोजपुरी के चर्चित कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी के उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान से "निराला पुरस्कार" मिलला पर सम्मानित कइल गइल। एह आयोजन में विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया के संपादक आ "पाती" पत्रिका के संपादक डा0 अशोक द्विवेदी हर्ष प्रगट करत कहलन कि भगवती प्रसाद द्विवेदी के सम्मान से बलिया के सिरजनधर्मी कवि साहित्यकारो लोग अपना के गौरवान्वित महसूस कर रहल बा।

एह मोका पर आयोजित कवि गोष्ठी में भगवती प्रसाद जी, पुरस्कृत पुस्तक "नई कोंपलों खातिर" से कई गो कविता सुनवले। एह अवसर पर पटना से आइल कथाकार तुषारकान्त उपाध्याय आ मऊ से "शब्दिता" पत्रिका के संपादक कवि डा0 कमलेश राय का साथ बलिया से हीरालाल 'हीरा', कन्हैया पाण्डेय, शशिप्रेमदेव, विजय मिश्र, शिवजी पाण्डेय 'रसराज' आदि कवि लोग माला पहिरा के द्विवेदी जी के सम्मानित कइल लोग। डा0 कमलेश राय का गीत सुनवला का बाद जनपद के दोसर कवि लोगन के कविता पाठ से एगो सरस काव्य संध्या के आयोजन हो गइल।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के देवरिया - सम्मेलन

(पहिला सत्र) विचार गोष्ठी: 'भोजपुरी साहित्य में प्रगतिशीलता'

विश्व भोजपुरी सम्मेलन का दू-दिवसी राष्ट्रीय अधिवेशन धरमेर महलिया का समता बालिका इन्टर कालेज भागलपुर (देवरिया) में भइल। "भोजपुरी साहित्य के प्रगतिशीलता"' विषय पर गोष्ठी के संयोजक राष्ट्रीय सचिव डा0 अशोक द्विवेदी कहलन कि भोजपुरी जीवन संघर्ष आ शोषण-अन्याय का प्रतिरोध के भाषा हऽ एही से ओकर साहित्य सुरूवे से प्रगतिशील रहला अउर कूल्हि भाषा-साहित्य आ हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद बहुत बाद में 1935 का आसपास आइल बाकि भोजपुरी में त कबीर आ अउर सिद्ध सन्तन में समाजिक प्रगतिशीलता रहल। डा0 प्रेमशीला शुक्ल कहली कि गैर बराबरी आ सामंती दबाव का खिलाफ भोजपुरी नारी चेतना जवना पुनजागरण खातिर संघर्ष कइलस ऊ ओकरा संत साहित्य आ लोकसाहित्य में देखल जा सकत बा। डा0 विष्णुदेव तिवारी विषय-प्रवर्तन में खुलासा कइलन कि राहुल सांकृत्यायन, भिखारी ठाकुर आ स्वतंत्रता का चेतना से भरल केतने भोजपुरी कवि-साहित्यकार सुरूआती दौर से प्रगतिशील रहलन। हीरा डोम के भोजपुरी कविता हिन्दियो में दलित चेतना क मिसाल बा। डा0 भगवती प्रसाद द्विवेदी, तुषारकान्त आदि भोजपुरी साहित्य का विविधता के अनुसार बतावल लोग कि कइसे भोजपुरी साहित्य आधुनिकता आ समकालीनता से जुड़ल रहल। राष्ट्रीय महासचिव डा0 अरूणेश नीरन कहलन कि भोजपुरी लोक अपना मानवी सुभावे में, हर जिया जन्तु, पसु-पच्छी तक के आपन नजदीकी मनलस। रैदास, कबीर, दादू आदि कवियन से चलल प्रगतिशीलता भोजपुरी लोक का मत आ विचार के वहन करत रूढ़ियन आ सामंती सोच पर प्रहार कइलस। समापन करत संयोजक डा0 अशोक द्विवेदी कहलन कि जड़ता का खिलाफ चेतना क संचार साहित्यकार क पहिल जिमवारी हऽ आ व्यक्ति-समाज का भीतर-बाहर शोषन, अन्याय का प्रति भोजपुरी साहित्यकार तटस्थ ना रह सकेला ओके समता आ स्वतंत्रता का साथ मानवी-मूल्यन क चिन्ता करहीं के परी। भोजपुरी साहित्य के प्रतिनिधि साहित्य प्रगतिशील आ रचनात्मक बा।

(दुसरा सत्र) उद्घाटन आ कवि सम्मेलन

संस्थापक अध्यक्ष स्व0 परमहंस त्रिपाठी का स्मृति में आयोजित कवि गोष्ठी के उद्घाटन करे पहुँचल जिलाधिकारी शरद कुमार सिंह स्व0 त्रिपाठी जी के चित्र पर पुष्पांजलि दिहला का बाद शैलेन्द्र मिश्र आ साथियन के गावल 'बटोहिया' देशगीत आ डा0 अशोक द्विवेदी का गीत "कोरो बाँस के बनल पलनिया रे ताहि चढ़े सरधा के बेल। दिन भर जँगरा खटनिया रे रात जरे नेहियाँ क तेल।" पर भावविभोर होत कहलन कि भोजपुरी-सम्मेलन के ई सांस्कृतिक-जागरण ओह समय में उल्लेखनीय आ सराहे जोग बा, जब भोजपुरी क्षेत्र में अपना मातृभाषा आ परम्परा का प्रति उदासीनता बढ़ रहल बा। समता बालिका विद्यालय का आधारभूत समस्या आ उहाँ सड़क-बिजली-पानी ठीक करावे खातिर चौपाल लगावे आ पूरा सहायता करे क घोषणा करत जिलाधिकारी कहलन कि विश्व भोजपुरी सम्मेलन के संस्थापक त्रिपाठी जी के समाजवादी प्रयास क्षेत्र का विकास खातिर प्रेरना स्त्रोत बा।

रात के 8 बजे तक चलल राष्ट्रीय स्तर का कवि-सम्मेलन में पढ़ल गइल स्तरीय आ उत्कृष्ट भोजपुरी गीत, गजल आ व्यंग्य, कवितन-पर श्रोता आ सुधी साहित्यिक लोग भावविभोर रहे। शिवजी पाण्डेय 'रसराज' का वाणी वन्दन आ बियहे

जोग भइल बिटिया का पिता–भाव के करूण गीत का बाद तारकेश्वर मिश्र 'राही' के लोकप्रिय काव्य पाठ भइल। विजय मिश्र आ कन्हैया पाण्डेय के चिकोटी काटत व्यंग्य रचना का बाद– डा0 भगवती प्रसाद द्विवेदी के वैचारिक गीतन से भाषा आ कविता दूनों क महत्व रेखांकित कइलस श्री शशिप्रेम देव आ श्री भालचन्द्र त्रिपाठी के मधुर मीठ गीतन पर सुनवइया बाह बाह करे लगलन। डा0 कमलेश राय का सुकंठ गीतन से कविसम्मेलन अउर ऊँचाई पर पहुँचल डा0 अशोक द्विवेदी के संवेदनपूर्ण सामयिक सवैया आ प्रेमगीत पर सुनेवाला मंत्र–मुग्ध सहलन। श्री गिरिधर करूण आ अकादमी सम्मान पावे वाला श्री हरिराम द्विवेदी का कविता–पाठ का

बाद अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सतीश त्रिपाठी विश्व भोजपुरी सम्मेलन का ओर से "सेतु सम्मान" फेर से सुरू करे क घोषणा कइलन आ आशा जतवलन कि सम्मेलन के देवरिया मुख्यालय देवरिया इकाई का सहयोग से आगा आपन गतिविधि बढ़ाई। ऊ भागलपुर का एह आयोजन में आइल साहित्यकार आ कवियन का प्रति सहजेग खातिर आभार जतवलन।

दोसरा दिने "समाजिक नवजागरण में नारी के भूमिका" विषय पर संगोष्ठी रहे, जवना के समयाभाव में अधूरा छोड़े के पड़ल आ आगा एकरा प विमर्श खातिर निर्णय लियाइल। एह बतकही में संयोजक डा0 प्रेमशीला शुक्ल का अलावे तुषारकान्त उपाध्याय, डा0 विष्णुदेव तिवारी, डा0 दिवाकर प्रसाद तिवारी, डा0 अशोक द्विवेदी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, आदि रहे लोग। महासचिव डा0 अरूणेश नीरन एह विषय का विविध पक्ष के खोलत कहलन कि भोजपुरी लोक का संदर्भ में नारी के भूमिका परिवार का इकाई से शुरू होके सामाजिक विस्तार पवलस। ओकरे सहमति सहजोग से घर चलल आ घर का बहरी क संसारो चलल।

राउर पन्ना

दू महीना पहिले क बाति ह। एक दिन डकमुन्शी जी फोन कइलें कि रउरा नाँवें एगो पैकेट बलिया से आइल बा, जवना पर 'पाती' लिखल बा। हम डाकघर जाके ले अइलीं, खोललीं त ओमे पाती क प्रेम कविता विशेषांक' मार्च 2014 आ 'भोजपुरी भाषा पर विशेष, जून–सित0 2014 अंक : 72–73' मिलल। रुपरंग देखिके जुड़ गइलीं। रउवां 'पाती' के एह स्तर पर पहुँचा दिहले बानीं कि ई नीमन से नीमन राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पत्रिकन का बराबरी में खड़ा होखे लायक हो गइलि बिया आ खड़ा बड़ले बिया–अब का चाहीं?

'प्रेम कविता विशेषांक' का बारे में केतना ले, का कहीं? प्रेम विधाता के सिरजन के सर्वोत्तम (जीवन–मूल्य) तत्व ह, जेमे सृष्टि क कण–कण जुड़ल बा। ई शाश्वत जीवभूमि है। एह पर राउनर सम्पादकीय, लेख आ, आ अवरी सब लेखक, विद्वान, कवि लोग के रचना सटीक विचारपूर्ण–भावपूर्ण बाड़ी सन, बाकिर 'सामयिकी' में 'भोजपुरी जलसन के हाल' में भगवती प्रसाद द्विवेदी जवन आइना देखवलें बाड़ें, ओ से ई चिन्ता–फिकिर बढ़ि जाता कि का अब 'प्रेमवो' बाजारू हो जाई! काहे कि लोगवा किछु पावे, झटके खातिर लाज–शरम छोड़ि के बेतहाशा भागि रहल बा। लोग प्रेम के झटपट भोगि के भगले (यूज एण्ड थ्रो) के चक्कर में बा। बाकिर ईहो साँच बा कि दुनिया बे शरम, बे नेम धरम, संयम, ईमान के न चलति बा, न चली। सरेराह अपहरण, बलात्कार, नंगई, गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा, क्षुद्र, सतही स्वार्थ एतना ना बढ़े पाई कि समाज हेराजाय, डूबि जाय ओकर विलय हो जा। कुहासा छँटही के ह। सुरुज अस सचाइयो अन्ततः जीतबे करी।

जून–सित. 2014 का अंक में अशोक द्विवेदी के 'देशगीत', प्रगत द्विवेदी के 'भाषा चिन्तन', ना0प्र0सिंह से 'बतकही', पाण्डेय कपिल पर लेख, गदाधर सिंह के 'ललित निबंध', शशि प्रेमदेव, मिथिलेश गहमरी के ग़ज़ल, विजयानन्द के कविता, तैय्यब हुसेन के कहानी, जनार्दन राय के लेख 'सब में साँस बा', विनोद द्विवेदी के लघुकथा, रघुवंशमणि के हस्तक्षेप (भोजपुरी–हिंदी...), गतिविध के रिपोर्ताज, शिलीमुख के कविता 'भासा के खेल' वगैरह क विषय, कथ्य, शिल्प, संवेद्य भावतरंग, भासा के सौष्ठव (सुघराई) नवसंस्कार मन भावन बा, चिन्ता आ चिन्तन क भरपूर आस्वाद्य–स्रोत बा। सबके साधुवाद आ आपो के, काहें से कि रचना कइल भा सम्पादन कइल बड़ साधना ह।

हर भासा के पुनरुत्थान, शब्दार्थ संस्कार, प्रतिमानीकरण (पैराडामेटिज्म), पुनर्नवीकरण–ऊर्जस्वीकरण (ओरियेन्टेशन–एनरगाइजेशन) के दौर से गुजरेके पड़ेला आ जदि ओके बढ़े के होखे त गुजरेके चाहीं (भाषा बहता नीर से अउर लामे)। देशकाल के सांस्कृतिक (मनोनैतिक–साइकोमॉरल) परिदृश्य में बदलाव का साथे, कबे–कबे ओकरी सामने पुनर्वास के संक्रमण से बहरे, फेरू कई गुना वेग से बहे के परेला। एसे ओकरी अ–क्षर, शब्द, ध्वनि, भाव–विचार, रंग–तरंग में टटकापन (नवजीवन) क संचार हो जाला। इयाद करीं– सत्य, अहिंसा शब्द आ ओकरी प्रत्यय के; जो गान्ही बाबा क नवस्पर्श ना मिलल रहित त ए दूनो पद में नया सिरा से जनआन्दोलन क प्रेरक अन्तःशक्ति ना आइल रहित। ई दूनो शब्द अपने अतीत के दर्शन ले के लुकाइल रहते सन, वर्तमान ना होइते सन। एही ऊर्जा आ अन्तःशक्ति के नवस्फुरण से भोजपुरी में किछु क्लासिक (कालजयी) लिखाइल आ लिखा रहल बा, खासतौर से काव्य के क्षेत्र में। भोजपुरी बुनियाद से खूब ऊँचे जाके चोटी (शिखर) का ओर उड़ान भरत बिया। बस लागल रहला क कार बा।

भोजपुरी के विकास (भासा के स्तर पर) के जमीनी हकीकत पर नजर गड़ावल जरूरी बा। भोजपुरी भाषी संसार (समाज) के करीब करीब हर घर–परिवार में त्रिभाषा सूत्र चलि रहल बा– भोजपुरी, हिंदी, अंग्रेजी (कतो कतो संस्कृत, मराठी–गुजराती, बंगला आदि)। हिंदी, अंग्रेजी क व्यवहार पढ़ाई–लिखाई, बातचीत, खतो–किताबत, एस.एम.एस. में खूब हो रहल बा। बाकिर भोजपुरी में केतना घर परिवार में लिखले क व्यवहार बा! परिवार क पुरनका लोग हीत–मीत, गांव–जवार के साथे भोजपुरी क व्यवहार बनवले बा, बाकिर नवका पीढ़ी भाषा के खिचड़ी कइले में मशगूल बा। (जे लेखक–कवि बा ओकर बाति फरके बा)। जब खेत खरिहान, बाग–बगइचा, गांव–गिराव क एग्रीकल्चर (कृषि संस्कृति) सिमटि के टेक्नोकल्चर में जात बा त कटिया, दँवरी, सोहनी, जाँत–ओखर, बरहा–बरही, हेंगा–हेंगी, खुरपी–कुदार, हांड़ी–पतुकी कबले जीही? कुल्हि के नवसंस्कार होखही के बा।

■■ डॉ. दिवाकर प्रसाद तिवारी,
अवकाश प्राप्त एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्राचार्य दीनानाथ पाण्डेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरिया

पिछला 'प्रेमगीत विशेषांक' के मात्र हम कवर पेज वाला राउर कविता आ सम्पादकीये पढ़ पवले रहनी कि हमरा घरे लइका के बिआह में आइल केहू पहुना ओकरा के लेके ओहटा चल गइल। हमार सोना हेरा गइल। लेकिन विश्वास करीं कि सम्पादकीय हम छव–सात बेर ले पढ़ले रहनी। अभी अउर पढले के बिचार रहे, लेकिन पता ना कवना मुंहझउसा के नजर ओपर लाग गइल, खैर भगवान करस ऊ ओकर कदर आ महत्व समझे वाला होखे कहीं 'बानर के हाथ में ऐनक' वाला बात मत होखे।

राउर सम्पादकीय त कबीर के दोहा के सम्पूर्ण व्याख्या रहे, जवाब नइखे। केहू का कहीं प्रेम के बारे में, बहुत विद्वान लोग कहल रउवा त हमरा बुझाता कि मथ के घीव निकाल देले बानी। अफसोस उ पहुनवा कवनो गहना बिरनो उठा ले गइल रहित आ ओ 'पाती' के छोड़ जाइत।

हम अल्लामा इकबाल के पढले रहनी। कभी ऐ हकीकते मुन्तजिर नजर आ लिबासे मजाज में, कि हजारों सनदें तड़प रहे हैं मेरे जबीने नियाज में। आ इन्टर में रहनी त शेक्सपीयर के एगो सानेट पढ़ले रहनी जवना के मजमून ई रहे कि ए दुनिया में सबसे बड़ा अगर कुछ बा त ऊ 'समय' बा जेकरा आगे केहू के कवनो जोर नइखे, लेकिन 'प्रेम' ए समय से भी आगे बा आ एमें ओकर पहिया रोके के क्षमता बा। हमनी के डरे कि कहीं कवनो हमरा साथे गलत न हो जाव मन्दिर, मस्जिद में जाइ सर झुकावेनी जा कि 'हे भगवान जी सम्भरिह!' हमनी के 'गॉड फ़ियरिंग पीपुल' के सेम अगर हमनी के 'गॉड लविंग पीपुल' के श्रेणी में आ जाई जा त फेरू त सर झुकवला के कवनो कामे नइखे। तबे नू उद्धव जी अइसन ब्रह्मज्ञानी के ज्ञान गोपियन के प्रेम के आगे घास चले चल गइल। ई त जीता जागता प्रमाण बा 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय' के। अरे देखीं ना हम चिट्ठी लिखऽतानी कि हम्हू लेख लिखे लगलीं माफ करब राउर सम्पादकीय बुझाता कि हमरो के कुछ कलम चलावे के सिखा दी।

'पाती' के पिछलका अंक के लाजबाब, अति सुन्दर, प्रत्येक सामग्री जवन स्तरीय पत्रिका में चाहीं ओकरा से गदराइल, करतब करे वाला रउवा अस महान व्यक्तित्व के सैलूट आ रउवा समस्त सहयोगी लोग के कोटिशः प्रणाम। अन्हरिया में रउवां ज्योति जगवले बानीं। एकर कवनो जवाब नइखे।

'शिलीमुख' जी के कवि के रूप में दर्शन भइल आ खूब भइल, खूब न लतिअवले बाड़े भाषा के दोकानदारन के ! उनकर उहे तेवर उहे आग कविता जइसन नाजुक कहाये वाला विधा में, भगवान उनका भीतर के आग हमेशा दहकवले रहस, ताकि ओकर दबँक बतफरोसन आ बतफरेबियन के लागत रहे।

अँग्रेजी के प्रवक्ता शशि प्रेमदेव के भोजपुरी धार लाजबाब बा–

मोथा के का खाक बिगारी? आन्ही पीपर बर उखारी।
मनई के रोवले–छपिटइले मउअत आपन डेट ना टारी।।

रमाशंकर श्रीवास्तव जी 'सपना सजावत रहीं' हमरा तनिको ना रुचल। भोजपुरी क्षेत्र में अइसन सपना के अभी सम्भावना नइखे। 'लमहर सफर आ पंचर पहिया' में भाई पीड़ित जी 'कथावस्तु' त बहुते अच्छा उठवले बाड़े, बाकिर कहे में तनी छितराइला नीयर हमरा लागल। डॉ0 आशारानी लाल जी के 'पवित्रा' ठीके ठाक रहल, अच्छा लागल।

अन्त में सम्पादक जी के निहोरा के साथे कहल चाहतानी कि लिखे के हमार–प्रयास मात्र 'पाती' के बारे में आपन विचार रउवा तक पहुँचावे के बा इ छपे एकर हमार कवनो इच्छा नइखे। ■■ कौशलेन्द्र सिन्हा, एस.बी.आई, बलिया

हँ, हमरा प्लैनेट के भासा भोजपुरी हऽ।

■ राजीव पराशर

आई लव 'चिकेन', आई लव 'फिश' – एकर मतलब ई मत समझिहऽ कि अंग्रेजी में बोले वाला लोग, एह जीवन से प्यार करऽता, एकर मतलब ई बा की, ई लोग इनहन के खाइल पसंद करत बाड़न आ लंच भा डिनर में ओके खाई। पीके. के इ डायलॉग जथारथ पर आधारित बा। अंग्रजी भाषा संस्कृति के असलियत आ घालमेल के पीके अपना प्लैनेट के भाषा भोजपुरी में खोल देता। हमरा प्लैनेट के भासा भोजपुरी में पीके बड़ा सहज तरीका से हमनी का समाज आ संस्कृति में दिन पर दिन आइल गिरावट आ ढ़कोसलावादी धर्म के आड़ में चल रहल गड़बड़झाला वगैरह के पोलवो खोलऽता। 'रिमोटवा के अंडरबीयर में रख लेना, नहीं तो इहां के लोग रिमोटवा चोरा लेता हैं'। अउर इ सब विभिन्न धर्म वाले बाबा लोग यानी ई धर्म के मैनेजर सब, रॉग नंबर लगा रहे हैं आदि। कई गो अइसने संवाद बोल के 'पीके' व्यवस्था अउर ताना बाना में घुसल बिसंगतियन पर अँगुरी धरत बा। बहुत मजेदार सिनेमा आइल बा, पीके। अब रउरा सब इ मत सोची कि हम इहवां पीके सिनेमा के समीक्षा लिखत बानी। हम त बतावल चाहत बानी की एही सिनेमवा का जरिए भोजपुरी भासा के ताकत आ महत्व का बा?

पिछला अंक में हम भोजपुरी भासा के भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करें के अभियान के तहत कईगो तथ्य पेश कइले रहीं, अउर भोजपुरी क्षेत्र के सांसदन के साथ वर्तमान भारत के सरकार आ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से आग्रह कइले रही। वोह आलेख में हम बतवले रहीं कि करोड़न जनता के बोले वाला भोजपुरी भासा के मान सम्मान आ पहिचान खातिर, जतना जल्दी हो सके, ''भोजपुरी'' के आठवी अनुसूची में शामिल कईल जाव। कुछ आंकड़ा आ तथ्य के आधार पर हम बतावे के कोसिस कइले रहीं कि भोजपुरी के मान्यता मिलला से कइसे ए भासा बोले वालन के आर्थिक आ सामाजिक विकास होई।

आमिर खान के सिनेमा पीके के देखला के बाद, ओह सिनेमा के सफलता से हमरा कहलका बतिया पर मुहर लाग जात बा। काफी शोध आ विचार के बाद, मुख्य एक्टर आमिर खान आपना डायलॉग खातिर असरदार भोजपुरी भासा के चुनाव कइले बा। दरअसल, भोजपुरी भासा बोले वाला लोग के मिजाज एही तरीका के होला। भोजपुरिया लोगन के स्वभाव अक्खड़ होला, समाज में हर तरह के विसंगति आ गिरावट पर खरी खरी कबीरी अंदाज में आपन बात कहे खातिर ई लोग जानल जाले। खाँटी भोजपुरिया केहू के तेल लगावे में विस्वास ना रखेले, सायद इहों एगो कारण बा कि अबले एह भासा के मान्यता नइखे मिलल।

पीके सिनेमा के संवाद अउर यथार्थ के बतावे के तरीका काफी शानदार बा, इहे एह सिनेमा के सफलता के राज बा। अब तक चले वाली सरकार, हमनी का भासा भोजपुरी के मान्यता देबे में कन्नी काटत आइल बिया। पीके के संवाद में कहल जाव त, भोजपुरी भासा के आठवीं अनुसूची में मान्यता देबे वाला रिमोटवा, सरकार के अंडरबीयर में छुप गइल बा। अब वर्तमान सरकार से आसा बा कि भोजपुरी भासा क्षेत्र बनारस के रिप्रेजेंट करेवाला प्रधानमंत्री, अब हमनी के रिमोटवा सरकार के अंडरबीयर से बहरा निकाल के हमनी के दे दीहें।

सरकार के इ बात जरूर सोचे के चाही की एगो सुपरहिट सिनेमा में भोजपुरी भासा में संवाद बोलला से उ सिनेमवा करोड़ों रूपया आमदनी करऽता, त एह भासा में अन्य तरह के संवाद होखे लागी त करोड़न भोजपुरियन के प्लैनेट के आर्थिक, समाजिक आ सांस्कृतिक विकास होई। हमनी का भावना के समझल जाव, ना त करोड़न भोजपुरिया, एह सरकार के रॉंग नंबर कहे लगिहें।

'रांग नंबर' डायल होखे का पहिलहीं भूल सुधार क लिहल एहू से जरूरी बा काहें कि भोजपुरी भाषा का नाँव पर खेला करे वाला बहुते 'फ्राड' आ स्वारथ साधे वाला तिकड़मबाज एकर नाजायज फायदा उठा रहल बाड़न स। भोजपुरी क्षेत्र के सांसदो लोग माननीय प्रधानमंत्री जी से बोल–बतिया के जल्दी से जल्दी हमनी का भाषा भोजपुरी के हक दियवावे वाला पहल करो लोग।

■■